

भारतीय विद्यामंदिर ग्रंथमाला

२

रासो-साहित्य और पृथ्वीराज-रासो

भारतीय विद्यामन्दिर ग्रंथमाला

२



परामर्ग मंडल
नरोत्तमदास स्वामी, अेम अे
शभूदयाल सक्सेता माहित्यरत्न
अगरचद नाहटा
नाथूराम सडगावत, अेम अ
अक्षयचद्र शर्मा, अेम अे, साहित्यरत्न

रासो-साहित्य और पृथ्वीराज-रासो

संक्षिप्त परिचय

लेखक

नरोत्तमदास स्वामी, अम अ



प्रकाशक

भारतीय विद्यामन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बोकारनेर (राजस्थान)

- प्रकाशक
भारतीय विद्यामंदिर गोप्य प्रतिष्ठान
बीकानेर

- प्रथम संस्करण
भारतीय सवत १८८५

- मूल्य १००

- मुद्रक
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स
आगरा

प्रकाशकीय वक्तव्य

भारतीय विद्यामंदिर की स्थापना सन् १९४८ ई० में सामग्री प्रचार शिक्षा प्रसार लोक शिक्षण बाल शिक्षण आदि विभिन्न शैक्षणिक प्रवृत्तियों का संचालन करने एवं शोध-कार्य का प्राप्ताहन देन तथा प्राचीन एवं नवीन साहित्य का प्रकाशन करने के उद्देश्य को लेकर की गयी थी ।

शोध-कार्य के संचालन के लिये मंदिर ने सन् १९५७ में शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की । प्रतिष्ठान द्वारा मध्यम शोध-कार्य और राजस्थान के प्राचीन साहित्य तथा तत्संबंधी अध्ययन-ग्रंथों के प्रकाशनाथ मंदिर ने भारतीय विद्यामंदिर ग्रंथमाला की आयोजना की है ।

ग्रंथमाला के प्रथम ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री चंद्रदान चरण की गाथा चौहाण से राजस्थानी गाथा का प्रकाशन कुछ समय पूर्व हुआ था । अब द्वितीय ग्रंथ के रूप में हिंदी और राजस्थानी साहित्य के ख्यातनामा विद्वान् भारतीय विद्यामंदिर के कुलपति श्री नरोत्तमदान स्वामी की, हिंदी-साहित्य के महान् गौरव-ग्रंथ पृथ्वीराज रासा और रामा-साहित्य का विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन प्रस्तुत करने वाली इस कृति का साहित्य-जगत् के समस्त उपस्थित किया जाता है ।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य और राजस्थान के मत साहित्य से संबंधित कतिपय महत्त्वपूर्ण कृतियों को हम शोध ही पाठकों के हाथों में रखेंगे ।

सत्यनारायण पारीक

अध्यक्ष भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

आभार

भारतीय विद्यामंदिर ग्रंथमाला के प्रकाशन में राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग के अधिकारियों तथा श्रीयुत कवर जमवतसिंह से बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है। राजस्थान सरकार तथा कृवर साहब ने उदारतापूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान कर हम अनुगृहीत किया है। अपने समस्त सहायकों के प्रति यहाँ पर मैं भारतीय विद्यामंदिर की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

आशा है भविष्य में भी राज्य सरकार जब अन्याय उदारमना महानुभावा द्वारा हम इसी प्रकार सहायता एवं सहयोग प्राप्त हात रहेंगे।

मूळचंद पारीक

रजिस्टार

भारतीय विद्यामंदिर बीकानेर

हिंदी के महारथी
वावु श्यामसुंदरदास, बी ए, डी लिट ,
की
स्मृति में

भूमिका

पृथ्वीराज रासो में मेरी अभिरुचि छात्रावस्था से ही रही है। सन् १९३१ में जब मैं वाराणसी में गुरुवर श्री श्यामसुन्दरदास के दशन करने गया तो उन्होंने मुझे हिंदू विश्वविद्यालय की डी लिट उपाधि के लिए पृथ्वीराज रासो पर अनुसंधान प्रबंध प्रस्तुत करने का आदेश दिया। उनके आदेश का पालन तो मैं नहीं कर सका पर रासो-संबंधी अनुसंधान काय चलता रहा। इसी समय श्री अगरबद नाहटा से परिचय हुआ। उनकी भी इस विषय में रुचि थी। उन्होंने रासो की दृजनों प्रतिधा के विवरण जेकर किये थे। मैं इन विवरणों का विस्तार से अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि रासो के तीन अलग अलग रूपांतर हैं जिनका नामकरण मैंने लघु रूपांतर मध्यम रूपांतर और बृहद् रूपांतर इस प्रकार किया। नाहटाजी ने इन विवरणों का लेकर कलकत्ते की राजस्थानी साहित्य परिषद् की मुखपत्रिका त्रैमासिक राजस्थानी में एक विस्तृत लेख लिखा। इसके पश्चात् नाहटाजी का गुजरात के सुप्रसिद्ध विद्वान् मुनि श्री पुण्यविजयजी से रासो की एक हस्तप्रति की प्रतिलिपि प्राप्त हुई। यह प्रति अब तक की प्राप्त सब प्रतिधा से प्राचीन और भिन्न थी और विस्तार में बहुत छोटी थी। इससे पता चला कि रासो का एक चौथा रूपांतर भी है। इस नये रूपांतर को मैंने लघुनाम रूपांतर नाम दिया। इसी समय बीकानेर में साद्वळ राजस्थानी रिमच इस्टीट्यूट की स्थापना हुई और उसकी मुखपत्रिका 'राजस्थान भारती' के प्रकाशन की व्यवस्था हुई। इस पत्रिका के प्रथम अंक में पृथ्वीराज रासो पर एक निबंध प्रकाशित करवाया जिसमें अपने अनुसंधान के परिणामों को सभ्य में प्रस्तुत किया। इस निबंध में रासो का उत्पत्ति, रासो की भाषा रामा का उद्धार-कर्ता, रामो की प्रामाणिकता आदि विषया पर विचार किया गया था। रासो की प्रामाणिकता-संबंधी विवाद का सम्बन्ध इतिहास देते हुए प्रामाणिकता-संबंधी चार पक्षा का विवरण दिया गया था, तथा रामो के चारों रूपांतरों का सवप्रथम विवरण दिया गया था।

इसके पश्चात् रासो के संबंध में दो चार और भी छोटे-मोटे निबंध इधर-उधर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। सन् १९५० में पंजाब-विश्वविद्यालय में हिन्दी-साहित्य का एक बृहत् इतिहास तैयार करने का काम उठाया। उसके

रासा साहित्य और पृथ्वीराज रासो सबधी नो अध्याय लिखने के लिए मुझे कहा गया। मैंने इस काय को सह्य स्वीकार किया, और लगभग ५० ६० पृष्ठों का एक निबन्ध तैयार किया। कुछ कारणवश वह निबन्ध अप्रकाशित ही रहा।

प्रस्तुत पुस्तक का मूल यही वह निबन्ध है। जब भारतीय विद्यामन्त्रि (बीकानेर) में शोध प्रतिष्ठान की स्थापना हुई तो एक ग्रथमाला के प्रकाशन की आयाजना भी की गयी। प्रतिष्ठान के अधिकारियों ने निबन्ध को इस ग्रथमाला में प्रकाशित करने का विचार किया। निबन्ध के साथ कुछ और विषय जोड़कर मैंने उन्हें प्रकाशनाथ दे दिया। पर प्रकाशन के लिए राजकीय स्वीकृति प्राप्त करने और आर्थिक व्यवस्था करने में बहुत समय लग गया और निबन्ध या ही पड़ा रहा।

इस प्रकार लगभग १२ वर्षों के पश्चात् वह निबन्ध परिवर्धित रूप में प्रकाशित हो रहा है। अब इस निबन्ध में कहकर प्रन्ध कहना अधिक उपयुक्त होगा।

प्रबन्ध में १२ अध्याय हैं जिनमें वर्णित और विवक्षित विषयों का ज्ञान सूचनिका (विषय सूची) को देखने से हो सकेगा।

इस प्रबन्ध के लेखन में अनेक दिनांशों से प्रेरणा और सहायता मिली है। जिन ग्रंथों निबन्धा पत्र पत्रिकाओं आदि से सहायता ली गयी है उनका उल्लेख पाद टिप्पणियों में और अंत में परिशिष्ट में कर दिया गया है।

प्रबन्ध के लेखन में मूल प्रेरणा श्रद्धय गुरुवर स्वर्गीय बाबू श्यामसुन्दरदास की है। इन प्रन्ध के प्रकाशन के समय उनका स्मरण करना मैं अपना अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य समझता हूँ।

श्री अग्ररत्न नाहटा से मुझे प्रेरणा ही नहीं किन्तु सक्रिय सहायता भी बराबर प्राप्त हुई। पृथ्वीराज रासो और वीमलदेरास की प्रतियां के उनके द्वारा मगृहीत विवरणों का मैंने स्वतंत्रता से उपयोग किया है। अध्याय ५ में दिया हुआ पृथ्वीराज रामो की प्रतियां का तथा उनकी रूपक मध्या का विवरण मुख्यतः उनके द्वारा सगृहीत सामग्री के आधार पर ही लिखा गया है।

हिंदू विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के भूतपूर्व प्राध्यापक बीकानेर राज्य के भूतपूर्व शिक्षा विभागाध्यक्ष तथा सादृष्ट राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट के प्रथम डाइरेक्टर सुहृद्दर ठाकुर रामसिंह एम ए पिलाणी के विडला कालेज के भूतपूर्व वाइस प्रिंसिपल स्वर्गीय श्री सूर्यकरण पारीक एम ए, सादृष्ट राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट के भूतपूर्व डाइरेक्टर तथा इस समय दिल्ली विश्व विद्यालय के इतिहास और पाली के प्राध्यापक डाक्टर दण्डरथ गर्मा एम ए, डी लिट राजस्थान राज्य के पुरालेख विभाग के डाइरेक्टर श्री नाथूराम खडगावत एम ए बीकानेर के भारतीय विद्यामन्त्रि के उपकुलपति श्री

शभूदयाल सक्सेना विद्यामंदिर के शोध प्रतिष्ठान के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अक्षय चंद्र गर्मा, एम ए साहित्यरत्न प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री चंद्रदान चारण, बीकानेर के अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री दीनानाथ खत्री, एम ए उत्तरपुर के महाराणा भूपाल कालेज के प्राध्यापक (अब हिंदी विभाग के अध्यक्ष) श्री कृष्णचंद्र श्रोत्रिय एम ए उत्तरपुर के सरस्वती भंडार के अधीक्षक श्री व्रजमोहन जावड़िया एम ए आदि से भी समय-समय पर अनेक प्रकार की सहायता प्राप्त हुई। अध्याय ११ के दोनों प्रकरण श्री अभयचंद्र गर्मा के लिखे हुए हैं। ग्रंथ के प्रकाशन में भारतीय विद्यामंदिर के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण पारीक एम ए एवं मंदिर के रजिस्टार श्री मूळचंद पारीक ने तथा भ्रूण में जागरा की श्रीराम मेहरा एण्ड कंपनी के अध्यक्ष श्री श्रीराम मेहरा ने विशेष रूप से अभिर्ण्वि ली। इन सबके प्रति मैं यहाँ हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

गाति-आश्रम बीकानेर }
जमाष्टमी २०१६ }

नरोत्तमदास स्वामी

सूचनिका

अध्याय १	रासो साहित्य का सामान्य परिचय	
	(क) रासो शब्द की व्युत्पत्ति	१—६
	(ख) रासो शब्द का अर्थ	१
	(ग) रासो-साहित्य के लक्षक क्षेत्र तथा काल	२
	(घ) रासो-काव्यों की भाषा	३
	(ङ) रासो-काव्यों के छन्द	४
	(च) रासो साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताओं	५
	(छ) रासो साहित्य का अतिहासिक मूल्य	६
अध्याय २	रासो साहित्य की प्रमुख रचनाओं का परिचय	८
	(क) ब्रजभाषा के रासो-काव्य	१०—३३
	हम्मीर रासो विजपाल रासो मुजाणसिंह रासो	१२
	क्याम रासो रतन रासो राणा रामो हम्मीर	
	रामो, करहिया की रायसा लावा रासा	
	(ख) राजस्थानी भाषा के रासो-काव्य	२०
	राज जदतसीरज रासज राम रामा सत्रमान रासो	
	सगतसिंह रामो मुम्माण रामो	
	(ग) रासो शैली की अन्य रचनाएँ	२२
	(घ) परिशिष्ट—वीमलदे रास	२४
अध्याय ३	चद और उसकी कृतियाँ	३४—४२
	(क) चद वन्दायी	३४
	(ग) जल्ह	३४
	(ग) चन्द के वगज	४२
	(घ) चद की कृतियाँ	४३
	(ङ) क्या चद रामो का कर्ता है ?	४४
अध्याय ४	पृथ्वीराज रासो के रूपांतर	४५
	(क) चार रूपांतर	४५
	वृहद रूपांतर, मध्यम रूपांतर लघु रूपांतर	५३—६१
	तृतीयम रूपांतर	५३

	(ख) विविध रूपांतरों के खंडों की तालिका	५६
	(ग) चारों रूपांतरों के खंडों की तुलनात्मक तालिका	६२
	(घ) वृहत् रूपांतर के खंडों का विश्लेषण	७४
	(ङ) रूपांतरों का अंतर	७७
अध्याय ५	पृथ्वीराज रासो के विविध रूपांतरों की प्रतियाँ	८२—९५
	(क) लघुतम रूपांतर की प्रतियाँ	८२
	(ख) लघु रूपांतर की प्रतियाँ	८२
	(ग) मध्यम रूपांतर की प्रतियाँ	८३
	(ग) वृहत् रूपांतर की प्रतियाँ	८४
	(ङ) स्वतंत्र खंडों की प्रतियाँ	८८
	(च) रासो की दो तथाव्यतिथि प्राचीन प्रतियाँ	८८
	(छ) रासो की प्राचीन प्रतियाँ में रूपकों का संख्या	९०
अध्याय ६	रासो की प्रामाणिकता	९६—१०८
	(क) प्रामाणिकता संबंधी धारणा का इतिहास	९६
	(ख) रूपांतरों की प्रामाणिकता	९८
	१ वृहत् रूपांतर और मध्यम रूपांतर	९८
	२ लघु रूपांतर	९९
	तृतीय रूपांतर के सबसे भिन्नमत मत और अनन्त विनम मत ।	९९
	३ लघुतम रूपांतर	१०२
	(१) पृथ्वीराज के पूजार्थों की वृत्तवत्ता	१०३
	(२) अनगण्य और पृथ्वीराज	१०६
	(३) पृथ्वीराज की राजधानी	१०७
	(४) पृथ्वीराज और गहाबुद्धिनी गोरी	१०५
	(५) गोरी के सरदारों के नाम	१०६
	(६) पृथ्वीराज और सयागिता	१०६
	(७) लघुतम रूपांतर के मत	१०८
अध्याय ७	पृथ्वीराज रासो की भाषा	१०९—११७
	(क) रासो की भाषा पृथ्वीराज के जाल की भाषा नहीं है	१०९
	(ख) रामा की भाषा जंगल या राजस्थानी नहीं है	१०९
	(ग) क्या रामा की भाषा अत्यवस्थित है ?	११३
	(घ) पृथ्वीराज रासो की भाषा की कुछ विशेषताएँ	११४

अध्याय ८	पृथ्वीराज रासो के छन्द	११८—१२३
	(क) सामान्य कथन	११८
	(ख) वर्णिक छन्द	११९
	(ग) मात्रिक छन्द	१२१
अध्याय ९	पृथ्वीराज रासो की कथा का सार	१२४—१३७
	(क) लघु रूपांतर के अनुसार रामो की कथा	१२४
	(ख) बृहद रूपांतर की कथा का विश्लेषण—पृथ्वीराज के विवाह पृथ्वीराज के जागेट, पृथ्वीराज के युद्ध, आयाय प्रसंग	१३१
अध्याय १०	पृथ्वीराज रासो (बृहद रूपांतर) में वर्णित इतिहास की परीक्षा	१३८—१५६
	१ अजमेर २ दिल्ली ३ कन्नौज ४ मेवाड़ ५ गजनी	
	६ गुजरात ७ आबू ८ अय स्थान ९ पृथ्वीराज के सामन्त	
अध्याय ११	पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यांकन	१५७—१७२
	(क) पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक मूल्य	१५७
	(ख) पृथ्वीराज रासो का सांस्कृतिक मूल्य	१६६
अध्याय १२	उपसंहार	१७३
परिशिष्ट—अध्ययन सामग्री		१७४

रासो-साहित्य का सामान्य परिचय

(क) 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति

विद्वाना ने रासो शब्द की व्युत्पत्ति भिन्न भिन्न प्रकार से की है। रामचन्द्र गुक्ल उसे रसायन का अपभ्रंश मानते हैं।¹ काशी के विश्वेश्वरीप्रसाद द्रुप के मतानुसार रासो का मूल शब्द राज यग है।² बर्द विद्वाना ने उम रहस्य से बना बताया है।³ श्री पापनाथ शाह ने उमको रस से युक्त माना है।⁴ राज-सुत शब्द से भां उमका उत्पत्ति बताया गयी है। प्रवीराजरासा के सपाठक मोहनलाल विष्णुलाल पडया के अनुसार रासा शब्द संस्कृत के रास या रासक शब्द से बना है।⁵ इनमें अंतिम मत का छोड़कर बाकी मता में कोई तथ्य नहीं ब बल्यना मान है। रासा का मूल रासक शब्द है जो रास शब्द का ही दूसरा रूप है। संस्कृत का रासक शब्द अपभ्रंश में रासउ हुआ और

¹ य शब्द रासा कथ्यत है। कुद्र नाम म शब्द का सम्बन्ध रहस्य से बनाने है पर वासुदेव रासा में काव्य के अर्थ में रसायण शब्द बार-बार आया है। अतः हमारी समझ में रसो रसायण शब्द में हान गान रासा ही गया है।—हिन्दी साहित्य का इतिहास (म १९९९ का संस्करण) पृष्ठ ७।

रसायण शब्द वीमलश्याम में रस-मम के अर्थ में आया है जिसके साथ रास शब्द का अर्थात्कृत समझना चाहिए (जो श्यामा पर यह रास शब्द का साथ भी आया है)।

² Har Prasad Saxena *Preliminary Report on Operation in Search of Bardic Chronicles*

³ (क) My friend Mr K. P. Jaiswal thinks that rāsā is connected with the sense—'problem mystery'. In *Leṅkā bhāṣṇe* रासो becomes rāsī (*Ibid* page 25 footnote)

(ग) कविराज श्यामश्याम ने पृथ्वीराज रासा की अप्रामाणिकता पर चिन्वी हू पुस्तिका का नाम पृथ्वीराज रहस्य का नवान्तो रसा था।

⁴ जन-वाच्य-शास्त्र भाग १ प्रस्तावना पृष्ठ ७।

⁵ पृथ्वीराजरासा, नागरी प्रचारिणी-सभा द्वारा प्रकाशित पृष्ठ १६३।

मध्यकालीन राजस्थानी तथा प्रजभाषा में रासो होकर आधुनिक काल में रासो हो गया। खड़ीबोली में इसका रूप रासा हुआ।

रासो नाम रासो या रायसो रूप में भी मिलता है। विंगल और दिगन के नियमानुसार लक्ष्मी की आवश्यकता पूरी करने के लिए कभी-कभी रास के मध्य में इ या य का आगम किया जा सकता है जैसे रासोड का रासोड या रायसोड रत्न का रत्नत्न वस्त्र का वस्त्रत्न मन्त्र का मन्त्रत्न स्वप्न का स्वप्नत्न इत्यादि इत्यादि।^१

(२) 'रासो' शब्द का अर्थ

रास या रासन का मूल अर्थ नृत्य है। वृष्ण जी के गापिया का रास-नृत्य प्रसिद्ध है।^२ यह नृत्य तालों के साथ किया जाता था और दंडों के साथ भी। मध्यकाल में ताला रास और उगु रास या दक्षिण रास प्रसिद्ध थे।^३ ताला और दंडों के ये रास राजस्थान और गुजरात में अब भी प्रचलित हैं। मभरत जय प्रान्त में भी प्रचलित हैं।

रास नृत्य के साथ आगे चलकर गीत का मंत्र हुआ। ये गीत विविध रागों में गाय जाते थे। उनके साथ अभिनय का मंत्र होने से एक विंगल प्रकार के दृश्यकाय की मूर्ति के निमित्त पाठ्य दृश्यकाय में भिन्न भेद दृश्य काय का नाम दिया गया।^४ रास नौवा नौ प्रकरण का गद्य नाम्य है।

१ रासो की उपर्युक्त प्राचीनतम प्रति (लिपिबद्ध मूल १६६७) में रास का उल्लेख रासड नाम में हुआ है।

२ उदाहरण के लिए रास जगतसो रत्न छन्देतिप—
ठल्लिग प्रान्त रासोड (पद्य १६)।
पुष्पो रत्नत्न त्रिम पडरि पाळ (पद्य २१६)।

३ हारावली कोष में रास का अर्थ गादुला नौडा अर्थात् गाया जायेन विंगल किया हुआ है।

४ विंगल मूरि के उपर्युक्त रसायन रास (रचनाकार वारहवीं शताब्दी) पद्य ३६ तथा मन्त्रभेदा रास (रचनाकार म० १२२७) पद्य ४८, में इनका उल्लेख मिलता है।

५ काय प्रेम्भ अर्थ च। प्रेम्भ पाठ्य गद्य च। पाठ्य नाम्य प्रकरण नाटिका सम्बन्धित इहामृग-स्मि-व्यायाग उमूर्तिवाक प्रहसन भाष-वाची-मट्टवाति। गद्य डाविका भाष प्रस्थान विंगल भाषिका प्ररण रामात्रीड हनीमव रासक गाष्टा-श्रीगदित रागका-याति। (हमचन्द्र कृत वाचानुशासन, अध्याय ८ सूत्र १४)

वाचिका भाष प्रस्थान भाषिका प्रेम्भ विंगल रामात्रीड हनीमव श्रीगदित रासक-नाठी प्रभृतीनि गद्यानि। (वाग्भट्ट कृत वाचानुशासन, अध्याय १)

आरम्भ में राम के माथे गाये जाने वाले गीत विभीषी भी प्रकार के ही मन्त्र थे।^१ पर धीरे धीरे वे कथा प्रधान हाने लगे। कुछ समय के अनंतर नृत्य वाला जो गीत ही गया और कथा काय की ही रास कहने लगे। जब ऐसे रामा की रचना होने लगी जो नृत्य के साथ गाये जाने के लिए नहीं किन्तु पढ़ जाने के लिए ही हाने थे। ये वास्तव में कथा-काव्य होने थे। प्राचीन राजस्थानी गुजराती में इस दजना रास लिखे गए और उनकी परम्परा अत तक चलती रही। राजस्थानी और गुजराती भाषाओं में जो विद्वानों द्वारा लिखा हुआ राम-साहित्य विद्यालय परिमाण में उपलब्ध है।

जनास रास रचना की गली भाट चारण आदि राज-दरबारा से सबद्ध कविता न ग्रहण का। उहान रास के स्थान पर रासो शब्द का अपनाया। जना के राम काया और उनके रामा-काया में कुछ अंतर था। राज-दरबारा से संप्रथ हाने के कारण इनकी रचनाओं में वीर-कायों और युद्ध की प्रमुखता थी—युद्ध-वर्णन इनका एक अनिवार्य अंग था। धीरे धीरे रासो-काव्या से ऐसी रचनाओं का अर्थ लिया जाने लगा जिनमें युद्ध का वर्णन ही। आधुनिक राजस्थानी में रामो शब्द का अर्थ ही भगवत् उपद्रव भङ्ग जानि का हो गया है।

इस प्रकार रामो-साहित्य का विकास राम-साहित्य से हुआ। रामो मूलतः कथात्मक या चरित्रात्मक काव्य थे। भाट और चारणा के मध्य में उनमें वीर रमात्मक और युद्धात्मक तत्त्व प्रधान हो गए।

(ग) रासो साहित्य के लेखक, क्षेत्र तथा काल

जमा वि उपर कहा जा चुका है रामो-साहित्य राज-दरबारी जयवा राज दरबारा में संप्रथ रखने वाले कविता द्वारा रचा गया है। उपलब्ध रामा में अधिकतर के रचयिता भाट^२ और चारण हैं। एक के रचयिता भृगुनाथमान गान्धुमार एक के जोन माधु और एक के जोन मथण है।

रामो साहित्य की रचना प्रधानतया सिन्धी मन्त्र व्रज मन्त्र दुन्दुख^३ और राजस्थान में हुई जहाँ राजपूत राजाओं का शासन रहा। रामो-साहित्य के प्रथम लेखक संभवतः भाट थे जिनका प्रधानता पूर्वी राजस्थान सिन्धी व्रज और दुन्दुख में था।

रासो काव्या का परम्परा विभ्रम का मोलहरी गतांगी के अंत में या मन्त्रवा गतांगी में आरम्भ हुआ और उत्तरीमकी गतांगी के अंत तक चलती

^१ जिनमूलमूर्ति का उपरान्त रामायण गम नीति प्रधान पद्या का मन्त्र है।

^२ भाट (म० भट्ट) में अभिप्राय ब्रह्मभट्ट जानि में है जिसे चरम मूर्धन्य गम आदि अनन्त प्रसिद्ध कविता का जन्म मन्त्र का मौभाग्य प्राप्त हुआ।

गयी। जतमी रासो जिसमें जतसी और कामरा व स १५६१ में होने वाले युद्ध का वर्णन है तथा पृथ्वीराज रासा, जिसका रचनाकाल वर्तमान में प्राप्त साक्ष्य का दायत हुए अक्बर के शासनकाल (स १६१२, १६६२) के पूर्व नहीं जाता उपलब्ध रासो साहित्य की प्राचीनतम रचनाएँ हैं।^१

(घ) रासो काव्या की भाषा

रासा-काव्य प्रधानतया ब्रजभाषा में लिखे गए जिसे राजस्थान में पिगल कहा जाता है। राजस्थानी अर्थात् डिंगल में भी उनकी रचना हुई। पिगल मूलतः भाटा की भाषा थी और लिखन चारणा की। आप चलकर यह भेद मिट गया—चारण भाषा पिगल में लिखने लगे और भाटा की भाषा लिखन में लिखी रचनाएँ मिलती हैं। उपर्युक्त रासा में पृथ्वीराज रासा विजयान रासा क्याम रासा, रतन रासा राणा रामो हम्मीर रासो करहिया को रामो लावा रासा और मुज्जाण रासा ब्रजभाषा या पिगल की रचनाएँ हैं और जतमी रासा मुस्मानगमो सत्रमाल रासो मगतसिध रासा तथा राम रासा राजस्थानी या डिंगल की। इन रासा में जो वृद्ध में कही कही श्लोक या निमाणी उक्त जाय हैं जिनकी भाषा प्रायः खटावाली है।

रासा-काव्य की पिगल और डिंगल माधारण बालचान की ब्रजभाषा और राजस्थानी में कुछ अंतर स्पष्ट है। लिखकर उन स्थानों में जहाँ युद्ध या विभीषण अथवा प्रसंग का वर्णन (description) होता है। यह विशेषता अधिकतर ध्वनियाँ में सर्वप्रथम रखती है परन्तु कहीं-कहीं गद्य रूप रचना में भी। पिगल में कभी कभी शब्दावली (vocabulary) में बड़ी भिन्नता भी पायी जाती है अर्थात् एक शब्द का भी प्रयोग होता है जो बोलचाल में उठ गया है या जो बालचाल में कभी प्रयुक्त नहीं हुए। इस प्रकार गद्य के अंत में भी प्रायः अनुस्वार का आगम किया जाता है। काव्य में आज गुणवानों के लिए अथवा मात्रा पूर्ण करने के लिए गद्य को मध्यगत ध्वनियाँ या प्राकृत या अपभ्रंश की भाँति प्रायः दुर्गम कर दी जाती है अथवा अनुस्वार का आगम कर दिया जाता है जो कवन का कवनर या कवनर निमल का निमल त्रिमल त्रिमल निमल निमल निमल निमल आदि। इसी प्रकार गद्य के अंत में भी प्रायः अनुस्वार का आगम किया जाता है। इस शब्द की परम्परा अपभ्रंश के प्रबंध रासा में आरम्भ होती है

^१ हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनमें से कहीं-कहीं ध्वनियाँ को चरित्र नायिका की सम सामयिक रचनाएँ मानकर आदिनाल में रवान किया गया है परन्तु वस्तुतः इनमें से कोई भी रचना सातहवाँ शताब्दी के पूर्व की नहीं। अतः इन्हें मध्यकाल में स्थान देना ही उचित होगा।

और जब तक चली जायी है।^१ तुलसी भूषण आदि न भी युद्ध-वर्णन क प्रसंगा म रम गनी का प्रयोग किया है।

वर्णनात्मक अंग की भाषा म वर्णमयी का ध्यान बराबर रखा गया है।

(ड) रासा-काव्यो के छंद

रामा प्रथा क छंद अपभ्रंग म आय हुए हैं। उनम वर्णिक भी हैं और मात्रिक भी। वर्णिक छंद मूलतः मस्कृत क ह और अपभ्रंग म भी प्राकृत स हान हुए आय है। मात्रिक छंद अपभ्रंग क अपन हैं। क्या क कथन (narration) म प्रधानतया दूहा कवित्त (छापय) पदगि और चौपाइ क विविध रूपा का प्रयोग हुआ है और वर्णना (de cription) म भुजगी (भुजगप्रयात) अधभुजगी (विगज) रमावता श्रावक नाराच अधनाराच मानीदाम आदि का। गालू विधीकित भुजगा श्रावक मानीदाम आदि वर्णिक छंद मात्रिक रूप म भी प्रयुक्त हुए हैं जयात एक गुरु वर्ण क स्थान पर दो लघु वर्णों का यथच्छ प्रयोग हुआ है (कही कहा ना लघु वर्णों क स्थान पर एक गुरु वर्ण का भी)। गालू विधीकित क मात्रिक रूप का छंदगान्त्र म साठक नाम मिलता है।

जया गहा श्राव (अनुष्टुप) आदि शुद्ध प्राकृत या मस्कृत क छंद भी कहा-कहा आय है पर उद्धरण रूप म (जवश्य ही इन उद्धरणा की भाषा बहुत कुछ विकृत हा गयी है)।

पीछे क रामा म मवया और मनहरण कवित्त का प्रयोग भी पाया जाता है।

बीच-बीच म वारता (वार्ता) वार्तिक कवित्तिका चूर्णिका आदि नामा मे गद्य का प्रयोग भी मिलता है। एसा साधारणतया शीपक के रूप म, या प्रसंग के उल्लेख क विग हुआ है। वर्णन म कहा-कहा तुकान्त वाल गद्य का प्रयोग भी हुआ है जिग कवित्तिका या दवावत कहा जाता है (नवावत की भाषा खडी वानी हानी है)।

छंद की शर्द का प्राय रूपव कहा जाता है। अध्याया का छंद-मख्या स्पर-मख्या के द्वाग सूचित का जाती है। भुजगा श्रावक मानीदाम नाराच

१ मित्राज्ञा—

ण जता ण विन्न ण मित्त ण मत् । ण धम्म ण वम्म ण जाय ण दत्त ॥
 ण पुत्त वल्ल ण षट्ठ पि ण्णित्ठ । मय मयउत्त दूत्त म्म पण्डित्ठ ॥
 मय जाइ णूण अहम्मण धम्म । विणट्ठ ण धम्मण मत्त अवम्म ॥
 वय दुक्खिय गहाण हाण । मुत्ताय भट्ठ ण दुट्ठेण ण ॥
 अणित्ठ वणिट्ठ भुष मण्णाय । ममुत्त उट्ठ मय तुम्ह जाय ॥

[भविस्मयत्त-कहा २।३६]

आदि छः चार चार चरणा में विभक्त नहा रिय जात । उनके जितने भा धरण एक साथ आत है उन सबको एक ही रूप में समझा जाता है । पत्रस्वरूप चार में विभक्त करने पर कभी-कभी अत म दा हो चरण गप रह जाते हैं (और कभी-कभी ता केरन एक ही) ।

(च) रासो साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ

(१) रासो साहित्य लौकिक साहित्य है—

हिन्दी का प्राचीन साहित्य प्रधानतया धार्मिक है । आदिवासीन साहित्य जन धर्म से प्रभावित है और मध्यकालीन साहित्य ब्रह्मण्य धर्म से । रीति साहित्य भी धार्मिकता में सबका मुक्त नहा । वहाँ भी नायक और नायिका प्रायः कृष्ण और राधा ही है । रागा-साहित्य धार्मिक के विपरीत लौकिक साहित्य कहा जा सकता है । पृथ्वीराज रासा (कृतक रूपांतर) में अवश्य ही स्थान-स्थान पर धार्मिक स्तुतियाँ जाती हैं और चर का चित्रण भी एक परम धार्मिक व्यक्ति के रूप में किया गया है पर यह धार्मिक तत्त्व मूल्य काय में नितान्त गौण है । राम रासो अवश्य ही अपवाद है ।

(२) रासो ऐतिहासिक काव्य हैं—

रासो श्रया का ऐतिहासिक काव्य की वाटि में रखा जा सकता है । उनका दो विभाग रिय जा सकता है—(१) काव्य-तत्त्व प्रधान और (२) इतिहास तत्त्व प्रधान । पृथ्वीराज रासा सुम्माण रासो विजयपाल रासा आदि प्रथम विभाग में आते हैं और कयाम रासो राणा रासो रतन रासा जतसी रासा आदि दूसरे विभाग में । ध्यान रहे कि यह विभाजन अत्यन्त स्थूल है क्योंकि इतिहास तत्त्व प्रधान रासो में भी काव्य तत्त्व आता या बहुत अवश्य पाया जाता है ।

(३) रासो चरित्र काव्य हैं—

विषय का दृष्टि से रासा-काव्यो में तीन विभाग रिय जा सकता है—
(१) जिनमें किसी वर का चरित्र वर्णित हा जम कयाम रासो और राणा रासो
(२) जिनमें किसी विचित्र घटना का वर्णन हा जम जतसी रासा मुजार्णसिध रासा बरहिया को रासा और तावा रासा तथा (३) जिनमें किसी व्यक्ति का चरित्र हा जम पृथ्वीराज रासो सुम्माण रासो इम्मीर रासा विजयपाल रासा राम रासा आदि । तीसरे विभाग की रचनाओं में भी चरित्र-नायक या प्रधान पात्र के वर का वर्णन मन्त्रा से या विस्तार में अवश्य मिलता है । रतन रासो में यह वर्णन बहुत विस्तार से है । सुम्माण रासा में सुम्माण व

१ राम रासो इसका अपवाद है । राम रासा का कथानक पौराणिक है

पूवता का वणन तो है ही पर कवि क समय तक क वसजा का वणन भी पाया जाता है ।

चरित्र-काव्या की यह परम्परा सस्कृत काल म जायी है । रघुवीर कुमार मभव, विराताजुनीय, गिगुपालवध नैपथ्य चरित श्रीकठ चरित इस प्रकार की प्रसिद्ध रचनाए ह । दरबारा कत्रिया न अपन आश्रयताभा को विषय बना कर चरित्र-काव्य लिखे जस बिभ्रमाकण्वेव चरित कुमारपात चरित पृथ्वीराज विजय हम्मौर महाकाव्य, सुरजन चरित आदि । इनम रासो-काव्या की भांति ही अलौकिक तन्वा म समावग दया जाता है ।

(४) रामो साहित्य वणन प्रधान ह—

एतिहासिक एव चरितात्मक काव्य हान के कारण विवरण या वृत्त-कथन (narration) नो रासा काव्या का प्रधान अंग है ही परंतु वणन (description) भी कम प्रधान नहीं । काव्यतत्त्व प्रधान रामो का तो वह माना प्राण ही है पर इतिहासतत्त्व प्रधान रासा म भा उसका अभाव नहीं । कवि का जहा वही वणन करन का अवसर मिलता है वह उम नहीं छोडता । इस प्रकार शास्त्र म निरूपित न्नि रात्रि प्रभात मध्याह्न-संध्या षडक्रतु-वारहमास नगर वन पवन-नदी-सरोवर समुद्र, मृगया यात्रा ज्ञात्रीटा वनविहार, त्रिवाह भोजन पव उत्सव, नव गिस शृंगार सजायट सथाग विभाग जादि विभिन्न दृश्यो, व्यापारो वस्तुभा और परिस्थितिया के वणन किमी-न किसी अंश म रासो काव्या म पाय जात ह । युद्ध तो रासो-काव्या का विगिष्ट तत्त्व ही ठहरा अत वणना म प्रधानता युद्धवणन की है । पृथ्वीराज रासा जस बट रासा म तो वह न जान कितनी बार आया है ।

(५) रासो साहित्य वीर रस प्रधान है—

रामो-साहित्य का प्रधान विषय वीर-काय और युद्ध होत क कारण रासा काव्या म वीर रस की प्रधानता स्वाभाविक है । युद्ध वणना म वीर क साथ रौद्र भयानक और वीमत्स का भा समावग हुआ है । अदभुत कारण और पात की भा यथास्थान अवतारणा हुई है । पर रामो-काव्या की (काव्यतन्व प्रधान रासा की) सबसे बड़ी विषयता है वीर क साथ शृंगार का मयाग । वीर और शृंगार क मिश्रण की यह परम्परा शास्त्रीय-साहित्य आग लाक-साहित्य गाना म प्राचीन काल म चली आया है । मध्यकाल म उसका सूत्र विकाम हुआ । मध्ययुगान यूरोप म chivalry क रूप म उमक दगन होत है ।

(६) रासो साहित्य में अलौकिक तत्त्व—

रामो-साहित्य म अलौकिक तत्त्व का पचुर समावग पाया जाता है । उसम दन और दानव सुर और असुर वीर और वनाज भूत आर व्रत गधव और

जम्बराण यागिनिया और डकनिया बम ही पात्र है जस मानव गुणपत्ता भी मनुष्या का भाति बालत चालत और यमहार उगने हैं दवता और ऋषि वरदान और पाप दत है जम्बराण नायिकाआ क रूप म अवतारण हाता है दवता और ज्यातिपा भविष्यवाणिया करत है । पृथ्वीराज रामा म जन यति जमरमिह मत्रयल स अमावस्या का पूर्णिमा करव गिया गता है गिद्धनी और डकनी जागर मयागिता को युद्ध का वृत्तात मुनाती हैं वीरभद्र प्रनट हाता है, वारागार क कपाट स्वय खुल जात है और पृथ्वीराज और चद क मरण पर दवता पुष्पत्रुष्टि करत हैं । इतिहासतत्त्व प्रधान रामा तत्र म युद्धा म नाग्न नाचन हं और यागिनियां गप्पत्र भर भग्वर रबिर पात करती है ।

पृथ्वीराज रामा क बड रूपांतरा म पृथ्वीराज का दुग दानव का अवतार तथा मयागिता को रभा का अवतार बतया गया है । मध्यकालान चरित-बाध्या म कथा क पात्रा का अलौकिक रूप इन की तक इति मी पड गयी थी । पृथ्वी राजविजय म पृथ्वीराज का राम का अवतार कहा गया है और उमकी भावी पानी का निलात्तमा का । सुगजन चरित म जानल का रामा एक नाग-कथा है जिम याहन क लिए वह पातात्र ताक जाता है । बाहन्द चरित म बाहन्द और उमसे प्रेम करन वाली गाह कुमारी राजा नाडणा क पूव क छह जमा का विवरण दिया गया है ।

(७) रासो साहित्य में अतिशयोक्ति और दृष्टि पालन—

काव्या का कुछ बधा बधाया अतिशयोक्ति-भूषण रूटिया चली आया है उस सना क प्रयाण के समय दूर दूर क दगा अथवा स्वग और पाताल तत्र के निवासिमा का भय से कपित हाता पृथ्वी का घसकना गपनाम और बराह एव कच्छप का याकुत्र हा उठना जाति-आति । रामा-काव्या म इन इटिया का पूरी तरह पालन हुआ है । नायक जय ग्विजय को निकलता है ता भारतनप भर क राव्या और राज बगा का विजय करव लौटता है । राजाआ की सनाआ म सुभटा की सन्या लाग्या स क्या बम हा ।

(छ) रासो साहित्य का ऐतिहासिक मूल्य

काव्यतत्त्व प्रधान रामा इतिहास का दृष्टि म सबथा निरूपयागा है । उनका कथानक जनश्रुतिया पर आधारित है और उनम कविया का कल्पना भी गुनकर गली है । जनोक्ति तत्त्वा की उनम भरमाण है । बात यह है कि इन रामा का रचणाकाल चरित्र नायका क कात्र क बभूत पीछे का था जय तत्र चरित्र नायका क चारा जार जभूत जार जलौकिक तत्त्वा म मिथित जनश्रुतिया का जाल-गा बिद्ध चरा था जिमम कल्पना का खुनकर गजन क लिए पूरा अवकाश प्राप्त था । हम प्रसार इम विभाग म जान वाली रचनाआ का जा कुछ भी मूय

है वह साहित्यिक ही है ऐतिहासिक तन्त्र भी नहीं। हा, पृथ्वीराज रामा उस परिवर्धनशील महाकाव्य (epic of growth) का अपना मास्वृत्तिक मूल्य भी है।

इतिहासतत्त्व प्रधान रासा का बहुत बड़ा ऐतिहासिक मूल्य है। समकालीन भारत का इतिहास के अनेक अध्यायों पर उस अछूटा पड़ाव पड़ता है। मुसलमानी आधारा पर निर्मित एकपक्षीय इतिहास के संगाधन और प्रति में उत्तम अक्षी महाकाव्य मिल सकता है। निस्संदेह उनका उपयोग में भावधानी की आवश्यकता है। इतिहास का जो अंग कवि का समकालीन अथवा निकट भूत-कालीन नहीं उमरा प्रामाणिकता असंशय नहीं कर्णक बह किसी-न किसी अंग में जनश्रुतियाँ में अमिश्रित नहीं। निकट भूत-कालीन और समकालीन इतिहास की प्रामाणिकता तो असंशय नहीं पर वह अतिशयोक्ति और एकपक्षीयता के दोषों में सरथा मुक्त है एसा नहीं कहा जा सकता।

रासा साहित्य की प्रमुख रचनाओं का परिचय

रामा नामवाणी का रचनाएँ प्रसिद्ध हैं जयवा जो प्रकाश म जा चुकी है उनका नाम इस प्रकार है -

द्वन्द्वभावा या विगल की रचनाएँ

- (१) चण्ड कृत पृथ्वीराज रासा (तथावधि रचनाकार—तम्हवी गताली)
- (२) गान्धर्व कृत हम्मौर रासा (तथावधि रचनाकार—पद्महवा शताब्दी)
- (३) नरत कृत विजयपाल रासा (तथावधि रचनाकार—ग्यारहवी गताली)
- (४) यामनया उपनाम जान कवि कृत कयाम रासा (स १६६१ स १७११)
- (५) गान्धर्व कुम्भकर्ण कृत रतन रासा (सवन् १७३२ व लगभग)
- (६) दयालपाम कृत राणा रासा (सवन् १७५० व लगभग)
- (७) महातमा जोगीनाथ कृत मुज्राणसिध रासा (१७६६ के लगभग)
- (८) जोधराज कृत हम्मौर रासा (सवन् १८८५)
- (९) गुलाब कवि कृत करहिया की रासो (स १८२६)
- (१०) रविया गापाठान कृत तावा रासा (स १८३० के पूर्व)

राजस्थानी या डिगल की रचनाएँ

- (१) अनात कवि कृत राउ जतमी ग रासा (स १७६१ व लगभग)
- (२) दधनाडिया साधोदाम कृत राम रासा (स १६५० व जासपास)
- (३) डगम्भी कृत मयसाल रासा (स १७१० व लगभग)
- (४) गिरधर कृत मगतसिध रासा (स १७२८ व लगभग)
- (५) दनपत या दोनन विजय कृत गुम्माण रासा (१७६७ और १७६० व बीच म)

राजस्थानी भाषा म पित्रुव काव म तिसी गयी ऊपर रासा मारण रासा आदि कई परिहास-कृतियाँ तथा जता रासा वाणिया रासा आदि अनेक व्यंग्य रचनाएँ भी रासा नाम स मिलती हैं ।

द्वन्द्वभावा एणियाटिक सासाणी व पुस्तकालय म प्रसिद्ध पृथ्वीराज रासा स

भिन्न पृथ्वीराज रासो की एक प्रति है जिसमें महोवा-खड और बनवज खड नाम के दो विभाग हैं। इनमें से महोवा-खड को श्याममुग्गदाम न परमाल रामा के नाम से नारी प्रचारिणी-मभा द्वारा प्रकाशित करवाया था। बनवज खड को भी वे पण रासो के नाम से प्रकाशित करवाना चाहते थे पर अपनी इस इच्छा का ब पण नहीं कर सके।^१

इनके अतिरिक्त राममल रामो का उत्कलत कविराज श्यामलतास ने^२ तथा गौरीशंकर हीराचन्द जोष्वा ने^३ किया है जिसमें मवाड के महाराणा राधमल का चरित्र वर्णित है। यह कवन म नयी आया अतः अभी कहा जा सकता कि पिगत म है या टिगत म।

अपभ्रंश में पदहवी गताब्दी में लिखित सनहय रामय (सदाय रासक) नामक एक ग्रंथ मिलता है जिसमें मलच्छन्द वासी मीरमन के पुत्र अद्दहमाण ततुवाम (अब्दुर रहमान जुलाह) ने लिखा था। नाम रामय (रामक रामउ) होने पर भी यह वीर रामायण रचना नहीं है। जत में रामा-कान्या में गिनना उचित नहीं होगा। वस्तुतः यह एक राम-काव्य ही है।^४

हिन्दी के इतिहासकारों ने वीसल रास को भी रामा-काव्या में गिना है। पर उनका ऐसा करना युक्ति-युक्त नहीं क्योंकि —

- (१) इस काव्य की हस्तलिखित प्रतियाँ में उसे वामल रास कहा गया है वीसल रासो नहीं।
- (२) रासो-काव्या की भाँति वह वार रस और युद्ध-वर्णन का काव्य नहीं किन्तु प्राचीन राजस्थानी के जनक रास-काव्या का भाँति एक मीथी-मादी प्रेम कथा है।
- (३) उसकी भाषा अर्थात् रासो-काव्या का भाँति पिगत नहीं और न सुम्भाण रामा का सी टिगत है, किन्तु माधी-मादी वाचचान की धरेन राजस्थानी है।
- (४) उसका छन्द भी वीर श्यात्मक रामो-कान्या में पाये जाने वाले छन्द से नहीं मिलता।

^१ श्याममुग्गदाम द्वारा संपादित परमान रामा भूमिका।

^२ वीर विनोद खन् १ पृष्ठ ३२७ और २२६।

^३ श्यामपुत्र राज्य का इतिहास भाग १, पृष्ठ २२६ और ३२६ तथा भाग २ पृष्ठ ११५८।

^४ रामका प्रकाशन मुनि जिनविजय द्वारा संपादित गिधा जन-ग्रन्थमाला में हुआ है।

(१) रामो-काव्य सभी पाठ्य काव्य है जबकि वासुदेवो गम गम-काव्य है ।

(६) मध्य काव्य में कवि ने उस गम कहा है रामो कहा नहीं ।

इस गम का परिचय इस अध्याय के अंत में परिशिष्ट में दिया गया है ।
रामो-काव्य का सन्निहित परिचय आगे दिया जाता है—

(क) ब्रजभाषा के रामो काव्य

(१) हम्मीर रामा

हिन्दी-साहित्य के इतिहास में कहा गया है कि गान्धर्व पद्धति के रचयिता कवि गान्धर्व न गणेशधर न चौहान नरक हम्मीर न चरित को लेकर हम्मीर रामा की रचना का थी । हिन्दी के इतिहासकारों में यह प्रचार फैल चुका इसका पता नहीं चलता । गान्धर्व हम्मीर की राज-सभा के सभासद राघवदेव के पुत्र दामोदर का पुत्र था और उसने स. १६०० में गान्धर्व पद्धति नामक मस्कृत के मुभाषित संग्रह की रचना का थी ।^१ उसमें हम्मीर काव्य अथवा हम्मीर रामो लिखन का उल्लेख कहा नहीं मिलता ।

प्राकृत पिगल नामक छटा-ग्रन्थ में किमी हम्मीर से संबंध रखने वाले कविपद्य पद्य उद्धृत हुए हैं । रामचन्द्र गुप्त लिखते हैं— मुझे पूरा विश्वास है कि ये पद्य हम्मीर रामा के ही हैं ।^२ पता चला गुप्तजी के इस दृढ़ विश्वास का आधार क्या है । उस समय राजाओं के आश्रय में अनेक कवि रहते थे और समय-समय पर प्रसंगानुसार स्पृष्ट पद्या की रचना किया करते थे । अतः स्पष्ट प्रमाण के अभाव में गुप्तजी का कथन माय नहीं किया जा सकता ।^३

मिथवंधु विनायक गान्धर्व का उल्लेख करते लिखा है कि उसने गान्धर्व-पद्धति हम्मीर काव्य और हम्मीर रामा नामक तीन ग्रन्थ बनाये तथा उसकी भाषा वर्तमान ब्रजभाषा तथा अवधी से बहुत-कुछ मिलती है । इससे पता चलता उसकी कविता का यह उदाहरण दिया गया है—

मिथगमन सुगुण्य वचन कर्त्तु पर इवसार ।

तिरिया तेस हमीर हठ च न दूजा बार ॥^४

^१ कीय विष्णु भाव मस्कृत लिटरचर पृष्ठ २०२ ।

^२ हिन्दी साहित्य के इतिहास पृष्ठ २६ ।

^३ जयचन्द्र नाहटा श्रीगान्धर्व-काव्य की रचनाओं पर विचार (जा प्र पत्रिका भाग ६७ पृष्ठ २६०) ।

^४ मिथवंधुविनोद भाग १, पृष्ठ २०८ ।

पाहत पिगन म आय हूए पद्य नीच उदघृत क्रिय जात है—

^१ मुचहि मुदरि पाअ अप्पहि हसिउण सु मुहि । खग म ।
कप्पिअ मच्छ-भगए पच्छए वज्जणाए तुम्ह धुअ हम्मीए ॥ ७१ ॥

^२ पिघउ णिड सण्णाह वाह उप्पए पक्खर दड ।
वधु समदि रण घमउ मामि हम्मीए वज्जण नइ ॥
उडटल णए गह भमउ गगु रिउ-मीमहि डारउ ।
पक्खर पक्खर ठल्लि पल्लि पव्वअ अफालउ ॥
हम्मीए वज्जु जज्जल भगइ काएानन मुह मइ जलउ ।
मुरिताण सीस करवाल णट तज्जि कलवर णि वलउ ॥ १०६ ॥

^३ पअ नए दम्मए घरणि तरणि ग्ह धुल्लिअ भपिअ ।
कमठ पिट्टे णपरिअ मए मइए सिर कपिअ ॥
वाह चरिअ हम्मीए वीए गअ जुह मजुन ।
विअउ वट्टु हावद मुच्छि मच्छह के पुत्त ॥ ६२ ॥

^४ दाएला मारिअ णिलि मह मुच्छिअ मच्छ सरार ।
पुर जज्जन्ता मति पर चलिअ वीए हम्मीए ॥

१. इ मुचरी ! पैर का टाँ दे । इ मु मुमी ! इसकर मुझे खड्ड न । मच्छा क गरीर काटकर हममार निचय ही तुम्हारा मुग दवेगा ।
२. बाँहा पर पापर दकर हूँ कचक पहनूँगा । स्वामी हम्मीए की आज्ञा मानकर बोधना में विग लकर रण में धम पाँगा । उडुगणा में भरे (या उडकर) आकाश भाग में भ्रमण करूँगा । गनु के मिर पर गह्ल माँगा । पापर-म पापर टंन पर कर पवल का भा उमाए दूँगा । जज्जन कहता है कि हममार के निग प्राधानत न मुख में जत रहे हूँ । मुत्तानत क मिर पर तनवार मारकर उमा गराए म स्वग को चना जाऊँगा ।
३. परा क भार में पृथ्वी दानमना उठी । मूय का रथ बृग में ढक गया । कच्छप का पीठ तब गयी । मए और मएगचन की चाटिया काप उठी । हाथिया न मूय के माथ वीर हम्मीए प्राध करक चना । मच्छा क पुत्रा न (मच्छा न) कच्छ-धूवक जहावार का आयए रिया और मूच्छित हा गया ।
४. हममार ने ताल बजाया णिन्ता में मच्छा क गरीर मूच्छित हा गया । थल्ल मत्रो जज्जन का आग करक वार हममार चरा । जइ वार हम्मीए चला ता परा क भार में पृथ्वी दानन लगी णिआआ म मार्गो म और आकाए म अ-एवार द्या गया धूलि न मूय क रथ का ढक रिया । णिआआ मार्गो और आकाए म अ-एवार हा गया । मुगमात्रिया के ज्ञान (धन की वसुती क निग जासिन क मय म पवड हूए पुप्प) दावर तुम निर्धारिया का तन मन कर तमा करत हा और णिन्तो म दान बजात हा ।

चत्रिअ वार हम्मीर पाअ भर मणि वपन् ।
 लिंग मग णह अधार धूनि गूरह रह भपन् ॥
 लिंग मग णह अधार जाणु खुरमाण व ओत्ता ।
 दरमणि दममि विपक्कप मारि ढिली मह ढाल्ला ॥१४७॥

५ भजिअ मलअ चोत्र नइ णिवलिअ गजिअ गुज्जरा ।
 मातव राअ मलअ गिरि लुक्किअ परिहृणि वूजरा ॥
 खुरामाण खुहिअ रण मह मुहिअ लघिअ साअरा ।
 हम्मीर चत्रिअ हा राव पत्रिअ रिउ गण वाअरा ॥१४१॥

६ धर लगइ अगिअ जन्म घह घह वन् लिंग मग णह पह अणल भरे ।
 सब दीस पमणि पाइक्क तुनन् धणि थणहर जहण रिआव करे ॥
 भअ लुक्किअ थक्किअ वदुणि तरणि अण भन्व भेरिअ सह पत ।
 महि तुड्ड पिट्टइ रिउ मिर तुड्ड जक्कण धीर हमीर चल ॥१६०॥

१ खुर खुर खुनि खुनि महि घघर ख वनइ
 ण ण ण ण गिदि करि सुरअ चल ।
 न न न गिनि पन् टपु धमन् धरणि घर
 चमक्क करि वन् दिम चमन् ॥

४ हम्मीर चना ता हाहाकार गन् हान लगा गन्नु गण वापर हो गय मनय पगजित हो गया चान दग का स्वामी निपतित हा गया गुजर चिध्वस्त हा गया । हाथिया का छाडकर मानव का राजा मलयाचल म जा छिया खुरामान थक्क हा उठा और रण म मुच्चित हा गया और सागर का पार कर गया ।

५ जब वीर हम्मीर चलता है तो गन्नुआ के घर म आग लग जाती है । वह धक् धक् करके जनती है । लिंगाआ के माग और आवास के पय अग्नि (की ज्वालाआ) स भर जात हैं । सनिक मय दिगाआ म पनकर चलत हैं ।
 (१) । मय स गन्नुआ का स्त्रिया के समूह छिप गय और जइ हा गय और नगाडा का भयकर गद्व हान दगा । गन्नुआ के मिर टूटत है फूटने है और पृथ्वी पर लातन है ।

७ वीर हम्मीर जब युद्ध म चना ता घाटे खुरा स पृथ्वा का खोल्कर घघर करके घाड युद्धभूमि म मनमनात दूण बड । टपटप करत लण उनरे टाप (पग के आघात) पन्न लग पहाड घसन तम चवरा म सब लिंगाए चमक्कमा उठी मना दन्तवानी चना पदल चल और हाथी धमधम करत चल । वह थप्ट मत्पुक्क गन्नुआ के हृदया म गय करता है ।

चलु दमनि दमनि वतु चलद पन्हु रतु
 धुनकि धुनकि करि करि ललिआ ।
 वर मणसअन वग्द विपन हिअज सल
 हमि वीर जय रण चनिआ ॥२०४॥

१ जहा भूत बताल णच्चत गावत राण ववधा ।
 सिआ फार पक्कार हक्का र्वता पृन कणा रधा ॥
 कआ तुट्ट फुट्टे मथा कउधा णचना हसता ।
 तहा वार हम्मीर सगाम मज्जे तुलता जुअता ॥२१८३॥

(२) विजयपाल-रामा

कहा जाता है कि नन्दिमठ न विजयपाल (कौता) क याचक-नरग
 विजयपाल क चरित्र का लेकर विजयपाल रामा नामक ग्रन्थ की रचना की थी ।
 इस ग्रन्थ का कुछ अंग मुगिक दबीप्रसाद का मित्रा था ।^१ उसमें लिखा है कि
 नरल सिराहिया नाट था और उस विजयपाल न हिडोम नगर सौ गाव हाथी,
 घांटे ग्ल आदि पुरस्कार म न्दिय र तथा पल्ल र्ण और जत्त नाम के तीन
 भाई भी उसके थे ।

विजयपाल का समय ग्यारहवा शताब्दी बताया जाता है । उस ग्रन्थ म उसका
 समय स १०६३ दिया है पर विजयपाल क मित्र विजय का जा कणन दिया है
 वह कल्पना और अतिशयोक्तिपूर्ण है । उस भारतवर्ष के समस्त राजपूत-वंश
 का विजयता बना गया है । उस ग्रन्थ म जा नाम आय ह व तरहवा गता नी क
 हैं जम गजनी का गहाजुद्दीन मित्रा का लंगपाल जजमर का राम (सामद्वर)
 और र्ण का पज्जून । य नाम जान पत्ता है पृथ्वीराज रामा म न्दिय गये हैं ।

मिश्रवधु डम म १२४/ क लंगभग की रचना मानत ह^२ पर भाषा और
 गली का लक्षते टुण यह ग्रन्थ वन्त पीट्ट का जान पत्ता है । उसका विमाण-नाम
 श्री अगस्वत् नाट्य जगत्क मा उत्राशवा गताब्दी और श्री मानाना

१ जहाँ भूत-वतान कउधा का गान्ध नाचत आर गान ह मियार विपुन
 आवाज वरत हण कण रधा का फालत है । शरीर टूटत है माथ फूटत है
 तथा कउध नाचत और मन ह वन मराम म वीर हम्मार वरग क माथ
 क्रुभ रहा ।

२ (क) मुगिक दबीप्रसाद कलि रत्नमाना पृष्ठ २० २७ ।

(ग) अगस्वत् नाट्य वाग्गाथा कान की रचनाआ पर विचार (ना प्र
 पत्रिया नाम ८७ पृष्ठ २५६) ।

३ मिश्रवधु विनो भाग १ पृष्ठ २०७ ।

भेनारिया स १६०० क लगभग का अनुमान करत हैं।^१ हम भेनारियाजी का कथन ठाक जान पड़ता है।

मुसिफ दवाप्रसाद का प्राप्त हुए जग भ कुल ८२ छत्र हैं—८ छापय १८ मोतानाम २ चौपार् ८ पद्धरि जीर ६ दाह।^२

(३) सुजाणमिह रासो-

इसका दूसरा नाम वरमलपुर-गट विजय है। वरमलपुर के भाटी सरदार न भुलतान म आत हुए एक बाफिल का तूट लिया। बाफिले के लोग न वीकानर के महाराजा सुजाणमिह से शिष्यायत का जिस पर सुजाणमिह न वरमलपुर पर आक्रमण करके उसका सरदार को पराजित किया। इसा आक्रमण का वणन इस गसा म है। यह ६८ पद्या की एक छाती मी कृति है जिसका रचयिता महातमा (मथण) जानि का जागीलाम था।

(४) क्याम रासा या रामा अलफखा का

इसका नाम अलफखा का रासो है पर यह क्याम रासा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें राजस्थान के फतहपुर (गखावाती) के क्यामखानी नवाब अलफखा के पराक्रमो का वणन है। प्रस्तावना रूप म क्यामखानी नवाब का वृत्तांत आरम्भ से दिया गया है। परिशिष्ट रूप म अलफखा के वराजो का वणन भी है। इसरी रचना म १६६१ म हुई पर परिशिष्ट भाग स १७११ म समाप्त हुआ।^६

क्याम रासा का रचयिता क्यामखानी था जो अलफखा का द्वितीय पुत्र था। उसका उपनाम जान कवि था। जान हिया का एक वस्त बडा प्रतिभागाती कवि हुआ है। उसन लगभग ८० ग्रन्थो का रचना की जिनम म अधिकांश प्रेमाख्यानक है। क्यामखानी का मूलत चौहान था। जान न अपन चौहान

^१ (क) अजरकन्द नाट्य वीरगाथा काल की रचनाआ पर विचार।

(ख) मोतीनाथ भेनारिया राजस्थानी भाषा जीर साहित्य पृष्ठ ८३ ८४।

^२ बिनाल भारत के अक्टूबर सन १६३८ के जग भ कुवर महोद्वपालसिंह १ महाराज विजपाल और उनका गयसा नामक लेख प्रकाशित करवाया था। उसमें हम गसो के मम १२ पद्य (३ बहिन और १० मानता छत्र) भी लिये गये हैं जो मुसिफ दवाप्रसाद का प्राप्त हुए अंग म नये हैं।

^३ इसकी ११ प्रतिया बाकानर के जन्प मस्कृत पुस्तकालय म हैं। टसीटारी न रचनाकार म १७६६ अनुभित किया है क्याकि एक प्रति ममा वप की माघ मुत्तो ५ की तिथि हुई है।

^४ यह ग्रन्थ अजरकन्द नाट्य द्वारा संपादित होकर जायपुर के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान म प्रकाशित हुआ है।

द्वितीय होने का खड़े गव वं साथ उल्लेख किया है। पतहपुर का यह कयामखानी राजवंश अपना धार्मिक उन्नतता के लिए प्रसिद्ध रहा है। हिंदी की सुप्रसिद्ध कृष्ण भक्त कवयित्री ताज जान कवि के परदादा ताजखा द्वितीय की सहाय्य थी।^१ उसका विवाह अकबर के साथ हुआ था।

कयाम रसाला की भाषा साधारणतया राजभाषा है। उसमें दोहा छंद का ही विशेष प्रयोग हुआ है यद्यपि मनहरण कवित्त सबया चौपाई छप्पय अधभुजगी, नागव आदि भी बीच-बीच में जाये हैं। ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा मूल्यवान है। प्रारम्भ के भाग में जिसमें प्राचीन इतिहास आया है, दत्तक्याओ और जनश्रुतिया की प्रधानता है पर पिछला भाग ऐतिहासिक है और मध्य कालीन भारत तथा राजस्थान के अधकाराच्छ न इतिहास पर बहुत महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

(५) रतन-रामो

रतन रामा में रतनसिंह राठौड़ का चरित्र वर्णित है।^२ यह रतनसिंह जोधपुर के राजा उदयसिंह के पुत्र महेंद्रदास राठौड़ का पुत्र था और उज्जैन के पाम धरमत में जसवन्तसिंह और औरंगजेब के बीच में जा युद्ध हुआ था उसमें लड़कर मारा गया था। उसके वंशज न मध्य भारत में रतनाम सन्तान और सीतामऊ के राज्य स्थापित किये थे।

रतन रामो का रचयिता कुम्हारण सादू रयाप का चारण था। वह रतनसिंह का समकालीन था और उसके पुत्र रामसिंह के समय में उसने इस ग्रंथ की रचना की थी। रचनाकाल में १७३० और १७४८ के बीच में अनुमान किया गया है।

यह पृथ्वीराज रामो की भांति विविध छंदों में लिखा गया है। इसमें चार अध्याय हैं—

(१) प्रस्तावना।

(२) राव गंगा में महेंद्रदास तक रतनसिंह के पूर्वजों के पराक्रम का वर्णन।

(३) रतनसिंह के पराक्रम का वर्णन।

(४) उज्जैन समय—उज्जैन के युद्ध और रतनसिंह की मृत्यु का वर्णन।

यह आन्वय की बात है कि रामा की प्राण्य सीता प्रतिया में इन अध्यायों

^१ भारतमन्त्रण रामा कायमखानी नवाब अकबरों (राजस्थानी भाग ३ अंक ४, पृष्ठ २८)।

^२ इस ग्रंथ का संपादन महाराजकुमार पृथ्वीराजसिंह के निर्देशानुसार पण्डित काशीराम रामा नाम के गार्हियरन ने किया है।

की सग्या प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ के स्थान पर तृतीय चतुर्थ, पंचम और षष्ठ भी हुई है।^१

इसी विषय को लेकर विविधिया गायका के चारण जग्गा ने राजस्थानी भाषा में रत्न महेश्वरामोत की वचनिका नामक चम्पू-ग्रन्थ की रचना की थी।^२ यह जग्गा उज्जवा बाल युद्ध में स्वयं उपस्थित था। वचनिका और रासो के ऐतिहासिक वर्णन एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। फलतः इन दोनों ग्रन्थों का ऐतिहासिक मूल्य बहुत बड़ा है।

(६) राणा-रासो^३

राणा रासो में मवाड के राणा-वंग या इतिहास वर्णित है। इसका लेखक दयाल या जो संभवतः मवाड निवासी ब्रह्मभट्ट (राज) था। उसका पूरा नाम दयालनाथ था। इस ग्रन्थ की सं १६८८ की तिथि हुई एक प्रति मिली है जिसमें लिखा है कि वह सं १६७५ की प्रति की नकल है। पर यह तथ्य ठीक नहीं क्योंकि इस काव्य में महाराणा जयसिंह (सं १६७६-१६८८) का विस्तृत वर्णन दिया हुआ है और महाराणा जयसिंह राजसिंह तथा जयसिंह (सं १७३७-१७५५) के नामों का भी उल्लेख है जो सभी सं १६७५ के पश्चात् हुए हैं। इसलिए अनुमान होता है कि ग्रन्थ का निर्माण महाराजा जयसिंह के राज्यकाल में अठारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।^४

राणा रासो की रचना चारण भाटा की प्रभावदाय रक्ति पर हुई है। कल्पना अलौकिकता अतिशयोक्ति और अनतिहासिकता का मनोमय

^१ श्री वाणीराम गर्मा रत्नरासो के रचयिता का वंग-परिचय (राजस्थान भारती भाग ३ अंक ३४)

^२ इस ग्रन्थ का डाक्टर एल पी टसीटोरी ने संपादन करके बंगाल एजियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित कराया था। श्री वाणीराम गर्मा ने भी हाल में ही इसका संपादन किया है।

^३ (क) मालीनाथ मनारिया राजस्थान में हिंदी के हरतलिखित ग्रन्थों की श्रेणी भाग १ पृष्ठ ११८-११९।

(ख)—बही— राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १७२।

^४ सं १६४४ का यह प्रति पृथ्वीराज रासा के समयमें सुप्रसिद्ध ५० साहस्रनामाल विष्णुनाथ पंड्या ने तयार कराया था। पंडिन जी द्वारा खोजी हुई तथा प्रसिद्ध की हुई कुछ अज्ञात राजाओं की इसी प्रकार सन्धि अथवा जानी सिद्ध हुई है। सं १६७५ की प्रति का उल्लेख भी हमारी समझ में निराधार है और पृथ्वीराज रासा की प्रामाणिकता तथा प्राचीनता सिद्ध करने के लिए किया गया है।

पाया जाता है, विंगपत प्रारम्भ क भाग म । असम पद्यो की मख्या ८०० क लगभग है ।

(७) हम्मीर रामो^१

इसम रणधभौर क प्रसिद्ध चौहान-नरेश हम्मीर का चरित्र वर्णित है । इसका लेखक जाधराज अत्रिगोत्राय आदि गौड ब्राह्मण था । उसकी उपाधि डिडवरिया राव थी ।^२ उसने नामराणा के चौहान राजा चन्द्रभानु की प्रेरणा से स १८८५ म इस रामा की रचना की । आरम्भ म चौहान वग और हम्मीर क पूवजा का भी संक्षेप म वर्णन है । मुख्य कथा हम्मीर और अलाउद्दौल विलजी के युद्ध की है जिसम हम्मीर मारा जाना है ।

इस काव्य म लगभग ११०० पद्य हैं । कथा म कल्पना का मन बहुत अधिक है । प्राय सभी घटनाओं का वर्णन इतिहास क विरुद्ध पठना है । फलत इसका इतिहासिक मूल्य कुछ भी नहीं है । कविता की दृष्टि से भी सामान्य पाठि की रचना है ।

(८) करहिया कौ रायसो^३

इसम करहिया के युद्ध का वर्णन है जा भरतपुर क जाट राजा जवाहरसिंह और करहिया क परमारों के बीच म स १८०४ म हुआ था । इसका कर्ता गुलाब कवि माधुर चतुर्वेदी ब्राह्मण था । उसने यह युद्ध अपनी आत्मा म रचा था । यह गयसो ६५ पद्या की एक छाटी-मी रचना है जिसम दाहा माग्ठा छण्य पद्धति मोतीनाम नगररूपी (नाटक) भुजगा (भुजगप्रयात) हतूपान छटा क साथ साथ मनहरण कवित्त और मरया छटा का पर्याय भी रचा है । कविता का दृष्टि म साधारण रचना है ।

(९) नावा-रामा^४

इसका दूसरा नाम वूम-यस प्रवाण है । इसम नावा लखाना जार उणियारा क मरका सग्यारों के एक अमीरगों और उसक पुत्र क साथ हुए युद्ध का वर्णन है । इसका कर्ता कविया नावा का चरण गापाळ्यान था जिसने राजस्थानी भाषा म भा गिबर्-बगोत्ति नामक मुख्य इतिहासिक कृति लिखी ।

^१ यह रामो स्वामभु-दग्दाम द्वारा मपात्ति नावर रामो की नागरा प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है ।

^२ इस उपाधि म जाधराज का भाट (ब्रह्मभट्ट) जाना पाया जाना ह । ब्रह्मभट्ट भी ब्राह्मण ही थ ।

^३ नागरी प्रचारिणी परिषद नाग १० और वाणानन्द-समाज ग्रन्थ म प्रकाशित ।

^४ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जाधपुर द्वारा प्रकाशित ।

राजा गमा में विविध छन्दों के अतिरिक्त श्वावत नाम में तुकांत गद्य का प्रयोग भी आता है जिसका भाषा महाकाव्य है। महाकाव्य में गमा का रचना काल में १८२६ और १८०० के बीच में अनुमान किया है।

कविता की दृष्टि में माघाण रचना है पर वर्णित घटनाओं की लगभग समसामयिक रचना इनमें इतिहास की दृष्टि में मुख्यत्व है।

(ख) राजस्थानी भाषा के रासो काव्य

गमा लिखन का प्रयास मभवत अरुभाषा (पिण्ड) में ही आरम्भ हुआ। पर राजस्थानी में भी जनक गमा लिख गया। इनमें सबसे प्राचीन जयमा गे गमा और सबसे बड़ा सुम्मान गमा है जिसमें राजा के इतिहास-वर्णन का हिन्दी का सर्वप्रथम रचना मानने का भूत है।

(१) राउ जतमी गे गनी

इसका भी प्रतियाँ वाकान्त के अभय-जन-ग्रथ अष्टादश में है। यह २० दूरी ७६ मानीयाम और १ कविता—अप्रकार कुत्र ८७ छन्दों का छान्दोमी आज स्थितो रचना है। अथवा वाकान्त पर किया गया वाकान्त के आश्रयण और राजा जतमी का वीरता का वर्णन है। रचयिता और रचनाकार जना ही जानते हैं पर रचना वर्णित घटना की सम-सामयिक जान पत्नी है। अथवा घटना में सबदों का और सम-सामयिक रचनाओं राउ जतमा गे अथ नाम में प्राप्त हुई है। इस गमा का भाषा गनी आदि अथ अथवा में मिलती है।

(२) गम-गामो

गम गमा में गम-कथा का वर्णन है। अथवा रचयिता माघाणम अथ वाकिया गामा का चरण था। अथ पिता का नाम चण था। कहा जाता है कि उसका जन्म आधपुर गाँव के बरत गाँव में हुआ था। उसका समय में १ १० और १ ८० के बीच में अनुमान किया जाता है। उसका विषय में गनी पृथ्वीराज का कहा हुआ यह दूरी प्रसिद्ध है—

चण चणभूज मविषी तन-फल गामो ताम।

चरण जीवो चण जुग मगे न मागोसल ॥

माघाणम का तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं (१) गम गमा (२) गम स्व-अथ। और (३) गम-नाथ। गम गमा में १२०० के लगभग छन्द हैं। उसकी कविता बहुत उत्कृष्ट है। राजस्थानी साहित्य में यह रचना बरत अथ का दृष्टि में दधी जाता है।

(३) मन्साल-रामो^१

इसमें बूनी के चौहान-नरग मन्साल (द्युतशान) का चरित्र वर्णित है। इसका कर्ता बूनी राज्य का निवासी डगरमी था जो जाति का राव था ब्रह्मभट्ट था। श्री मनारिया ने इसका रचना काल से १७१० के लगभग बताया है। इस ग्रंथ में ५०० पद्य हैं। कविता अच्छी है।

(४) सगतमिध रामा^२

इसमें महाराणा प्रताप के छोट भाई सगतमिध (गजमिह) का चरित्र वर्णित किया गया है। इसमें ८०० के लगभग पद्य हैं। काव्य दृष्टि से यह सुन्दर रचना है। इसका रचना आशिया गंगा के चारण गिरधर ने से १७२८ के लगभग की थी।

(५) खुम्माण रामा^३

इस काव्य में मवाड के महाराणाओं का वर्णन है। बाप्या में आठवी पीढ़ी में ज्ञान काल कण-सुत खुम्माण का चरित्र बहुत विस्तार में वर्णित किया गया है। संभवतः इसी कारण इसका नाम खुम्माण रामा रखा गया है (जिस खुम्माण के वंश में उत्पन्न ज्ञान से मवाड के सभी महाराणाओं का खुम्माण विष्णु है)। महाराणा राजमिह तब पट्टाचक्र ग्रंथ सज्जित हुआ जाता है। अध्याय ८ के अंत में दिया गया दाह में प्रतीत होता है कि ग्रंथ की रचना महाराणा सगरामिह द्वितीय के शासन-काल (से १७६७-१७६०) में हुई थी।

खुम्माण रामा का लक्ष्य जन माधु दीनतविजय उपनाम दलपति था। ग्रंथ के द्वितीय तृतीय और चतुर्थ खंडों की प्रगति में उसने अपना मंगल परिचय दिया है जिसमें ज्ञान है कि वह तपोगच्छीय सुमतिमाधु की गिष्य परम्परा में पद्मविजय के गिष्य जयविजय के गिष्य शान्तिविजय का गिष्य था। शान्तिविजय की लिपि की हुई ११ पुस्तकें मिली हैं जिनका लिपिकार से १७३३ और से १७५१ है। इसका श्रवण हुआ दीनतविजय का समय अष्टादशवा गनाओं का उत्तरार्ध माना जा सकता है। खुम्माण रामा की रचना उमर में १७७५ के आसपास या इसी।

१. माताशान मनारिया राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १५८।

२. वही, पृष्ठ १६०।

३. इसका एक सचिव प्रति पूना के भाग्यकर आग्विष्टन गिष्य इम्पीर्यूट के महार में है। आठवाणवद्र प्राणिय ने इसका मन्साल किया है तथा इस पर पाप प्रबंध लिखा है।

उपलब्ध प्रति के अनुसार खुम्माण रासो में आठ खंड हैं जिनमें आठवाँ खण्डित है। खंडों में आय हुए विषयों का विवरण इस प्रकार है—

खंड १—वाण्या रावळ अधिकार। वाण्या में खुम्माण तक आठ पीढ़ियाँ हुई।

खंड २—खुम्माण चरित्र रतिमदरी अभिग्रह करण चित्र कारिका चरित्र रमण, राजकुआरि पाणिग्रहण, पंच सहेली चित्रगण मिलण।

खंड ३—रावळ करण तनुज खुम्माण चरित्र दपति सवाल पंच सहेली आम्बटक नसवर गण समन तारवागृह तिनान्तम जागमण धीगा गवरी पुनरपि तन्न मृत मजीवन एवन मिलण सामत वनिमाट नायक भाव नवरम विलास।

खंड ४—महेमा मोवन पुन प्रिय तन्न चित्रगण जागमन गजनीपति महमद पातमाह चित्रगण जागमन सामत जुध करण सामत नायक जुध करण। पातमाह गुप्त माचन वानत वगामाट रतिमुत्तरी दवळद इत्यादि चरित्र।

खंड ५—खुम्माण सतान राहण अधिकार जालणसी रावळ अधिकार, समरमा रावळ अधिकार।

खंड ६—राणा रतनसन पत्न्या गाग वाळ सबव।

खंड ७—रतनसन क आग क राणाओ वा वणन।

खंड ८—सम राजमिह क राजसमुद्र वधान की तयारी तक का वान आया है। इस खंड क ७६ व पद्य के तीसरे चरण पर पद्य खंडित हो जाता है।

ग्रंथ का अधिकांश भाग ऐतिहासिक दृष्टि से कोई मूल्य नहीं रखता। वाण्यापयागी कार्यात्मिक घटनाओं और अनौकिक तत्त्वों की संवत् भरमार है। साहित्यिक दृष्टि से कविता सुन्दर है।

(ग) रासो शली की अन्य रचनाएँ

इन रासों नाम वाला कृतियाँ क अनिर्दिष्ट कुद्ध और भी कृतियाँ हैं जिनका नाम यद्यपि रासो नहीं है फिर भी जो रासा शली का ही रचनाएँ हैं। नाम क अनिर्दिष्ट रासा काया का अन्य सभी विशेषताएँ उनमें मिलती हैं। इनमें से अधिकांश राजस्थान में ही लिखी गयी हैं और विभिन्न राजाओं या वीरों के युद्धों पर प्रशंसा या वणन करता हैं। कुद्ध उल्लम्बनीय कृतियाँ क नाम इस प्रकार हैं—

- (१) श्रीमत् कृत रणमन्त्र
- (२) महाशक्ति वाणेशम कृत रतन-वावती
- (३) जन यति मानसिंह कृत राजविलास
- (४) हरिनाभ कृत वनरामिह समर
- (५) मूल कृत मुजान चरित्र
- (६) चंद्राखर कृत हम्मीर-हठ

(७) धीधर या मुरलीधर कृत जगनामा

(८) सूरजमल भीसण कृत वसभास्वर

इनमें प्रथम का छांडकर बाकी सभी व्रजभाषा का रचनाएँ हैं वस-भास्वर में स्थान-स्थान पर संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश और राजस्थानी (डिंगल) का भी प्रयोग हुआ है। रामो की सी भाषा-शली तुलसीदास की कविनावली एवं रामचरितमानस के लकाकांड तथा भूषण के गिजराज-भूषण के कई एक युद्ध-वर्णन के पद्यों में भी लियायी पड़ती है। श्री धीरेन्द्र वर्मा के शब्दों में इस गाला का प्रयोग एसा अवसरा पर मध्य-युग के कवियों ने बराबर किया है और आज तक यह परम्परा चल रही है।^१

टिप्पणी—ऊपर व्रजभाषा और राजस्थानी के प्रमुख रामो ग्रंथा का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस परिचय के लिख जाने के पश्चात् कुछ और भी छोटे मोटे रामो ग्रंथा के नाम ज्ञात हुए हैं उदाहरणार्थ महेश कृत हम्मीर रासा, सदानंद कृत भगवतसिंह का रासा आधर रचित पारीछत रायसा इत्यादि।

इनमें महेश कृत हम्मीर रामो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसमें २४३ पद्य हैं। उसकी रचना महेश कवि ने स० १८२३ के पूर्व की थी (रासा की हस्तलिखित प्रति स० १८२३ की प्राप्त हुई है)। जोधराज के हम्मीर रासो (रचनाकाल १८८५) पर उसका बहुत प्रभाव दिखायी पड़ता है। दोनों के अनेक पदधा के चरण हूबहू मिलते जुलते हैं। जहाँ चरण हूबहू मिलते-जुलते नहीं हैं वहाँ भी गालावली बहुत कुछ मिलती-जुलती है और ऐसा जान पड़ता है मानो एक ने दूसरे का छाँदातर मात्र किया है।

^१ अर्थात् युद्ध के।

^२ धीरेन्द्र वर्मा रामो की भाषा पर विचार (साहित्यमंदिर, भाग ३ अंक ६, जून, १९४४ पृष्ठ ७६)।

(घ) परिशिष्ट—वीसछदे-रास

१ कता

वीसछदे रास का वर्त्तन नरपति नारह था। रास म कई स्थानो पर उसने अपना नाम लिया है वही नरपति वहां नाह और वहां नल्ह ववामर। रास चद्र गुवन ने उस भाग बताया है पर रास म उम जाइसी (या व्यास) कहा गया है^१ जिमस यह ब्राह्मण जान पन्ना है। था मातीनाल मनागिया यास जानि का सवग या भाजय जाति का पर्याय मानत है पर रासस्थान म व्यास ता एक आस्पन् है जा सभी ब्राह्मण जातिया म पाया जाता है।

२ रूपांतर

वीसछदेरास के दो रूपांतर मिलत ह जिनम स एक खडा म विभाजित है और दूसरा सळय या खडा म अविभाजित। अविभाजित रूपांतर के भी तीन अलग-अलग सस्करण मिलत हैं। जिनको छटाटा मध्यम और बडा नाम लिय जा सकत है। विभाजित रूपांतर की दो ही प्रतिया लेखने म जायी हैं पर अविभाजित रूपांतर की कई दजन प्रतिया उपलब्ध हो चुकी है। सबसे अधिक प्रतिया मध्यम सस्करण की मिली हैं।

विभाजित रूपांतर म चार खड हैं। उमकी पद्य मख्या एक प्रति के अनुसार ७७ + ७९ + १०२ + ४१ = २९९ और दूसरी प्रति के अनुमां ८६ + ८६ + १०३ + ४२ = ३१७ हाती है। अविभाजित रूपांतर की पद्य-मख्या इस प्रकार है—

(१) लघु सस्करण २०० म २११

(२) मध्यम सस्करण २८० म २६४

(३) बडा सस्करण २७८ म २११।

चारा रूपांतरा म लघु रूपांतर प्राचान और मूल वृत्ति के अतिव निवट और प्रामाणिक जान पडता है।

दोना रूपांतरा की प्रमुख भिन्नताए इस प्रकार है—

(१) विभाजित रूपांतर के चौथे खड का क्या अविभाजित रूपांतर म नहा है अर्थात् जग विभाजित रूपांतर का तीसरा खड समाप्त हुना है वहां अविभाजित रूपांतर समाप्त हो जाता है।

^१ अविभाजित रूपांतर म जाइसी और विभाजित रूपांतर म व्यास।

- (२) विभाजित रूपांतर में कवि का आस्पन्द्य दिया गया है पर अविभाजित रूपांतर में जाइमी (जागी) ।
- (३) विभाजित रूपांतर में ग्रथक रचना-संकेत का सूचक पद्य आरम्भ में आता है पर अविभाजित रूपांतर में अंत में ।
- (४) विभाजित रूपांतर की प्रतियां मन्वनाकाल तरहवा गतांती (स १२१२ या १२७२) दिया गया है पर अविभाजित रूपांतर की प्रतियां मन्वनाकाल गतांती (स १०७३ या १०७७) । इस रूपांतर के अनेक संस्करण की कुछ प्रतियां मन्वनाकाल चौदहवीं शताब्दी (स १३०७) दिया हुआ है । छांट संस्करण की प्रतियां मन्वना संकेत बाना पद्य नहीं पाया जाता ।
- (५) विभाजित रूपांतर में विवाह प्रसंग का वंशत अविभाजित रूपांतर की अपेक्षा अधिक विस्तृत है ।
- (६) विभाजित रूपांतर की प्रस्तावना भी अविभाजित रूपांतर की प्रस्तावना से विस्तृत है । उसमें यह भी बताया गया है कि गम किम प्रकार गाया जाता था ।
- (७) विभाजित रूपांतर में वीमल उन्नीसा जाकर वहां के राजा का प्रधान (मनी) बन जाता है । अविभाजित रूपांतर के मन्वित संस्करण में यह प्रसंग नहीं है । इस रूपांतर के मध्यम और बड़े संस्करणों के अनुसार वीमल उन्नीसा जाकर वहां के प्रधान से मित्रता है प्रधान उस मनी के पास ल जाता है और गना उस मनी बनाकर अपने यहाँ रख लेती है तथा उसका गम की व्यवस्था बांध देती है ।
- (८) विभाजित रूपांतर में पाठ उन्नीसा जाकर वासुदेव का पता स्वयं लगाता है और उस पत्र देता है । छोटे संस्करण में उन्नीसा का गजा उससे कहता है कि हमारा यहाँ एक प्रधान ही पत्नी से विरहित है । मध्यम और बड़े संस्करणों में गजा का पाठ की बात पर आश्चर्य होता है और वह वीमल देव का पता लगाने का प्रयत्न करता है । पता लगाने पर वह उस राजसभा में बुलाता है और पाठ से कहता है कि तुम अपने गजा को स्वयं पहचान लो ।
- (९) विभाजित रूपांतर में निम्नलिखित बातें अविभाजित रूपांतर की अपेक्षा अधिक हैं—
- १ राजा भाज का पुत्राग्नि का राजसभा का वंश वंश के लिए भजना, पुत्राग्नि का मधुराग्नि मन्वराग्नि तिली-मदन अयाध्या टोला जगदमर जाति स्थाना में जाना, तथा अन्न में अजमर के वासुदेव का पसन्द करना ।

- २ बगन व जीमन का वणन ।
 ३ साम्हल्ल क समय सामन जान वाते राजकुमारा सरलारा उनक घाडा
 जोर राजवणा क नाम ।
 ४ विवाह म वाम वरन वान माध कारिनाम आलि पडिता क नाम ।
 ५ चौथ फरे म वीसल्लव का चित्तौड का मागना ।
 ६ अजमर लौट जान पर अजमर नगर तथा जाना सागर तालाब की
 गोभा जीर राजा रानो क विलास का वणन ।
 ७ वीसल्लव क प्रवाम म जान समय माथ जान वाल मन्तारो तथा उनके
 घाडा क नाम ।
 ८ वीसल्लव क प्रवाम म जान समय उमकी मा बहन आदि सबधिया
 का दुखो हाना ।
 ९ वीसल्लव क प्रवाम म जात समय हान वान गनुना का वणन ।
 (१०) अविभाजित रूपांतर म प्रवाम क पूव राजा रानो का सवाल तथा प्रवाम
 क पश्चात रानी और पाठ का सवाल विभाजित रूपांतर की अपेक्षा
 अधिक विस्तृत हैं ।
 (११) अविभाजित रूपांतर क बड सस्वरण के वणन विभाजित रूपांतर की
 अपेक्षा प्राय विस्तृत हैं ।

३ प्रतिया^१

- (क) विभाजित रूपांतर की प्रतिया—
 (१) अभय जन ग्रंथ भंडार (बीकानर) की प्रति न० १—इसका लिपि
 वान स १६६६ दिया हुआ है । पद्य-संख्या ८४ + ८६ + १०३ +
 ४२ = ३१५ है । यह गुणकारी है ।
 (२) अभय जन ग्रंथ भंडार (बीकानर) की प्रति न० २—लिपि-वान
 स १७२४ । पद्य-संख्या—७७ + ७६ + १०२ + ४१ = २९६ ।
 यह खुल पत्रा का प्रति है ।^२
 (ख) व सस्वरण की प्रतियां—
 (१) अभय जन ग्रंथानय (जीमनर) की प्रति न० ३—पद्य संख्या ३१० ।
 लिपिदान नहा दि गनी जालि स प्रति मन्मे प्राचीन जान
 डती है ।

१ आ अगच्छ

२ मामग्री क र

- (२) खरतरगच्छ भंडार (कोटा) की प्रति—पद्य-संख्या ३१० । लिपि-काल नहा है । इसका प्रतिलिपि अभय-जन ग्रन्थालय में प्राप्य है ।
- (३) अनन्तनाथ भंडार (वम्बई) की प्रति—पद्य-संख्या ३०६ । लिपि-काल १७६३ ।
- (४) मोनीचंद खानची सग्रह (बाबानर) की प्रति—पद्य-संख्या २८४ ।
- (५) बडा भंडार (जमलमर) की प्रति—पद्य-संख्या २८३ ।
- (६) गाननाथ भंडार (बडा उपासग बाबानर का प्रति)—पद्य-संख्या २८० ।
- (७) जिनचारिनमूर्ति-सग्रह की प्रति—पद्य-संख्या २७८ की हुई है पर वास्तव में २८३ है । इसका प्रतिलिपि हमारे सग्रह में विद्यमान है । मध्यम संस्करण की प्रतिया—दूसरे संस्करण का सत्रम अधिन प्रतिया प्राप्त हुई है—
- (१) फूतचक्र भावक-सग्रह (फर्गुषी) की प्रति न० २—लिपि-काल १६३३ । पद्य-संख्या २४६ । सबत क उरुप वाली यह सत्रम प्राचीन उपनयन प्रति है ।
- (२) भावदर्पण-अरतर गच्छ भंडार (बाबानरा) का प्रति—लिपि-काल १६८१ । पद्य-संख्या २६८ ।
- (३) वृद्धिचक्र-सग्रह (बाबानर) की प्रति—लिपि काल १७२२ । पद्य-संख्या २६२ ।
- (४) अभय-जन ग्रन्थालय (बीबानर) का प्रति न० ८—लिपि-काल १७३७ । पद्य-संख्या २४८ ।
- (५) अनूप-सम्भृत पुस्तकानय (बीबानर) की प्रति—लिपि-काल १७४२ । पद्य-संख्या २४१ ।
- (६) थोरियन्त-कानज-नादरेगी (बडौंग) की प्रति—लिपि-काल १७४३ । पद्य-संख्या २६४ ।
- (७) अभय-जन-ग्रन्थालय (बीबानर) की प्रति न० १—लिपि-काल १७५१ । पद्य संख्या २४८ ।
- (८) जयचक्र भंडार (बाबानर) की प्रति—लिपि-काल १७५८ ।
- (९) गगनर-आचाय गायना भंडार (बाबानर) की प्रति—लिपि-काल १७७३ ।
- (१०) जनाचाय विजयधममूर्ति-सग्रह की प्रति—लिपि-काल १७७१ । कानरते का बगाल एगिपाटिक मामान्ता में ।

(११) बंगाल गणित्याटिक मामाली (वाराणसी) की प्रति—ऊपर की स १७७५ की प्रति की प्रतिनिधि ।

(१२) कृपाचन्द्रमूरि जानभार (वीरानर) का प्रति—लिपि-वाल १७८६ पद्य सख्या २४० ।

(घ) छोट सस्करण का प्रतिया —

(१) वृत्त गा नडार (व्या उपासग वीरानर) की प्रति—लिपिवाल १६८१ । पद्य सख्या २०० नी गया है पर गणना करन म २११ हाना है । गुटवानर ।

(२) अमय जन ग्रथ भार वीरानर की प्रति न० ६ - पद्य-सख्या २०२ । लिपिवाल नया लिया है ।

(३) जिनभार-मूरि भार (जसगर) की प्रति—पद्य सख्या २०२ । लिपिवाल नही लिया ह ।

एक अतिरिक्त और जादा प्रतिया गजस्यान र इन्तलिपिन ग्रथा व भारग म मिलनी ह । वीरानर व अमय जन ग्रथावय म और कइ एक पूण तथा अपूण प्रतिया मगही ह ।

८ रचनावाल

अविभाजित रूपानर व छांटे सस्करण का प्रतिया म राम का रचनावाल नही दिया गया है । बाकी प्रतिया म विभिन्न रचनावाल दिम हुए है ।

(क) विभाजित रूपानर की प्रतिया म —

(१) सवत वार वारानर (१२१२) मभारि ।

जेठ वनी नवमी बुधवार ॥ (१७२४ की प्रति म)

(२) वारह म बहोतरगहा (१२७२) मभारि ।

जुष्ट वनी नवमी बुधवार ॥ (१६६६ की प्रति म)

(ख) अविभाजित रूपानर व वं सस्करण की तान प्रतिया म —

(१) सवत तर सतातर (१३०७) गाणि ।

मुव पचमी न थावण मास ॥

हुन नथग्र रविवार मू ।

मुभ न्नि जोमी र जोडियउ रास ॥

(ग) वं सस्करण की बाकी प्रतिया म और मध्यम सस्करण की प्रतियो म—

(१) सवत सहस सनिहतर (१०७७) गाणि ।

मुनल पचमी थावणि मास ॥

रोहिणि नक्षत्र सोहामणउ ।

मुभ न्नि जाडियउ जोमियउ रास ॥

(२) सवत सहस तिहुतरइ (१०७३) जाणि ।

सुकुल पचमो श्रावणि मास ॥

रोहिणि नश्वर साहामणउ ।

॥

रास का रचनाकाल गौरीसवर हीराचर आभा और श्यामसुन्दरदास स १२७२ रामचन्द्र गुवल और सत्यजीवा वमा स १२१२ और रामकुमार वमा स १०७३ मानत ह ।^१ सोलहवी गताब्दी म गुजरान म नरपति नाम का एक कवि हुआ है । श्री मोतीलाल मनारिया उमे ही बीसठ्ठे रास का कर्ता मानत है और रास का रचनाकाल स १५४५ ६० के आसपाम ठहरात है ।^२ उनकी यह मायता हम ठीक नही जान पडती । गुजरात वाला नरपति अपन को न तो वही नाह लिखता है और न व्यास या जान्नी ।

हमारी सम्मति म बीसठ्ठे रास का मूल रूप प्राचीन है । उसका रचना काल तरहवी गताब्दी का अंत या चौदहवी का आरम्भ माना जा सकता है । यह कहन की आवश्यकता नही कि रास क गय-बाय होन के कारण उसके रूप और आवार म परिवर्तन होता रहा है । छटा सस्वरण अपभावृत मूल के निकट है । छटा सस्वरण म रचना-मवत-मूचक पद्य नही पाया जाता । बडे सस्वरणा क मवत सूचन पद्य हमारी समझ म पीछे स जाये हुए है ।

५ भाषा

बीसठ्ठे रास का भाषा शुद्ध राजस्थानी है ।^३ अवय ही वह तरहवी या चौदहवी गताब्दी की नही पर उमम बहुत दूर भी नही है । जमा कि उपर

^१ गौ ही आभा बीसठ्ठे रास का निर्माणकाल (ना प्र पत्रिका भाग ४/ अ २ पृष्ठ १७१) ।

श्यामसुन्दरदास हिन्दी साहित्य उदासस्वरण (म २००६) पृष्ठ १०४ ।
रामचन्द्र गुवल हिन्दी साहित्य का इतिहास (म १९६६ का सस्वरण)
पृष्ठ ३६ ।

रामकुमार वमा हिन्दी साहित्य का जानाबनामक इतिहास द्वितीय
सस्वरण, पृष्ठ २१० ।

^२ माताजी मनारिया राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ८८ ८६ ।

^३ (क) श्री रामचन्द्र गुवल लिखत हैं—'म ग्रन्थ म एत वान का आभास अवय मितता है । वह यह कि लिपि काय भाषा म ब्रज और राजस्थानी के प्राचीन रूप का ही राजस्थान म भी व्यवहार जाता था । साहित्य की सामान्य भाषा हिन्दी हा था । बीसठ्ठे रास म बीच-बीच म बराबर म साहित्य भाषा (हिन्दी) का मिश्रण का प्रयत्न कियागो पडता है । ध्यान दन की पडती बात है राजपूताना क एत भाषा का अपना

वीसवन्देव के विरह में रानी विलाप करना है और रगियाँ ममभाना हैं।
 कवि रानी के बारह मामा के दुःख का वणन करता है। स्तन में एक बुनिया
 दूती उनके पास जाती है और कहता है कि जब तक वीसवन्देव नहीं चोखता
 तब तक क लिए मैं दूसरा सुन्दर पुष्प बनाती हूँ। राजमती उस पित्रावर
 निवलवा दनी है। इस प्रकार ग्यारह वष बीत जाते हैं। बारहवें वष में राज
 मती पाए का पत्र देकर उड़ीसा भ्रजनी है। वह सात महीना में वहा पहुँचता है
 और वीसवन्देव को सदेव दता है। वासवन्देव उड़ीसा के राजा को जाना लेकर
 लौटने की तयारी करता है। राजा और रानी स्तना उन नाना प्रकार की भू
 देते हैं। चलने के बाद राजा एक जागी का अजमर भ्रजना है कि वह राजमती
 को उसने जान का समाचार दे दे। फिर वीसवन्देव चोख आता है और राज
 मती में मिलता है।

जबिभ्रजित रूपांतर की क्या यहा समाप्त हो जाती है। विभ्रजित
 रूपांतर में इतना क्या जयि है— वीसवन्देव लौटने पर अपने लौट आने का
 समाचार भोज के पास भ्रजता है। भाज वीसवन्देव में मिलते अजमर जाता है
 और चोखने समय राजमती का साथ ले जाता है। कुछ समय के पश्चात् वासल
 देव घर जाता है और राजमती का लेकर चोख जाता है। राजा और रानी
 के मिलने के साथ क्या की समाप्ति हाती है।

७ ऐतिहासिकता

वीसवन्देव नाम एक गीत काय है। उसमें ऐतिहासिक तत्व स्तना उचित न
 हागा। राम का मुग्य उद्देश्य एक प्रेम-कथा का बन्ना है। लमी प्रेमकथाओं में
 प्रायः किसी प्रसिद्ध राजा का नाम जाना जाता है। नरपति नाहू सभनत
 अजमेर का रहने वाला था। अजमेर में वासवन्देव का नाम बन्ने प्रसिद्ध था।
 नरपति ने उमा राजा का लेकर एक प्रेम-कथा बन्नी कर ना। राजा के और
 सभवत रानी के नाम के सिवाय काव्य में कोई ऐतिहासिक तत्व नहीं है।

साभर में चौहानों का राज्य बहुत प्राचीन काल में चला आ रहा था।
 वीसवन्देव का जन्म इसी राजवंश में हुआ। स्तन वष की राजधानी पहले साभर
 में थी। अजमेर राज ने अजमेर बसाया तब से अजमेर में राजधाना हुई।
 अजमेर राज का पुत्र अणोराज स्तना जिनमें अजमेर में जाना सागर का निर्माण
 कराया।

साभर अजमेर के इस चौहान राजवंश में वीसवन्देव नामक दो राजा हुए।
 प्रथम वीसवन्देव (विग्रहगज तृतीय) का समय में ११३० के लगभग और दूसरे
 वीसवन्देव (अर्थात् विग्रहगज चतुर्थ) का समय में १२१० में १२२१ तक था।
 इन दोनों में से कोई धार के राजा भाज का समकालीन नहीं था। प्रथम वीसवन्देव

का मन्त्र धार से अवश्य था। उमन धार के राजा उदयादित्य की, जो भोज का द्याग भाई था और जपन भतीने के पदचाल धार के सिंहासन पर बठा था सनिक सहायता की थी। इस वीमलदेव की रानी का नाम शिलालस म राज र्वी मिला है जो राजमती से मित्रता जुनता है। इन कारणों से गौरीशंकर द्वाराचन्द्र आभा प्रथम वीमलदेव को ही उस रास का नायक मानते हैं। पर इस वीमलदेव के समय तक अजमेर और आना सागर का निर्माण नहीं हुआ था। रामचन्द्र गुप्त दूसरे वीमलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) को राम का नायक मानते हैं। वीमलदेव का उड़ीसा जाना कवि की कल्पना है। इसी प्रकार भोज द्वारा दहेज में चित्तौड़ खूनी मंडोर माडलगढ, कुडाल, सारठ गुजरात जादि का दिया जाना भी कल्पना मात्र है।

विशेष द्रष्टव्य

हाल में श्री नाहटानी को कुछ और भी प्रतिया प्राप्त हुई है। सब के छपते जपन उनकी कृपा से दो और प्राचीन प्रतिया दखन का मिली। दोनों प्रतिया सप्तहत्ती शताब्दी की निर्गी हुई है। उनका विवरण इस प्रकार है—

- (१) विष्णुविरानन्द बदिक गोध सस्थान की प्रति न १६—लिपि-काल म १६४६। पद्य-संख्या १६५। अविभाजित रूपान्तर।
- (२) विष्णुविरानन्द बदिक गोध सस्थान की प्रति न ६६—लिपि काल म १६६६। पद्य-संख्या १८७। अविभाजित रूपान्तर।

प्रथम प्रति के १० पद्य दूसरी प्रति में नहीं हैं और दूसरी के ७४ पद्य प्रथम प्रति में नहीं हैं अर्थात् ११३ पद्य दोनों में समान हैं। अत्र तक प्राप्त प्रतियों में इनका पद्य संख्या सब से कम है। मन्टरी शताब्दी की लिखित ६ प्रतियाँ अभा तक दखन में आयी हैं जा यमग १६२३ (पद्य-संख्या २४६), १८४६ (पद्य-संख्या १६५) १६६६ (पद्य-संख्या ३११) १६८१ (पद्य-संख्या २११) १६८१ (पद्य-संख्या २४८), और १६९६ (पद्य संख्या १८७) की हैं।

चद और उसकी कृतियाँ

(क) चद वरदायी

पृथ्वीराज रासा का वंश चद वरदायी प्रसिद्ध है। वह जाति का ब्रह्म भट्ट था और अजमेर दिवनी व चौहान राजा पृथ्वीराज तृतीय (राजपाल सन् १०३६ स १०४६) तथा वाणा-कन्नौज व गाह्वान राजा जयराज (स १२२६ स १२५०) का समकालीन था।

चद की जीवनी के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी बात नहीं। अनुश्रुति में बहुत सी बात प्रसिद्ध हैं पर उनके लिए कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं।

(क) पृथ्वीराज विजय और हम्मर चरित काव्या में जो चौहान राजवंश और पृथ्वीराज के स्तिहास में संपर्क करते हैं चद का उल्लेख नहीं मिलता।^१ पृथ्वीराज विजय में पृथ्वीराज व एक कवीजन (भट्ट) का नाम पृथ्वीभट्ट दिया हुआ है। कुछ विद्वान उसी के चद होने का अनुमान करते हैं।

(ख) चद का प्राचीनतम ग्रन्थ दा जन प्रबंध में मिलता है जिनके नाम पृथ्वीराज प्रबंध और जयचंद्र प्रबंध हैं। जिस सग्रह में ये प्रबंध संगृहीत हैं उसका लिपि ता. १५२८ विक्रमी है। उनके रचनाकाल का कुछ पता नहीं। इस सग्रह में कुछ अन्य प्रबंध भी संगृहीत हैं जिनका रचनाकाल

१ पृथ्वीराज विजय काव्य के प्रथम सर्ग में चौहान राजा चंद्रराज का वर्णन करते हुए कवि चंद्रराज में उसकी उपमा ली गयी है। कुछ विद्वानों का मत है कि वहाँ चंद्रराज से चद का ही अभिप्राय है। गौरीराज हीराचंद जोधा का कहना है कि चंद्रराज चद नहीं हो सकता सभ्य है कि वह वाशमोग कवि चंद्रर हा निकला उनका धर्मज्ञ न किया है।

२ (क) सावधन गमरी महाकवि चद अतः पृथ्वीराज गमरी (गुजरालो) पृ. ५२। गमरीजी चद का पूरा नाम पृथ्वीराज भट्ट बताया है।

(ख) राज साहसमिह पृथ्वीराज गमरी गमरी और समाप्त (गाथ पत्रिका भाग २ अंक ४ पृ. २५०)।

३ ये प्रबंध मुनि जिनविजय द्वारा संपादित और सिंधी जन श्रयमाला में प्रकाशित पुरातन प्रबंध सग्रह में (पृ. ८६ ८६ पर) प्रकाशित हुए हैं।

सवत १०६० दिया हुआ है। अतः उक्त दानों प्रबंधों का रचनासाल सवत १०६० और सवत ११०८ के बीच का होना चाहिए।

पृथ्वीराज प्रबंध के अनुसार चंद्र पृथ्वीराज का द्वार भट्ट था। उसका नाम चंद्र बनिहिक चंद्र बलिह और चंद्र वनहिअ इन तीन रूपों में आया है।^१ एक बार पृथ्वीराज ने किसी बात पर अप्रसन्न होकर अपने मंत्री बड़वास (कल्मषवास कमाम) की मारत का विचार किया। रात के समय जब मंत्री दरबार में उठकर घर जा रहा था तब राजा ने छिपकर उस पर बाण चलाया पर निशाना चूक गया। चंद्र इस बात का जान गया और उसने भी पद्या द्वारा राजा को फटकारा। भेद फूटने के भय से राजा ने उसे चंद्र में डाल दिया। दूसरे दिन मंत्री को अधिभारव्युत्त करके निकाल दिया और चंद्र का भी छोड़ दिया। चंद्र राजा से यह कहकर कि 'तुम शीघ्र ही मनच्छा द्वारा चंद्र का मारे जाओगे' वहाँ से भागा चला गया। काशी के राजा जयचंद्र ने उसमें कहा कि मैंने तुम्हें कई बार बुलाया पर तुम नहीं आये। चंद्र यह कहकर कि 'राजन्! तुम्हारी मृत्यु भी निकट ही है' वहाँ से भी चला गया।

चंद्र के कहे हुए व पद्य इस प्रकार हैं—

इसहुं बाण पहुवीसु तु पद चंद्रवामह मुक्कउ ।

उर भितरि गच्छिडि धीर कस्यतरि चुक्कउ ॥

बीज करि सधीउ भमन् मूमेगर नदण ।

एहु मु गडि दाहिमजो तणइ गुद्दइ गइभग्गिगु ॥

फुट्ट छडि न जाण् ञ्ह लुभि(यउ) वाग्इ पनक्कउ यल मुनह ।

न जाणउ चन् बलिहि(य)उ वि न वि छुट्टइ इह पनह ॥१॥

[शुद्ध ८६ पद्य २७५]

^१ बलिह या बनिहिक या चंद्र का जय रैन या माण्ड हाता है। यहाँ वह मस्त्रुत के रूप में और कृपण या गण्डा की भाँति प्रणाम सूचक जय में प्रयुक्त हुआ है। माण्ड अपनी शक्ति के लिए प्रसिद्ध होता है। अतः वीरा के साथ उस प्रकार की उपाधि लगी जाती है। प्रसिद्ध विजयता विक्रम की एक उपाधि तुल्यवरनन लगी गयी है जिसका अर्थ दो सीगा बाला अर्थात् साठ हाता है। गुजरात में प्रसिद्ध मुलतान महमूद की उपाधि बगण थी जिसका भी यही अर्थ होता है। राजस्थानी-गाहिय में वीरा के लिए साठ की उपमा का प्रयोग बहुत देखा जाता है जहाँ साठ जन्तनी रउ छन् वाक्य में वीरम के लिए कहा गया है—वगडउ माण्ड वीरम तियाउ। बनिहिक का अर्थभाषा में बरहिया या बरहिया रूप लता है। विद्युत नामकी नमकी वृत्तपत्ति बरहिया मकी और नमकी अर्थ किया जिसका लिए शक्ति न बरहिया ली। बरहिया नाम का प्रयोग गयो में मिलता है। पाँच लोगों ने यही का बरहिया बना लिया।

जगद् म गहि ऋहिमआ रिपु राय खयकर ।
 क्रुद्र मत मम टवआ एहु जव्य मिनि जगत् ॥
 सहनामा मिक्खवउ जं मिक्खिउ बुज्झइ ।
 जपं चं वनिन्दु मज्झ परमक्खर मुज्झं ॥
 पह पट्टविराय मभरि धनी सभरि सण्णउ ममिरिमि ।
 कइवाग विआस विमट्ट विण मच्छि ववि वद्धजा मग्गि ॥२॥

[पृष्ठ ८६ पद्य २७६]

ये दोनों पद्य रामो के वृहद् रूपांतर म विवृत रूप म मिलत है पहना
 कमाम वध खण्ड म और दूसरा वही लडाई खण्ड म । अय रूपांतरा म
 कवन पहला पद्य मिलता है दूसरा नहीं मिलता ।

एक वान पट्टमी नरेम नमामह मुत्तयी ।
 उर उप्पर धरहरजो वीर वग्गतर चुत्तयी ॥
 वियी वान सधान ह्ययी सोमसर नत्तन ।
 गाढी वरि निषट्टयी वनिव गट्टुघी मभरि धन ॥
 थल छारि न जां जभागरी गाडवी गुन गहि अग्गरी ।
 इम जप चं वरहिआ वहा निषट्ट वय प्रती ॥

[कमाम वध खण्ड (१७) पृष्ठ १४६६ पद्य २३६]

जगत् मगह् दाहिमो ख रिपु राय खयकर ।
 क्रुद्र मत जिन वगी मिने जत्त व जगर ॥
 मां सह नामा मुत्तयी एह परमारथ सुक्ख ।
 अक्ख चं विरत्त वियी काइ गह न वुक्ख ॥
 प्रधिराज मुनवि मभरि धनी व्ह मभरि सभरि रिम ।
 कमास वनिन्द वमात्त रिन म्मच्छ उध ज्ययी मग्गि ॥

[वही लडाई खण्ड (६६) पृष्ठ २१८२ पद्य ४७२]

जयचन्द्र प्रवध म जयचन्द्र व विषय म कहे हुए ता पद्य उद्धृत किये गये
 है जिनका चन्द्र की रचना बताया गया है । व पद्य इस प्रकार है—

प्रिष्टि लभ तुप्पार सत्तन पावगियं जमु ह्य ।
 चउत्तमय मयमत्त दति गज्जति मत्तमय ॥
 वास तग्ग पायवव सपत्त फाक्क घणुद्धर ।
 लूमट्टु जर बलु यान सव्व बु जाणत्त ताह पर ॥
 छनाय जत्त नगाहिवं रिहि विनट्टिओ हो किम भयउ ।
 जत्तद न जाणउ जट्टु तं गयउ कि मूउ कि धरि गयउ ॥१॥

[पृष्ठ ८८ पद्य २७८]

इतचदु चक्कवइ देव तुह दुसह पयाणउ ।
 धरणि धमवि उद्धसद पडइ रायह भगाणउ ॥
 समु मणिहि सकियउ मुक्कु ह्य सुरि सिरि खण्डि ।
 तुट्टुओ सोहर धवलु धूलि जसु चिय तणि मडिउ ॥
 उच्चरिउ रण जसणि गय मुक्वि जल्लु सच्चउ चवइ ।
 वग इदु विदु भुय जुअलि सहस नयण विणपरि मिलइ ॥२॥

[पृष्ठ ८८ ८९ पद्य २७६]

राम से पहला पद्य रामा के वृहत् रूपांतर के रनसी-खंड में कुछ परिवर्तित रूप में मिलता है। हमारा पद्य रासा के किसी रूपांतर में नहीं पाया जाता।

अभिय लख्य तावार् सजड पन्वर मायदल ।
 सहम हस्ति चवमट्टि गम्अ गज्जन्त महावल ॥

पच कान्ति पाइक्क मुफर पारक्क धनुडर ।
 जुय जुयान वर वीर तोन वधन सदन भर ॥

छत्तीस सहस रन नाइवौ विहि निमान एसो कियो ।
 जचदरात् कविचत् कहि उन्धि बुड्ढि के धर लियो ॥

[रनसी खण्ड पद्य २१६ पृष्ठ २५०२]

इस प्रबंध में दानो पद्य चत् के नाम से लिये हुए हैं पर पृथ्वीराज प्रबंध वाल पद्या के विपरीत राम चत् का नाम नहीं है। उसके बगल दोना में जल्ह का नाम आया है। हमारा समति में ये पद्य चत् के नहीं किन्तु जल्ह के हैं। रनसी-खंड में उद्धृत पद्य में चत् का नाम है पर स्वयं रामो के अनुसार ही रनसी प्रस्ताव चत् की नहीं किन्तु जल्ह की वृत्ति है। रामो के अनुसार जयचत् की पराजय के पूर्व ही चत् और पृथ्वीराज गजनी में अपन प्राण दे चुके थे।

इन प्रबंधों में ली गयी बात वहाँ तक सत्य है यह बताना संभव नहीं। प्रबंधों में ऐतिहासिक और अतिहासिक सभी प्रकार की बातें संगृहीत हैं। प्रबंधों के रचनाकाल तक पृथ्वीराज और जयचत् के संबंध में बहुत-सी जन-श्रुतियाँ प्रचलित हो गयी थी। प्रबंधकार ने उनका संग्रह कर लिया जान पड़ता है। एक प्रबंध में पृथ्वीराज द्वारा मुलतान के मान वार पराजित किये जान का उल्लेख है।

(ग) इसमें परचार् चत् का उल्लेख भूराग की माण्डिय-नन्दी के एक पद्य में मिलता है। भूराग राम ब्रह्मभट्ट और चत् के वंशज थे। इस पद्य के अनुसार पृथु के यश में एक अद्भुत रूप का पुत्र का जन्म हुआ। ब्रह्मा ने उमरा नाम ब्रह्मगाव रखा। उम दुर्गा ने स्तन-दान कराया जिसमें वह दुर्गा-पुत्र कहनाया। उमर बग में चत् हुआ जिसे पृथ्वीराज ने जवाना दान लिया मउवे।

चार पुत्र हुए जिनमें म दूसरे पुत्र के वश में मूर का जन्म हुआ । इस पद का प्रामाणिकता में विद्वानों ने सन्देह प्रकट किया है ।

यह पद इस प्रकार है—

प्रथम ही प्रियु जाग त भे प्रगल्जदभृत रूप ।
 ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा राव नाम अनूप ॥
 पान पय दनी निया सिव जादि गुर मुख पाय ।
 वर या दुर्गा । पुत्र तेरा भया अति अधिकाय ॥
 पारि पायन मुरत क मुर महिल अस्तुति तीन ।
 तामु वम प्रसिद्ध म भी चद चार नवीन ॥
 भूप पृथ्वीराज तीना नि ३ ज्वाला तस ।
 ननय ता के चार कीना प्रथम आप नरम ॥
 दूसरे गुनचन्द ता सुत सीलचन्द मरुप ।
 वीरचन्द प्रताप पूरन भया अम्भुत रूप ॥
 रथवीर हमीर भूपत सय खेलत आप ।
 तामु वम अनूप भी हरचन्द जति विख्यात ॥
 आगर रहि गापचन म रहया ता सुत वार ।
 पुत्र जनम मात ता क महा भट गभीर ॥
 कृष्णचन्द उत्तरचन्द जु रूपचन्द मुहाइ ।
 बुद्धचन्द प्रकास चौथा चन्द म सुन्दर ॥
 दरबन्द प्रबोध समृतिचन्द ता को नाम ।
 भयो सप्तौ नाम मूरज चन्द मद निराम ॥
 मो समर करि साहि मवक गय विधि क ताक ।
 रहयो मूरजचन्द हय त हीन भर वर सोक ॥
 परो पूष पुकार काट्ट मुना ता ममार ।
 सानम दिन जाण जटुपति कियो जापु उधार ॥
 दियो चग त कही मिसु मुनु माग वर जा चार ।
 हीं कनी प्रभु । भगति चाहत गत्र-नास मुभाइ ॥
 दूसरा ना रूप तवीं रगि राधा स्वाम ।
 सुनत बरनामिधु भागी एवमस्तु मुधाम ॥
 प्रकृत दक्षिण विप्र-कुल के मूर हू है नाम ।
 अपित बुद्धि विचारि विद्या भान माने माग ॥
 नाम गय मोर मूरजदाय मूर सु स्वाम ।
 भय अतरध्यान वीन पादना निम जाय ॥

माहि पन सा रहै ब्रज की वस मुख चित धार ।
 थापि गोमाई करी भरी आठ मद्ध छाप ॥
 बिप्र ह प्रियु-जाग त को भाव भूरि निकाम ।
 मूर है नैद-नन्जू वा लयो मान गुनाम ॥

(घ) इसका पञ्चाक्षर चंद्रक नाम का उल्लेख कवि चंद्रशेखर के मुरजन चरित कायम मिनता है। चंद्रशेखर दूदो के राजा मुग्जन आर भाज क (आ अक्षर के समकालीन ४) दरवार का ब्रज था। काव्य का रचनाकाल म १६३५ मि है। मुरजन क पूवजा का वणन करत हुए पृथ्वीराज क प्रसंग म उमन चंद्र का उल्लेख किया ह। जहाँ तक चानना की प्राचीन बनावली और पृथ्वीराज सबधी घटनाओं का संबंध है यह काय गमा म मल न तान पर भी इतिहास विद्धान म रामा स हाड उगाता है। इस काय के अनुसार चंद्र एक बंदोजन था जिम पृथ्वीराज न प्रचुर धन-दान स मनुष्य कर रखा था। राजा क गजनी म बंदी हान पर चंद्र भी भूमंडल म घूमता धामता बहा पढ़वता है और मुलतान म कहता है कि पृथ्वीराज अघा होन पर भी एक कुठिन बाण स ही सात ताह क कडाहा का एक साथ बंध सकता ह और मुलतान को पृथ्वीराज क बाण की बगमान दखन क लिए राजी कर लेता है। चंद्र का पंडित सफन होता है मुलतान मारा जाता है और चंद्र राजा की घाट पर बठाकर बापिम कुंजागल दग म लौटा जाता है। कुछ समय राज्य करन क बाद पृथ्वीराज का स्वगवास हाता है और उमका पुत्र प्रह ताद राजसिंहासन पर बठता है। (मुरजनचरित, मग १० और ११)

(ङ) इस समय क आयपाम रामा का सग्रह (अर्थात् निर्माण) काय आरभ हा जाता है और उस चंद्र के नाम क साथ जोड दिया जाता है (रामा की सबम प्राचान उपलब्ध प्रति स १६६७ की—तपुनम स्फातर की—है)।

(च) स १६७६ म रचित अपन रम गतन कथा नाव्य म पुंकर कवि न चंद्र बरनामी का उल्लेख किया है—

प्रथम मम जह वामुंन मुखद्वह पायो ।

वालमान श्रीरूप वात्रिणामह गुन गायो ॥

माध भाष दिन जमि बाण जयदव मु दण्डिय ।

मलदत उच्यत चंद्र करणद्वय चंडिय ॥

अ काय सगस विदधानिपुन वाकवानि कठह धरन ।

बविराज मरन गुन मन तिलक ब्रि पीठकर बन्त चरन ॥

(छ) सबन् १७०५ म रचित दत्तपति मिथ क जगरन्त उद्यान नामक काय म रामा का मंत्रप्रथम उल्लेख मिनता है। इसका चंद्र का नाम भा आयप है।

(ज) महाराणा राजमिह (स १७०६ स स १७३७) की राजसमद पर खुदवायी हुई राजप्रगति म रामो का उल्लेख हुआ है ।

(भ) कुम्भवन साहू १ अपन रतन राम काव्य (रचनाकाल म १७३० व १७५०) म चर कवित प्रियिराज-जग का उल्लेख किया है ।

(ज) सुप्रसिद्ध गुजराती कवि प्रमान क पुन वरभ न अपन कुतीप्रगनाख्यान नामक का प (रचनाकाल म १७७८) म र और उमक रामा का उल्लेख किया है और अपन पिता क सामन चर का मद बताया है—

भारत ममु प्रमाण गसा ना तमाना भाग

वरजा भारत वरण आरत उवधीण ।

पृथ्वीग प्रगसा करी मान ग न मोष न मा

प्रमान नो कविता सविता गी पग्याण ॥

ब्राह्मण थी भाट घया वगज विधिना आ ता

रवावर ना पिता थी चर मर दगीण ॥

(ट) स १८०० के लगभग हान वान कवि जदुनाथ न जो अपन को चद को वगज बताता है अपन वृत्त विनास ग्रंथ म चर का परिचय इस प्रकार दिया है—पृथ्वीगज क यहाँ चर नामक भाट हुए । उनन गिव क मन्त्रि गति की सेवा का । गिव न प्रगट हाकर चद को वरदान किया जिसम क वरदायी नाम से प्रसिद्ध हुए । फिर उनन गगा की सेवा की । गगा न प्रमत्त हाकर उनका हार सहित करन किया जिसम क सहार कहनाय । पृथ्वीगज उनको दयता की तरफ मानना था । उनन एक रक्ष पाँच महस्य प्रमाण पृथ्वीराज क मुयण का रचना की ।^१

(ठ) विद्वाना न चर की जीवनी म सप्रथ ग्यन वाना कुठ और भी बात लिखी ह जिनम म अधिराग स्वय रामा (वृहद् मस्वरण) म उर्णित है—

चर जगत गात्र का भाट था ।^२ उमरे पूवज पञ्जाब क रहन वान थ । उनका जजमाना अजमर क चौगला क यहाँ परम्परा म चनी जात्रा था । चद का जन्म तानीर म हुआ था ।^३ उसक पिता का नाम वण और गुर का नाम

^१ गौरीगजर हीराचर नामा कवि जदुनाथ का वृत्त विनास (नागरी प्रकाशित) पत्रिका भाग ५ पृष्ठ १६६ १६७) ।

^२ यामसुन्दरनाम चरवरणाया (स्त्रियाय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का काव्य विवरण पृष्ठ १२४ और १३५) ।

^३ जगान नाम का कारण जग (यत्र) १ उपर हाना बताया जाता है ।

^४ कविभद्र मु नागौर चर उपाजि तानीर । (रामा वृहद् म्पातर मुद्रित मस्वरण सादि पत्र पृष्ठ ५६४)

मुद्रमात्र था। चंद्र और पृथ्वीराज का जन्म एक ही दिन हुआ और मरण भी एक ही मास हुआ।^१ चंद्र साहिब तथा अर्थात् शास्त्रों का बड़ा विद्वान् था। उसे जालधरी देवी का इष्ट था। उमर दा स्त्रियां थी जिनमें एक का नाम बमना उपनाम देवा था और दूसरी का गौरी उपनाम गजोग। रामा की कथा चंद्र न गौरी में कही थी। उमर म्यारह सत्तान थी जिनमें एक पुत्री और दस पुत्र थे। पुत्री का नाम राजवार्द तथा पुत्रों के नाम मूर सुन्दर, मुजान जन्तू बल्ह बनभद्र कहरि वीरचंद्र, जवभूत और गुणराज थे।

पृथ्वीराज और गौरी का युद्ध हुआ तब चंद्र उपस्थित नहीं था। हाह्निराय नामक विद्यामपानी सामंत ने उसे देवी के मन्त्रों में कर्तव्य दिया था। चंद्र से छूटने पर चंद्र दिल्ली आया। तब तब गौरी पृथ्वीराज की मन्त्री लजा चुकी थी। चंद्र भी मन्त्री पहुँचा। चंद्र के पदग्रहण में गौरी पृथ्वीराज के बाण से मारा गया। चंद्र पश्चात् चंद्र और पृथ्वीराज दोनों नगर में अपना अंत किया।^२

इन सब बातों का आधार स्वयं पृथ्वीराज रामा ही है। इतिहास से इन बातों का समर्थन नहीं होता। चंद्र बात तो स्पष्ट ही इतिहास के विरुद्ध है।

इतिहास के अनुसार पृथ्वीराज युद्ध भूमि में ही पकड़कर मार डाला गया था। इस समय को लेकर जनक जय मुतिया प्रकृतित हा गयी थी तिनका उल्लेख प्रबंध-मण्डला में तथा काहड़ प्रबंध सुरजन चरित और पृथ्वीराज रामा में मिलता है।

पुरातन प्रबंध संग्रह की (८) सप्तक प्रति में पृथ्वीराज प्रबंध के अनुसार पृथ्वीराज पकड़े जाने के बाद, अपने प्रति मुलतान के दुःखनहार से चित्र हाकर, तान्त्र को उतार हुआ और मारा गया।

उसी संग्रह की (१) सप्तक प्रति के अनुसार मुलतान पृथ्वीराज को पकड़कर दिल्ली लाया। यहाँ पृथ्वीराज ने अपने मन्त्री से जिसने मुलतान को बुलाया था, कहा कि यदि मुझे धनुष-बाण मिला जाय तो मैं मुलतान का मार डालूँ।

१ (क) इक धार मरा जनमह मुद्र
चरति किति सगि सगि रवि ॥ (पद्य पद्य ७६०)

(ख) इक दाह उग्र नर गे ममाम प्रम ॥ (पद्य पद्य ६२)
यह पद्य मध्यम स्थांतर में भी पाया जाता है।

२ पृथ्वीराज रामा वानरध प्रस्ताव। यह कथा चारों स्थांतरों में पायी जाती है पर मध्यम स्थांतर की लक्षण की मन्त्र १६६२ की प्राचीन प्रति में तथा और भी दो-तीन प्रति में यह अंग नहीं है। रामा के कथन के अनुसार भी वानरध प्रस्ताव चंद्र का नहीं किंतु जय की रचना है।

इस पर मन्त्री न उत्तर दिया कि मैं प्रयत्न करूँगा। उसने राजा का धनुष बाण ना ला दिये पर सुलतान का सावधान कर दिया और सुलतान के स्थान पर ताह का पुतला धरवा लिया। राजा ने बाण में पुतल के दो टुकड़े कर लिये। साथ ही उसे मारूम हा गया कि सुलतान मारा जा गया। इसके बाद सुलतान ने पृथ्वीराज को पत्थरों की मार में मरवा लिया।

११ दाता ही जन मुतिषा में चंद का नाम नहीं है। प्रबंध के अनुसार तो चन्द्र पृथ्वीराज को बन्धन पहन ही छोड़कर चला गया था।

ताहद्वय प्रबंध के अनुसार जिसका रचनाकार ने १५१२ है राजा पृथ्वीराज का बित्तविकार हुआ। रानी ने उस वक में चंद्र प्रधाना का मरवा डाला। उसका राज्य चला गया। वह सुलतान के द्वारा घघर नदी के तीरे पर मारा गया। तब उसकी गनी पत्मावती बयाध्या में मना हुई।^१

मुर्जन चरित (रचनावाल म० १६३१) के अनुसार सुलतान पृथ्वीराज को पकड़कर गजना ल गया और बहा उम अथा बना लिया। उसके पदचाल चन्द्र पृथ्वी पर घूमता घामता गजनी पञ्चा। वहा वह सुलतान को पृथ्वीराज का बाण विद्या का चमकार दगन के लिए राजी कर लेता है। उसका पदचाल सफत हाता है और सुनना मारा जाता है। तब चंद पृथ्वीराज को घोर पर चलाकर कुर्जागत जेग में न आना ह। वहा पृथ्वीराज अपने दग को लोक में पनाकर स्वगवामी होता है।^२

(ख) जल्ह

पृथ्वीराज रासा के अनुसार चंद के दस पुत्र तथा एक पुत्री इस प्रकार ग्यारह सता था। पुत्रों में एक का नाम जल्ह था। गजनी जाने समय चंद रासो के ग्रथ का जल्ह को द गया था। जल्ह ने उसकी पूति की। बानपेध और रनरी य दा खण्ड जल्ह की रचना है। एक दूसरे मत के अनुसार अन्तिम दम खण्ड जल्ह के लिखे हुए है।

जल्ह के विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं। पर जसा कि ऊपर कहा गया है पुरातन प्रबंध मग्रह के जयचंद्र प्रबंध में दिये गये जयचंद्र के सवध के दो पद्या

१ काहद्वय प्रबंध तृतीय खण्ड पन्ना २०१ से २०५।

२ मुर्जन चरित पद्य १० तथा पद्य ११।

३ जल्हने जिनाज गुन साज करि चंद्र छन्द-माधर निरन।
अप्यौ तु हित रासो मरम चापौ अप्य राजन चरन ॥

म जल्ह का नाम आता है। प्रथम म उनका चर का रचना बताया गया है पर पृथ्वीराज प्रबन्ध म आष हण पद्या म जहा चद का नाम आया है वहा इनम चद का नाम नही है प्रयुत उह का नाम है। हमारी समति म य पद्य चद की नहा किंतु जल्ह की रचना है। इन टा म स एक पद्य विकृत रूप म रामा क वृहत् स्पातर क बानबध मण्ड म आया है जा रामा क अनुमार भा जल्ह की रचना है।

इम प्रकार प्रथमा म जल्ह का अस्तित्व ता मिद्व हाता है पर चर म उमहा वया मरव था रमका पना नहा चरता।

रामा म निष्पा है कि पृथ्वीराज की बहन पृथावार्द का रिवाह चित्तौड क रावल समरमी म हुआ तत्र समरमी न हृपाका वद्य क साथ जल्ह का भो माग किया था और अपन माय मराड उ गय थ।

(ग) चद के वंशज

चर क वंशा क सप्रथम भी अनक विवर्तितया है। कहा जाता है कि चर क पुत्र जल्ह क वंशज मवाड म अभी तत्र विद्यमान है। वहाँ का रानीरा राय वंश जल्ह का मतान बताया जाता है।^१

नागौर (आर जायपुर) क नागाम भट्ट न ता अपन का चद का वंशज कृता था टाकनर हर्प्रसाद शास्त्रा का बताया था कि चर क चार पुत्र थे जिनम म एक क सप्रथम कुल भी जान नहा दूसरा मुमनमान हो गया^२ तामर के वंशज अमकेरा म बस गय और चाथा जल्ह था जिम्का वंश नागौर म है। महाकवि मूरदाम का जन्म इसी वंश म हुआ।^३

महाकवि मूरदाम बात पत्र म उनका चर का वंशज क्या गया है पर उमक अनुसार मूर जल्ह क वंश म नहा किंतु गुणगाव क वंश म हण थ।^४

वरौनी क राजा मापादसिंह (१७८१-१८१८) क आश्रित जन्नाय कवि

^१ श्याममुल्गाम चर बरनाया (द्वितीय हिन्दु-शास्त्रिय मम्मनन काय विवरण, भाग २ लखमाला पृष्ठ १३६)।

^२ पठानों की एक शाखा का नाम बरनाया है। कहा जाता है कि यत्र चर की मतान है जिम्क पूजा बन-गूवक मुमनमान बना तिय गय थ।

^३ हर्प्रसाद शास्त्रा *Preliminary Report on the Operation in Search of Bardic Chronicles* पृष्ठ २१।

^४ वंशावली क चाकी नाम प्राय ममान है। अविषय-गुणगाव म भा मूरदाम का चर का वंशज बताया गया है—

मूरदाम रति पय कृष्ण-नीचारक कवि।

गामुर् य चद्र भट्टस्य कुल जाना हरि प्रिय ॥

इस पर मंत्री न उत्तर दिया कि मैं प्रयत्न करूँगा। उसने राजा का धनुष बाण तो ला दिया पर मुलतान का सावधान कर दिया और मुलतान के स्थान पर लोह का पुतला धरवा दिया। राजा न बाण स पुतले के लो टुकड़े कर लिये। साथ ही उस मातृम हा गया कि मुलतान मारा नहीं गया। इसके बाद मुलतान न पृथ्वीराज को पत्थर का मार स मरवा दिया।

इन दोना हा जनश्रुतिषा स चद का नाम गही है। प्रथम के अनुसार तो चन्द्र पृथ्वीराज का बन्धुन पहल ही छाडकर चला गया था।

काहल प्रथम के अनुसार जिसका रचनाकाल स १५१२ है राजा पृथ्वीराज का चित्तविकार हुआ। रानी न उस वष स करव प्रधाना का मरवा गला। उसका राज्य चला गया। वह मुलतान के द्वारा घघर नदी के तीर पर मारा गया। तब उसकी रानी पद्मावती ज्योया स मनी हुई।^१

गुरजन चरित (रचनाकाल स० १६३१) के अनुसार मुलतान पृथ्वीराज को पकडकर गजनी ल गया और वहा उस अवा बना दिया। उसके पदवान् चद पृथ्वी पर घूमता घामता गजनी पहुचा। वहाँ वह मुलतान का पृथ्वीराज का बाण विद्या का चमत्कार दर्शन के लिए राजी कर लता है। उसका पडवान् मफन हाना है और मुलतान मारा जाता है। तब चद पृथ्वीराज को घाड पर चलाकर कुरनायन दग स ले जाता है। गहा पृथ्वीराज अपन यश को लोक स फाकर स्वगवामी हाता है।^२

(ग) जल्ह

पृथ्वीराज गमा के अनुसार चद के दस पुत्र तथा एक पुत्री इस प्रकार ग्यारह सताएँ था। पुत्रा स एक का नाम जल्ह था। गजनी जान समय चद रासो के गय का जल्ह का द गया था।^३ जल्ह न उसकी पूति की। बानवध और रनसी य दो खण्ड जल्ह की रचना है। एक दूसरे मत के अनुसार अतिम दम खण्ड जल्ह के तिम हा है।

जल्ह के विषय स और कुछ भी जात नहीं। पर जमा वि ऊपर कहा गया है पुरातन प्रथम मण्ड के जयचद्र प्रथम स दिया गय जयचद्र के सवध के दो पद्या

^१ काहल प्रथम तृतीय खण्ड पद्य २०१ से २०६।

^२ गुरजन चरित सग १० तथा सग ११।

^३ जल्ह जिहाज गुन माज करि चद छ मायर तिरन।
जप्यी गु हिल रागी सरम चरौ अप्प राजन चरन ॥

—बानवध खण्ड, पद्य ८३

पुस्तक जल्ह हय द चरि गजन नृप वज्ज।

—बानवध मण्ड पद्य ८५

न वृत्तविलास नामक ग्रन्थ में अपने का चंद्र का वर्णन किया है। उसके कथनानुसार चंद्र के वर्ण में मयागम हुआ जिस पर सप्ताह अवतर १ कृपा की थी। उसी के वर्ण में जड़नाथ हुआ।

(घ) चंद्र की कृतियां

चंद्र पृथ्वीराज गंगा के वर्णों के रूप में प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज गंगा के अतिरिक्त कुछ और रचनाएँ भी चंद्र के नाम से मिलती हैं। उनमें भी पृथ्वीराजगंगामो के ही भाग बनाया गया है। उनका नाम इस प्रकार है—

(१) महोबा की समयों—यह गंगों का वृहद् रूपान्तर की कथा किन्हीं प्रति में पाया जाता है। नागरी प्रचारिणी मंडल द्वारा प्रकाशित गंगों के सप्ताहकी १०० सन्धि रचना मानकर गंगा के अंत में छाप है। इसकी स्वतंत्र प्रतियाँ भी मिलती हैं।

(२) महोबा खण्ड—इसमें विषय तो वही है जो ऊपर वाली रचना का है पर है यह उसमें भिन्न और विस्तार में उसमें बहुत वर्ण है। इस परमाल गंगों के नाम में नागरी प्रचारिणी मंडल द्वारा प्रकाशित किया है।

(३) कनक खण्ड—गंगों के वृहद् रूपान्तर के एक प्रस्ताव का नाम कनक खण्ड है। पर यह कनक खण्ड उसमें सबका भिन्न है। यह भी बहुत बड़ा रचना है।^१

(४) पीर खण्ड या अजमेर खण्ड—इसमें अजमेर के पीरों और पृथ्वीराज के सामंता के युद्ध का वर्णन है।

इनके अतिरिक्त कुछ और भी (गंगा के) खण्ड स्तुतियाँ और भविष्य वाणियाँ चंद्र के नाम से प्रसिद्ध हैं।^२

१ नंबर २ और ३ का हस्तलिखित प्रति कलकत्ता की बंगाल एशियाटिक सासाइटी के पुस्तकालय में विद्यमान है।

२ ऐसी एक भविष्यवाणी टांड राजस्थान के बल्लभप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित और वर्षे-वर्ष प्रेम चंदा द्वारा प्रकाशित संस्करण के प्रथम भाग में अध्याय ८ में ली गयी है। वहाँ उक्त पृथ्वीराजगंगों का अंग बताया गया है पर नागरी प्रचारिणी मंडल द्वारा प्रकाशित गंगों के संस्करण में वह नहीं पाया जाती। उक्त बताया गया है कि पृथ्वीराज की पराजय होगा और मुसलमानों का राज्य होगा। मुसलमान दो सौ वर्ष राज्य करेंगे फिर उक्त (मुगल) आँगे। फिर दक्षिण में दक्षिणदिशा का दल आँगा। फिर टांडी का राज्य होगा। उनमें नारी राजा होगी। वे अमरावती की स्थापना करेंगी। उनमें पापा का घड़ा पूरन पर कायुत और वन्य के दन तथा नागी राजा का अधिकार होगा। फिर सीमादिया का राज्य होगा।

य सभी बहुत पीढ़ों की रचनाएँ हैं। रामा की भाँति ही ये इतिहास विरुद्ध वाता स नरी है। इनमें से किसी का चद की रचना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(ड) क्या चद रासो का कर्ता है ?

चद न रामा लिगा था इमक पथ म नाच निन्ही युनिया गी जा सकता है या दो गयी है—

(१) यह अनुश्रुति बहुत गहरी और दाँधकारीन है कि चद न रामो लिगा था। इनकी सहज ही अवहेलना नहीं की जा सकती।

(२) जन प्रवचन म जाय हुए पद्यो से सूचित हाता ह कि चद न रासो लिगा होगा। क विद्वान दूत फुकर पद्य मानकर इस मिद्धात का निराकरण

सब अजमेर का पीर जगगा। फिर तोमर निन्ही पर अधिकार करेगे। उनके पचात् रामाड निन्ही म आवेग और धमराज्य करग।

स्पष्ट ही यह भविष्यवाणी विष्णुवरिया क शासन राज की रचना है। मूल भविष्यवाणी इस प्रकार है—

रग राग वागन चट्टय। घन घोर मोर प्रगट्टय ॥
 मुनि अलस वाग म जगय। सिर पन्न ऊचिम पगय ॥
 नवा जसी गज मज्जय। पिचाम चौडिय गज्जय ॥
 दम गज मुल परमानय। तहि गुफा खुना ज मानय ॥
 म्ना मुद्रा धारय। मुग सभु-सभु उचारय ॥
 कर सग सप्पर गगय। मुग सभु सभू भागय ॥
 पृथिवीज वीर प्रणामय। बायो न वीर मत्तमय ॥
 तहा स्व गजन समरयो। दूधो न जामन रघुवैगी ॥
 पूछन चद मु बतिय। कहो हानहार मु बधिषय ॥
 यह हानहार म हायै। दिली न विरता मायहै ॥
 पुनि मन्त्र दन मल जागहै। अर सहर दिली तागहै ॥
 पृथिवीज युद्ध न मोतै। रण समय गजल जीवतै ॥
 चामरगय गुगमहा। वर परहि भारत चामहा ॥
 पृथिवीज बधहि पायती। गत माम विपति विहावही ॥
 नृप सा चर तानय। गह मर टोर मु सीनय ॥
 गानी मु निन्ही जानय। पुनि वरत हिन्दुमथानय ॥
 निहि दुग दनन भाजय। अनि जागस्थ म माजय ॥
 वरत म वग्गा दाय म। ता पीछे उवता आवस ॥
 हिन्वान दू भगवहा। नृप घर घरहि धिय पावही ॥
 दयना म दन आयहा। निन्ही त निन्हीन पावहा ॥
 ता पीछे टोपा आवहा। बहु नम वनम चतानय ॥
 नारी मु गजा वज्जसा। निन्ही तुग्य मव भज्जगी ॥
 रहि तनन निन्हीन आयहा। नृप घर घरहि मुग पावना ॥

त विसी ग्रन्थ की रचना की थी। कामाक्षी घटाए गए चतुर्दश पृथ्वीराज के आश्रय का छोटकर बना गया था। रामा की दो प्रमुख घटनाएँ मयागिता हरण और गोरी के भाग की उत्पत्ति है। रामा स्वयं रामो के अनुसार कामाक्षी घटना के पञ्चास घटित हुई। रामा में मयागिता हरण की घटना में चन्द्र का उल्लिखित रहना लिखा है और गाँगी वाली उत्पत्ति के पञ्चास उमरा पृथ्वीराज के लिए मजती जाना लिखा है। जब चन्द्र पृथ्वीराज के यहाँ था ही नहीं तो यह रात किस मन्त्र हो सकती है? और जब चन्द्र अपमानित होकर गया था तो उसने पृथ्वीराज रामो क्या और किस प्रकार लिखा होगा?

रामा का कामाक्षी वाला प्रमथ भी पृथ्वीराज प्रमथ में मिल नहीं खाता। प्रमथ के अनुसार राजा के कामाक्षी का मार डालने का प्रयास किया पर उमरा बड़े असफल हुआ और दूसरे दिन उमरा पञ्चभूत बंधे निजात दिया। रामो के अनुसार कामाक्षी मार डाला गया था। इस प्रमथ के तथा जयचन्द्र प्रमथ के अनुसार प्रमथ भी रामा में मिल नहीं खाता।

(३) जब इन प्रमथों में आयुष्ट पद्या का तीजिय। था दशम्य गर्मा का यह कहना ठीक नहीं है कि ये पद्य रामा के हर एक रूपान्तर में पाये जाते हैं। जबकि पृथ्वीराज प्रमथ का पद्य पद्य चारों रूपान्तरों में मिलता है। रामा तीन पद्य वृत्त रूपान्तरों का छान्दस किसी भी रूपान्तर में नहीं पाये जाते। अन्तिम पद्य का वृत्त रूपान्तर में भी नहीं है। जयचन्द्र प्रमथ का पद्य वास्तव में चन्द्र के ही नहीं रामा के तो स्पष्ट हो जाये कि वही रचना है।

गर्माणी का यह कहना भी ठीक नहीं है कि ये जायान-मारा पद्य हैं इसलिए पुत्रपुत्र पद्य नहीं हो सकते। यह सिद्ध जायान-मारा पद्य है और जायान-मारा पद्य हैं यह मानना में तो रामा का आपत्ति नहीं हो सकती पर मन्त्र निग यह तर्क भी आवश्यक नहीं है कि ये किसी जायान-मारा पद्य के भाग भी हो जमा गर्माणी के बहाने का अभिप्राय है। कविया के विनापन जायान-मारा के तर्किया के एम मन्त्र पद्य मन्त्र जो जायान-मारा पद्य है जिनका जय आश्रय जान सिद्ध नहीं रामा मन्त्र जा मन्त्र पर ये रामो जायान-मारा के भाग नहीं हैं।^१ स्वयं जय प्रमथ मन्त्रों में एम अन्त पद्य निश्चयान् ।

- १ उदाहरणार्थ - (१) बापा मन्त्र प्रवर्तनी राधे है केराण ।
एकण बापा फिर कर्हा नुरग नजना प्राण ॥
(२) त्रु कहे गापाळगे सतिपा हाथ मॅन्म ।
पतमाहा घन मोडनर आमाँ गं जमरम ॥
(३) गीत वृत्त घट्ट वरु गरी मन्त्र ।
थाग नाकर माग्णा म्मण अभठ्ठा ॥

वात यह है कि चंद्र (और जल) के पत्र योग में काफी प्रचलित होने कम से कम भट्ट लोग उनसे जवद्वय परिचित रूप हाग और जय चंद्र और जल के नाम से रासो की रचना करने पर तो उपयुक्त स्थानों पर उनको डाल दिया हागा। ध्यान रहे कि जह पाता पद्य रचना समय में डाला गया है जो जल की रचना माना जाता है। जल के दूसरे पद्य के लिए उनका उपयुक्त स्थान नहीं मिला फलतः वह चारों ओर में एक भी स्पांतर में नहीं पाया जाता।

(४) जिन छन्दों की भाषा बिना छन्द की हानि पहुँचाये अपभ्रंश में परिवर्तित हो जाय उनके संबंध में यह कहना अयुक्त नहीं कि वे अश अपभ्रंश से विकृत हुए हाग। भाषा की प्राचीनता का परखन का यह एक महत्वपूर्ण साधन है पर साथ ही यह भी कहना पडता है कि एकत्र निम्नोक्त साधन नहीं है। कर्मावली बहुत पीछे की रचना भी इस प्रकार बिना छन्द की हानि पहुँचाये परिवर्तित हो जाती है। गमाजी अनेक स्थानों पर परिवर्तन करने में सफल नहीं हुए हैं—छन्द की गति या लय की बराबर हानि पहुँचता है कई स्थानों पर तो उद्गम का नाम भी बदलता पडा है।

(५) मुनि कान्तिमागर बानी प्रति के रिपय में यनी कहा जा सकता है कि उमका अस्तित्व जसिद्ध है। मुनिजी के मिवाय और विगी ने उमक दान कहा विषे है। उमका अस्तित्व सिद्ध भी हो तो भी वह मन्त्रही अठारहवीं गताली के पूर्व की नहा हा सकती बयानि मुनिजी ने ही बयन के अनुसार उसमें उसी लिपिकार के हाथ का निम्ना हजा मुरजन उचित भा है जा मजन १६३५ की रचना है और उमक साथ कागला नाम के विषे हैं निम्ना जारम्भ अठारहवीं गताली के लगभग हुआ था।

(६) जमा रि उमक कहा गया है गमा का उद्गम विभिन्न राजपूतों का प्राचीन सिद्ध करना था। चन्द्र का नाम नहीं दिया जाता तो नहीं रचना को प्रामाणिक कौन मानता? गमा का विगी एक ही व्यक्ति नगर हा साथ नहीं दिया। धीरे धीरे उमको रचना जानी रही। गमा के छन्द स्पांतर कोट्टे बहुत बड़े काय नहीं वह ना सकते। चन्द्र स्पालर तो स्पाटर हो वात की रचना है। अपना रचना का प्रामाणिक बनाने के लिए उम प्राचीन नाम के नाम से चला देना भारताय माहिय के इतिहास में कई नयी बात नहीं है। ज्यातिविद्याभरण का उद्गम भी गौरीगवर हीराचंद ओझा ने दिया ही है। कन्नड का बगान लिंगाटिक मागाती के मन्त्रालय में लगभग उतना हा बयान एक दूसरे पृथ्वीराज गमा है जिनका चन्द्र की रचना बताया

गया है। स्पष्ट ही पाद्य व कविया न यह रचना की है गीत चर व नाम से प्रसिद्ध की है।

निम्नलिखित वाता का दृश्य हुआ चद न गमा लिया था यह रिभी प्रसार सभव नहीं जान पड़ता—

(१) रामा व चारा रूपांतर इतिहास विरुद्ध वाता से भरे हैं। काय क नायक व जीवन की प्रमुख घटनाएँ तब इतिहास व विरुद्ध पत्नी है। उमक दादा माता और पुत्र तब व नाम अगुद्ध है। रिभी भी समकालीन कवि का रचना से ऐसी अगुद्धिया असभव है।

(२) चौहान वग से पतिष्ठ सप्रथ रचन बाल पृथ्वीराज विजय हमीरचरित मुरजन चरित काहडप्रथ आदि रिभी प्रथ से उ व रासा प्रथ का उल्लेख नहीं मिलता और उ उ व वणन हा गतो से म न बान है।

(३) मेवाड के महाराणा उभा ने से १११३ में कभरग के कभरवायो के मंदिर में पाँच बड़ी-बड़ी गिलाआ पर जो प्रगति खुदवायो की उसमें समरमिह व वणन में प्रथाबाई पृथ्वीराज आदि का तथा चर या उससे रामो का कोई उल्लेख नहीं।

(४) सप्रहवा गतांगी व मय तब म बान का एक भी प्रथम या अप्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता कि चर न रामो काय की रचना का थी।

(५) रामो के सभी रूपांतरों की भाषा तरहही गतांगी की भाषा से सववा भिन्न है। वह सप्रहवा-जटाहवी गतांगीया से प्रहभट्टा द्वारा प्रयुक्त भाषा है। वीमवा गतांगी के चरण महाकवि मयपन मिथण न अपन वग भास्वर में एसी ही भाषा का प्रयोग किया है।

जान पड़ता है कि इतिहास प्रमा मरान अरवर न जय अनुसूचक जीति को इतिहास पथ लिखन का आगे लिया तब गजपू राजाजा का भी आगे दी कि व अपना अपना इतिहास उपस्थित कर। तब गजाजा का अपनी अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करन का भी पड़ी। उहनि भाग का जोर कथिया का पत्ता पत्ता फलत रामा जोर मुरजन चरित जग प्रथ अतिर म जाय। चद का नाम प्रसिद्ध था। उम समय तब पृथ्वीराज और उनके पुत्रजा व सवध में जनक भूमी-भरवी अनुसूचितिया प्रचलित का कही थी जगा ति जन प्रवधा में मपूहीन अनुसूचितिया में प्रगत जाना है। भाग न उहना नाम उठाया और चर व नाम ग रचनाएँ लाजा कर न नथ। य हो रचनाएँ रामो नाम से मपूहीन हूइ। इनमें विविध राजवगा का सवध पृथ्वीराज मव

उनके सामंतों के साथ लिखाया गया। राठौड़ा का मन्त्र जयचंद से स्थापित किया गया।

मुगल साम्राज्य से संपर्क होने पर मेवाड़ में महाराणा जयतसिंह और राजसिंह के आश्रय में रामा का नय सिरे से सग्रह आरम्भ हुआ और नयी नयी रचनाएँ आन लगीं। मेवाड़ में रासो सग्रह का यह काय महाराणा अमरसिंह द्वितीय के काल में पूरा हुआ।

जब किताब साहित्य के महान प्रेमी थे। वे साहित्य का निर्माण ही नहीं करते थे उसका सग्रह भी करते थे। उनके सग्रहों में ग्रंथ बड़ी संभाल के

(क) Abul Fazl in several places in his work speaks in enthusiastic terms of the keen interest which Akbar took in matters historical and in the xxii chapter in his second volume explicitly tells us that in the nineteenth year of his reign (1574 a d) Akbar established a record office. The example of the Emperor must have been contagious for the Rajput Princes who for the particular reasons pointed above were at that time equally interested in historical pursuits—L. P. Tessitori *Progress Report of Bardic & Historical Survey of Rajasthan for 1917* Appendix I Page 27

(ख) It is natural that there before an Emperor who was ever ready to lend an interested and benevolent ear to the stories beliefs and disputes of his subjects the Princes of Rajputana brought all their mutual rivalries and their controversies about pre-eminence and seniority and each tried to back his claims with pedigrees of his family and with such stories as tended to add prestige to it. In doing so they served a double purpose asserting their right to a conspicuous position among their fellow Princes and commanding more consideration from the Emperor. It was thus a spirit of emulation and ambition that awoke in the Rajput Princes who gathered at the Imperial Court in interest in historical matters. Such an interest never existed before when the Princes living within the ramparts of their cities were satisfied with the panegyrics of their bards and the flatteries of their parasites and never seemed to care much about their remote ancestors nor to inquire where they came from. But now they began to inquire into the origins of their family to refresh the memory of their ancestors and the traditions concerning them and to complete their pedigrees with long lines of *parans* and names linking their progenitors with long lines of *parans* and other illustrious personages of world wide fame. It was at this time that the Rathodas connected their origins with the Gaurwalas of Kanauj—*Ibid* pages 25 26

साथ रम जान थे । उनकी रम प्रवृत्ति व फनस्वरूप जन भडारा म अनक एसे प्रावान प्रथ मुर्गित रह गये ता पयत्र कनी उपरलष नहीं । रामो-शय की प्रमिद्धि के साथ जन न उमका भी मप्रहाण किया । अरथ ही इमक लिए उनने भाग म महायता ती हागा । इस प्रकार जन मप्रहालयो म गमा व लघु और मध्यम रूपान्तरा की अनक प्रतियां मुर्गित रह गयी हैं ।

(ग) कहते हैं कि गार्हापह अन्तर को अतिहास विद्या र माय पूरा प्रम था और उमका आनानुमार उमक प्रधानमन्त्री अकुनफजल न राजपूत बना का हाल निवना आरम्भ कर प्रत्यक्ष राजवणी गमा को अपनी वग-भरम्परा का अतिहास उपस्थित करल का बहा । राजा-महाराजा तो उमका विनकुल भूत हुए थे —हने अपन-अपन वटन व चारण भाग को ताकीर की कि हमारा म्याने गल्पति म आज तक की निम्नवाजा । परन्तु जब व स्वय नै अमान थे ता बननाल क्या ? उस वक्त कुछ ता वग-भरम्परागत दत कथाजा जनश्रतिया और निस्स-वहानियो के आधार पर और विगपन कपित बात निम्नकर ददी गयी । आदिने अक्बरा म दी हुई वगावन्धिया भी रहु-नी ही हैं । (रामनागयण दूगल द्वारा अनुवाति मुहणान नणमा की म्यात सड १ पृष्ठ १६ पर सगादकीय पाठ टिप्पणा)

पृथ्वीराज-रासो के रूपान्तर

(क) चार रूपान्तर

रासो के चार रूपान्तर उपलब्ध हुए हैं जिनको बृहद मध्यम लघु और लघुतम नाम दिये जा सकते हैं—

(१) बृहद रूपान्तर

इस रूपान्तर की प्रतिया प्रधानतया उदयपुर राज्य में मिली हैं। अद्यत्न भी वही-वही पूरा जयवा अपूर्ण प्रतिया देयन में जाती हैं। काशी की नागरी प्रचारिणी सभा में सवत १६४० या १६४२ की जो प्रति वतायी जानी है वह दसी रूपान्तर की है।^१ बंगाल एशियाटिक सोसाइटी तथा सभा द्वारा प्रकाशित सस्करण भी इसी रूपान्तर के है।

इस रूपान्तर की श्लोक-संख्या (ग्रन्थाग्रय) लगभग ३०००० है और श्लोक संख्या लगभग १२०००^२। इसमें अध्यायायों की प्रस्ताव कहा गया है वहाँ-वहाँ समय (समयों संख्या) भी। सभा द्वारा मुद्रित सस्करण में शीपकी

^१ इस प्रति का सवत (१६४०) अगुद्ध पटा गया है। हमारी समति में उस १७६० पढ़ना चाहिए। श्री मानोचाल मनाग्या इस प्रति को १८७६ का वताते हैं पर उनका कथन ठीक नहीं है। बृहद रूपान्तर की अर्थात् प्राचीन प्रतिया के समान इसमें भी ६५ श्लोक हैं और प्रत्येक श्लोक में उनके साथ इसका समानता है। अतः इसका विधि-बाल महाराणा अमरसिंह का १७६० वाला प्रति के पूर्व ही हाना चाहिए। मनारियाजी ने सभवतः किसी दूसरी प्रति का दिया है। श्री अग्रचंद नाहटा ने इस प्रति का दिया है। उनके अनुसार १६ और ० के अक्षरों का स्पष्ट है पर ६ का अक्षर सन्दिग्ध है। उनकी समति में भी वह ७ ही हाना चाहिए।

^२ विभिन्न प्रतिया में विभिन्न संख्याएँ दी हैं। ग्रन्थ-संख्या जहाँ एक प्रति में २०,७०६ टा गयी है वहाँ दूसरी प्रति में ६१,००० के लगभग बनायी गयी है। इन दोनों ही प्रतिया में सङ्ग-संख्या ६५ है।

म प्रायः समय का, और पुष्पिकाओं में प्रस्ताव का प्रयोग हुआ है। प्राचीनतम प्रतिमा में प्रस्तावों की संपूर्ण संख्या ६५ है। महाराणा अमरसिंह द्वितीय वाली प्रति में ६६ प्रस्ताव हैं।^१ मुद्रित प्रति में प्रस्ताव संख्या ६८ है।^२ मुद्रित प्रति के जन्म में परिशिष्ट रूप में दर्शा हुआ महान्या समय राजा की किसी प्राचीन प्रति में नहीं मिलता।

गृहद रूपान्तर के संग्रह (अर्थात् संग्रह और परिवर्धन) का काम उदयपुर के महाराणाओं के आश्रय में महाराणा जगतसिंह के राज्यकाल (सं १६८८ में १७०६) में हुआ। महाराणा अमरसिंह द्वितीय के राज्यकाल (सं १७५२ में १७६७) में उस अंतिम रूप लिया गया। महाराणा अमरसिंह वाली प्रति का प्रतिलिपि कागस १७६० भाषा टुकण ६ मोमवातर है।

मगरनी भण्डार (उदयपुर) में विद्यमान सं १८६१ की प्रति के जन्म में निम्नलिखित पत्र जाय है (य पद्य कुछ और भी प्रतिमा के जन्म में पाये जाते हैं) —

(१) मित्रि पक्कज मन उत्तमि करद वागत् वातरना ।
 काटि कवी वा जलह कमल कटिक तें करना ॥
 रति निधि मग्ग्या गुनित कहे कक्का कवियान ।
 इह थम सखनहार भेत् भेद साइ जान ॥
 न कट मथ पूरन करय जन उडया दुप ना रहय ।
 पानिय जतन पुस्तक पवित्र निर्यसलवक बिनती करय ॥

(२) गुन मनियन रस पात् चद उबियन कर सिद्धिय ।
 धर गुनी त तृष्टि मद कवि भिन भिन विद्धिय ॥
 दम दम विक्वगिय मन गुा पार न पावय ।
 उद्दिम करि मनवत जान विन आनय आवय ॥
 चिपकाट गन अमरमधप हित श्रीमुख जायस दयो ।
 गुन वान वीन गग्नात्तयि लिगिय रामो उद्दिम कियो ॥

^१ प्राचीन प्रतिमा का अमरसिंह वाली महाद्य प्रस्ताव कम प्रति में दर्शाया गया प्रस्ताव के अन्तर्गत हा गया है और निर्माणित ५ प्रस्ताव दर्शाये गये हैं—(१) भाषाना जाजानुवाह (२) पन्मावता (३) शाना-व्या (४) दीपावती कथा (५) पृथ्वीराज विवाह ।

^२ इसमें प्रस्ताव महाराणा अमरसिंह वाली प्रति के अनुसार ही हैं कवन परन्तु प्रस्ताव कनबज प्रस्ताव के अन्तर्गत हा गया है जसा कि पाद्य की कुछ प्रतिमा में भी दर्शा जाता है ।

श्री श्यामसुन्दरदाम अगरचन्द नाहुटा आदि कई एक विद्वान् रासो क वृहत् रूपांतर का उद्धारक और सश्राहक महाराणा अमरसिंह द्वितीय (१७५५-१७६७) का नहीं किन्तु महाराणा अमरसिंह प्रथम (म १६५३-१६७६) का मानत है। पर रासो क वृहत् रूपांतर का जा प्रतिमा मित्री हैं उनम स कई म १७३१ क पूर्व की नहीं है। महाराणा अमरसिंह क नाम म पायी जान वाता प्रति म त्रिपिनार स्पष्ट ही म १७६० दिया हुआ है। म १८७६ की वाता की राजकीय प्रति क अंत म लिखा है—

जाय रासो रा पुस्तक लिखाया था महाराणाजी श्री श्री श्री श्री अमरसिंह जा लिखाया छ सवत १७६० रा माघ वदि ६ नामवार र दिन लिखाया थी जा पुस्तक घणा मुद्र छ जणी पुस्तक के प्रमाण था हजूर यी पुस्तक लिखायी।

श्री गंगाप्रसाद कमठान माहित्य मन्त्रालय म प्रकाशित एक नय म लिखन है कि मरठान अमरसिंह क श्रयागार म जा रासो की प्रति है जम ऊपर उदघृत द्वितीय पद्य की अंतिम दा पत्तिया जय प्रचार है—

चित्रनाम अमरा द्वितीय श्रप हित श्रीमुख आयस दयो।

गुन दिन बिन करणा उत्थि लिगि रामो उद्दिम बियो ॥

श्री अगरचन्द नाहुटा का एक प्रति म अमरम श्रप' क स्थान पर 'जगतेम श्रप' पाठ भी मिला है जिसम यदि यह पाठ शुद्ध हो ता यही सूचित हाता है कि रासो क मग्रह का काय महाराणा जगतसिंह (म १८८ म म १७०६ तक) क काल म आरम्भ हा चुका था और अमरसिंह द्वितीय क काल म भी चालू रहा।

उत्थपुर न मुगल-मसजिद का जधानता अमरसिंह प्रथम क काल म स्वीकार की थी। महाराणा का अनिच्छा हान पर भी मरठानों और मुबराज कर्णसिंह क आग्रह म समा करना पया। उसी समय म क रायराय स उत्थमान हा गय और राज्य का भार उत्थान कर्णसिंह पर डाल दिया। महाराणा कर्णसिंह का रचितान करत आठ वष का रहा। महाराणा जगतसिंह क समय म मवा का मुगल-स्वरार स मपक बना। वह उत्तर और कविया का आश्रयगता था। रासो की आर भा उमका घ्यान गया। महाराणा जगतसिंह क गामपद का निर्माण करवाकर वहा २५ बणा-बडा गिलाआ पर राजप्रगन्धि नामक गनिहामिक मन्त्रकाव्य मुद्रवाया। गनिहान-मग्रह क सश्रप म रासो क मग्रह म भी उगन रचि ली हागी। उक्त काव्य म रासो का भा उपमाय किया गया।

म प्रायः समय का और पुष्पिकावा म प्रस्ताव का प्रयोग हुआ है। प्राचीनतम प्रतिमा म प्रस्ताव की संपूर्ण संख्या ६५ है। महाराणा अमरगिह द्वितीय वाती प्रति म ६६ प्रस्ताव हैं।^१ मुद्रित प्रति म प्रस्ताव संख्या ६८ है।^२ मुद्रित प्रति क जत म परिशिष्ट रूप म छपा हुआ महावा समय रामो की किसी प्राचीन प्रति म नहा मिलता।

वृहद रूपांतर क सग्रह (अर्थात् सग्रह और पञ्चधन) का काय उत्पत्तुर क महाराणाआ क आर्य म महाराणा जगतगिह क राज्य-वात (म १६८४ स १७०६) स हुआ। महाराणा अमरगिह द्वितीय क राज्य-वात (स १७५५ म १७६७) म उम जन्तम रूप दिया गया। महाराणा अमरगिह वाती प्रति म प्रतिनिधि वात म १७६० माघ वृष्ण ६ मासवासर है।

सम्पत्ती भण्डार (उत्पत्तुर) म विद्यमान स १८६१ की प्रति क जत म निम्नलिखित पद्य जाय है (य पद्य वृद्ध और भा प्रतिया के जत म पाय जात ह) —

(१) भिन्न पक्व गन उत्पि करण कागद कातरनी ।
काटि कवी का जलह कमन कटिक ते करना ॥
इति तिथि सग्या गुणित कहै कक्का ववियान ।
इह ध्रम लखनहार भद भेन मोइ जान ॥
इन कष्ट प्रय पूरन करय जन वडया दुग ना रह्य ।
पालिय जतन पुस्तक पवित्र लिखि कक वितनी करय ॥

(२) गुन मनियन रम पोः चद कविपन कर लिद्धिय ।
छः गुनी त तुट्टि मद कवि भिन भिन विद्धिय ॥
धन तस विस्वर्ग्य मज गुन पार न पावय ।
उद्धिम करि मनवन जाम विन आलय बावय ॥
विश्वकाः राग जमरम प्रण हित श्रीमुख जायम न्यौ ।
गुन वात वीन कम्ना उत्पि निखि रामो उद्धिम त्रियो ॥

^१ प्राचीन प्रतिया का अमरगिह दिल्ली महाय प्रस्ताव तम प्रति म वर नडाए प्रमाण क जतभूत हा गया है और निम्नलिखित ५ प्रस्ताव ज गय है—(१) लाहाना आजानुवाह (२) पदमावनी (३) हाला-क्या (४) दीपावनी क्या (५) पृथ्विराज त्रिवाह ।

^२ इसके प्रस्ताव महाराणा अमरगिह वाती प्रति क अनुसार ही है कवल पर रिलु प्रस्ताव कनवन प्रस्ताव क जतभूत हा गया है जना नि पाठ की कुछ प्रतियो म भी दखा जाता है ।

श्री श्यामसुन्दरनाम जगरच्चन्द्र नाट्य आदि कई एक विद्वान् रामो क वृहत् स्पात्तर का उद्धारक और मग्राहक महागणा अमरगिह द्वितीय (१७५५-१७६७) का नहीं किन्तु महागणा अमरगिह प्रथम (म १६५३-१७७६) का मानत है। पर रामो क वृहद स्पात्तर का जो प्रतिया मिना हैं उनमें म काई म १७२१ क पूव का नहीं है। महागणा अमरगिह क नाम म पायी जान गानी प्रति म त्रिपिकाल स्पष्ट ही म १७२० दिया हुआ है। म १८७६ की गाना श्री राजकीय प्रति क ज्ञ म लिखा है—

जाम गमा ग पुस्तक लिखाया था महागणाजा श्री श्री श्री श्री अमरगिह जा लिखाया छ मवत १७६० ग माघ वदि ६ मामवार र दिन लिखाया था जा पुस्तक घणा मुद्र छ जणा पुस्तक र प्रमाण श्री हजर यौ पुस्तक लिखायी।

था गगाप्रसाद कमगान साहित्य-मन्त्र म प्रकाशित एक नव म लिखन है वि मरदार उमरगवमिह क ग्रन्थगार म जा गमा श्री प्रति है उनमें ऊपर उदधुत द्वितीय पक्ष की अन्तिम दा पत्तिया उम प्रकार है—

चित्रराज अमरा द्वितीय अथ हिन श्यामुग जायस दयो।

गुन तिन तिन कग्गा उन्धि लिगि रामो उद्दिम कियो ॥

था अगरच्चन्द्र नाट्य का एक प्रति म अमरगिह अथ क स्थान पर जगतस अथ पाठ भा मिला है जिसमें मन्त्र यह पाठ मुद्र हो तो यही सूचित होना है कि रामो क मग्राहक का काय महागणा जगतगिह (म १६८५ म म १७०६ तन) क काल म आरम्भ हा चुवा था और अमरगिह द्वितीय क काल म भी चालू रहा।

अथपुर न मुगत-मग्राहक का जरीनता अमरगिह प्रथम क काल म स्वाकार की थी। महागणा का अनिच्छा हान पर भी, मरदारग और युवराज कर्णसिंह क आग्रह म एमा कग्ना पना। उमो समय म क राज्यकाय म उगमीन हा मय और राय का भार उगान कर्णसिंह पर छाट दिया। महागणा कर्णसिंह का रायकाल कर्णसिंह आठ वष का रहा। महागणा जगतगिह क समय म मग्राहक का मुगत-मग्राहक म मगर कना। वह उगार और कविया का जाश्रयगता था। रामो का भार भा उमका ध्यान गया। महागणा जगतगिह ने रामगिर का निर्माण करवाकर वहाँ २७ बर-बडी गिलाशा पर राजप्रगम्नि नामक गतिहासिक महाकाव्य मुद्रवाया। इतिहास-मग्राहक क मवध म रामो क मग्राहक म भी उगन क्वि ला हाणी। उनत काव्य म रामो का भी उपयोग किया गया।

रामो के निर्माण का काम इमक पदवान भी चालू रहा और कई एक नय खटा की रचना हुइ पर व गसो क अग नही बन पाय । उनकी स्वतन्त्र प्रतियाँ स्थान-स्थान पर पायी जाती हैं जिनकी पुष्पिकाआ म उह पृथ्वीराज गमा क खड बताया गया है । एम नय खडा म मझावा खड पीर खड (अजमेर-खड) ओरछा खड आदि गिनाय जा सकत हैं । दा नवीन बनवज-खड और महोवाखड भी तयार हुए । वीरभद्र गी भविष्यवाणी भी तयार हुइ जो रामो की बहुत पीछे की कुछ प्रतिया क अंत म जाडी दुई मिलता है ।

महागणा जमरामह क पूव की प्राचीन प्रतिया क नाम इस प्रकार है—

- (१) गलड की प्रति—अपूण केवल अंत क १२ खड लिपि-बान म १७ १३२ ।
- (२) भीडर की प्रति—अपूण कवन अंत के २३ खड लिपि-बाल म १७३६ ।
- (३) नागरी प्रचारिणा मभा का प्रति—लिपि-बान म १७६० ।
- (४) कागाड की प्रति—लिपि बाल म १७६६ ।
- (५) दिद्याभवन काकराली की प्रति—लिपिबाल १७६६ १७५० ।
- (६) श्री दशरथ शमा का प्रति— लिपि-बाल नही लिया है ।

(७) मध्यम रूपान्तर

इमकी प्रतिया प्राय जन भण्डारा म पायी गयी हैं । इमकी एक प्रति श्री अजरकद गहना क अभय जन प्रयालय म दूसरी अवाहर के माहित्य सदन क पुस्तकालय म तीसरी बाबानर क वर उपासरे क बृहद नाल भण्डार म चौथी पजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय म पाँचवी उज्यपुर क प्रतापसभा क पुस्तकालय म और छटा एक अपूण प्रति अभय जन-प्रयालय म है । पहली म खण्डा का सख्या ६६ पात्रवी म ६५ दूमरी म ६२ तीसरी म ६२ और चौथा तथा छठी म ६१ है । पिछली टा प्रतिया म दूसरी प्रतिया का अन्तिम खण्ड पृथ्वीराज स्मृतन पातिमाह मरण (बृहद रूपान्तर का वानवध प्रस्ताव) नहा है ।

उर्जागत पात्र प्रतिया म बृहद रूपान्तर क बनवज-खण्ड क स्थान पर आर मण्ड तथा बची बडाइ प्रस्ताव क स्थान पर चार खण्ड है । पर एम रूपान्तर की तीन एसा भी प्रतिया प्राप्त हुई है जिनम एन आठ और चार खण्डा क स्थान पर बृहद रूपान्तर की अंतिम एक खण्ड हो है । एनम से पहला प्रति खण्ड का मयन एगियात्रिभ मोसाटा म, दूसरी बीबानेर क अनूप मस्मृत पुस्तकालय म तथा तीसरी भीडर (उज्यपुर) के यति माणिक्यमञ्चि क सग्रह म है । तामरी प्रति अपूण है । पृथ्वीराज हम्नेन पातिमाह मरण वाला खण्ड लानन वाली प्रति म भी नही है । अनूप मस्मृतन-पुस्तकालय वाली प्रति बृहद

॥ एषि श्रीगोसायनमः ॥ श्रीगारदासनमः ॥ ॥ इत्यत्र उमंगन्तुलनश्रुतविपरधुम
 न्योत्रिषट्मापदभिर्यत्रिषड्वरनपत्रउभयत्रुभ्यो ॥ उकरुनरगचारद्वयत्रुक्तनि ॥ उल्ल
 इतरिरसदरसनपरसरभिर्यत्रिषड्वरनपत्रउभयत्रुभ्यो ॥ उकरुनरगचारद्वयत्रुक्तनि ॥ उल्ल
 नासिगसंभ्रजैवेदधरि ॥ त्रियुननायचिंङ्कचकानखलत्रेस्तुपत्रठशिवुचाधुमत्रुभ्यो ॥
 त्रुक्तन्योचार्थद्विभि ॥ त्रिभुक्तुफलउदयडात्रुस्तुमस्तुमधुवनि ॥ उल्लेनबाधुपनी ॥
 ॥ न्नादत्रुदतजीवनकरियाकलिजाइनलेगै ॥ त्रिकत्रुहिसात्रिमहिआगत्रिधरियात्रु ॥ उद
 सुजंगप्रयाताप्रपञ्चुजैग ॥ सुधारा ॥ अहनौ ॥ जिनेमाभ ॥ एकत्रुनकंकहवा ॥ उतलि ॥ इमिदमंज
 वनेमो ॥ जिनेविमुरथेगबलीमंत्रसेसा ॥ ववेदेदबंभेदरी ॥ कित्रुजाय ॥ जिनेधुमसाधुमंजला
 मा ॥ त्रिनारथी ॥ न्यासतारथलाभा ॥ जिनेउतपस्थसावथसाया ॥ चवेसुष्यदेवयरी ॥ मत्र
 पाय ॥ जिनेत्रप्रेथव ॥ उरनसगया ॥ नरेरुवपंग ॥ श्रीहृपंतारा ॥ नलेरायकवेदिकेवपद्वार
 ॥ उदंका ॥ लदा ॥ मखना ॥ माह्वबधुं ॥ जिनेसेगब ॥ योजनो ॥ जप्रबंध ॥ सतक ॥ ममात्मी ॥ उलात्कि
 विज्ञा ॥ जिनेउदितारंगंग ॥ गामरिवा ॥ जयेदन ॥ इवकई ॥ कुरियाया ॥ जिनेकेवले ॥ कित्रिनो
 विंदगायं ॥ खसंमत्रकवी ॥ लघुबंदकव ॥ जिनेदरा ॥ सियादे ॥ विसा ॥ उरबी ॥ कबी ॥ कित्री
 उकत्री ॥ उदिकनी ॥ तिनंका ॥ वधुं ॥ कवि ॥ वदने ॥ रकी ॥ इना ॥ पल ॥ किश्चि ॥ बड ॥ वात ॥ का ॥ उ
 गानि ॥ उगा ॥ निनाम ॥ अफिम ॥ त्रिर ॥ सेम ॥ बला ॥ उद ॥ कनि ॥ त्रि ॥ गला ॥ या ॥ य ॥ य ॥ कर ॥ इ
 नत्रो ॥ एकत्रो ॥ कनधु ॥ राय ॥ जोय ॥ मि ॥ कर ॥ कं ॥

रूपान्तर से प्रभावित है। उसके अन्त में वृहद रूपान्तर के कई एक लक्षण भी लिये हुए हैं।

उक्त आठों प्रतिमा में लन्दन वाली प्रति विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उसका लिपि-काल स १६६२ है जिससे वह रासो की प्राचीनतम पत्तियों में ठहरती है।

इन विविध प्रतिमा का आरम्भ एक-सा नहीं है। नाहटाजा वाली और अवाहर का प्रतिमा लघु रूपान्तर की भाँति—

छत्रजा मद गध घ्राण सुजधा अत्रि भीर आच्छादिना
 म्म साटन पद्य स आरम्भ हाती है जत्रकि चान भण्डार पजाब लदन और
 अनूप मस्वृत पुस्तकालय का प्रतिमा लघुतम रूपान्तर की भाँति—

प्रथम सु मगल मत श्रुन बीय

इस वधुआ (वस्तुक रूपा) पद्य में आरम्भ हाती है। नीडर का प्रति का आरम्भिव अश खण्डित है।

इस रूपान्तर की ग्रंथ सरया लगभग १०००० प्लैक प्रमाण होती है।

(३) लघु रूपान्तर

इसकी प्रतिमा बीकानेर तथा श्यामावाटी (जयपुर राज्य) में मिली हैं। तीन प्रतिमा बीकानेर के अनूप मस्वृत पुस्तकालय में एक माताचन्द खजानची के संग्रह में और दो जगरचन्द नाहटा के अभय जन ग्रंथालय में है। नाहटाजी का नाम एक प्रति फतहपुर (श्यामावाटी) में सन् १७२८ की लिखी हुई है। अनूप मस्वृत-पुस्तकालय की एक प्रति का लिपि-काल स १६७९ के पूर्व का माना चाहिए। इसके अतिरिक्त लन्दन की एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में भी दो प्रतिमा हैं जो सम्भवतः इस रूपान्तर का हैं।

इस रूपान्तर का श्लोक-संख्या ३२०० और ६००० के बीच में होनी चाहिए। इसमें १८ गण्ड है। इस रूपान्तर का संग्रह आमर (जयपुर) के प्रसिद्ध महाराजा मानसिंह के छोटे भाई सूरसिंह के पुत्र चन्द्रसिंह ने करवाया था।^१ ऐसा जान पड़ता है कि रासो के संग्रह-कार में बीकानेर के महाराजा राससिंह ने भी विचार रस लिया था।

^१ इस रूपान्तर की प्रतिमा के अन्त में ये पद्य मिलने हैं—

(१) प्रथम वर उद्धरिय वध मच्छत्र तनु विजउ ।
 दुनिय चीर वाराह धरनि उद्धरि जमु निजउ ॥
 कौमार्ग्वि भद्रस घम्म उद्धरि सुर रक्वियज ।
 दूरम सूर नरस हिद हद उद्धरि रक्वियज ॥
 ग्युनाथ चरित हनुमत त्रिज भूष भाज उद्धरिज त्रिम ।
 त्रियिगत्र मुजमु त्रिवि चर त्रिज चन्द्रसिंह उद्धरिज इम ॥

(८) लघुनाम रूपांतर

दमका दा प्रतिया मिली है। पहली गुजरात क धारणाज गाव म प्राप्त हुई है। यह बीवानर के महाराजा रायसिंह के डाट भाद भाण क पुत्र भगवानदाम क पठनाथ लिखी गयी थी। इसका लिपि कान म १६६७ है। इस प्रकार यह रामो की सबसे प्राचीन नात प्रति टहरता है। इस रूपांतर की स्थापना मर्या लिपिकार न १३०० टा है। यह आयाया या खण्ण म विभक्त नहा है। इसम प्रधानतया दा ही प्रसगा का विस्तार स बणन है—(१) सयागिता की क्या और (२) पृथ्वीराज और गाग का युद्ध। यह प्रति जय मुनि श्री जिनविजयजी क पाम है।

दूमग प्रति श्री जगरबन् नाहा क द्वाग प्रका म आया है। यह प्रति भा मुनिजा के मग्रह म है। इसका लिपि कान म १६६७ है।
युद्ध स्थाना पर साधारण जतर हान पर भा दाना प्रतिया विषय की दृष्टि स परस्पर बहुत समानता रखती हैं।

(२) महागज त्रिप मूर मुअ कूरम चद उदार।
रासी प्रथीयराज कौ राख्यो लगि ससार ॥

मूरसिंह और उसके पुत्र चंद्रसिंह (चाणसिंह) का उत्तरव नणसी का रयात म है। नणसी लिपता है—मूरसिंह राजा भगवानदासरा। बडो रजपूत हुवा। गीवरीरो बाट अक्बर पातसाह बरायो त मूरसिंहरो डरा बाटरी नीव जायो तठ हलो मू डरा मूरसिंह न उठाव। तर पातसाह का वाका किया पिण मूरसिंहनू क्याही न बह्या। बडा आलाइमिब रजपूत हुवो। पातसाह अक्बरर क्या चाकर हुवा। माट राजारी बटो जमातबाई परणाथी था जतमिधरी बहन मू साथ बटो। अक्बर मूरसिंह भगवानदासात सादम मुततान बड म्याळरा हुयो त म स्याळराट नगरबाट न जटव बीच छ। उण ठो मू गुजरात पण नडी छ। मा म्मा मुततान पातसाह हमाऊरा पाता छ हदायलरो भताजा छ जमकरी क कमराग बटो छ। तिणमू वट हुया। मूरसिंह सादमन मागिया न मूरसिंह कुसळ गया।
चादसिंह मूरसिंह रो।

नणमी की म्यान क हिदा अनुवाद म मूरसिंह की जय मूरजमिह आया है। राजस्थानी भाषा म मूरज मूर सूजा एक-दूगरे क स्थान पर समान रूप म प्रयुक्त हान है।

(ख) विविध रूपांतरों के खण्डों की तालिका^१(१) चारों रूपांतरों में पाये जाने वाले खण्ड^२एक खण्ड की संख्या १० है।^३

(१) आदि पद्य	(१) ^४	(२) दिल्ली किल्ली कथा	(३) ^५
(२) जनगणालिखित-गीतान	(१८) ^५	(४) पद्म पत्र विघ्नम	(१६) ^६
(३) सजोगिता नम आचरण	(५०) ^७	(६) कथाम वध	(५७)
(४) पद्म रत्न वणत	(६१) ^८	(८) कनकज-कथा	(६२) ^९

- १ (क) इस तालिका में खण्डों की संख्या साधारणतया महाराणा जयसिंह की १७६० वाली प्रति में अनुसार रखी गयी है कवन समझा दिल्ली महाराज-खंड का जो इस प्रति में बना लगभग खण्डों के अंतर्गत है प्राचीन प्रतिमा में अनुसार अलग दिगाया गया है जिसमें मपूर्ण खण्ड संख्या ६८ के स्थान पर ७० हो जाती है। जम में भी जासटक चक्र शप-खण्ड का प्राचीन प्रतिमा का अनुमरण करने हुए धीरे-धीरे-खण्डों के पीछे रखा गया है।
- (ख) इन रूपांतरों के जो खण्ड छाने रूपांतरों में भी पाये जाते हैं वे व्याख्या नहीं आय हैं किन्तु उत्तरांतर में लिखित हो गये हैं, यहाँ तक कि कई खण्डों का छाने खण्डों में दो चार जयवा एवाच पद्यों के रूप में ही पाये जाते हैं। साथ ही कई रूपांतरों के अलग खण्डों छाने रूपांतरों में दूसरे खण्डों के अंतर्भूक्त भी हो गये हैं। कुछ अवस्थानों में वृहद् रूपांतरों के खण्डों धीरे रूपांतरों में इन खण्डों में विभक्त भी हो गये हैं।
- २ लघुतम रूपांतरों में खण्डों में विभक्त नहीं हैं अतः उसमें खण्ड नहीं हैं पर वृहद् रूपांतरों के इन खण्डों के प्रथम उभय-दिशा-न किमी रूप में आये हैं।
- ३ वृहद् रूपांतरों के इन १० खण्डों के स्थान पर मध्यम रूपांतरों में २० और लघु रूपांतरों में १४ खण्ड हैं।
- ४ लघु रूपांतरों में यह १० खण्डों में विभक्त हैं। प्रथम में मंगलाचरण (और कथावता प्रथम) तथा दूसरे में कथावनी है। दूसरे खण्डों में वृहद् रूपांतरों के लिखित लिखित (२) जनगणालिखित (१८) तथा पद्मकथा (२६) खण्डों के प्रथम भी हो गये हैं।
- ५ लघु रूपांतरों में ये प्रथम वृहत् में १५ में कथावनी तथा द्वितीय खण्डों में आये हैं। लघुतम रूपांतरों में इनका कवन और भा अतिरिक्त लिखित है।
- ६ लघु रूपांतरों में ये ताना प्रथम एवं ही खंड में आये हैं। मध्यम रूपांतरों में ये कथावनी-वध-खण्डों में अंतर्भूक्त हो गये हैं।
- ७ वृहद् और लघुतम रूपांतरों में यह प्रथम कनकज-कथा के पूर्व आया है पर लघु और मध्यम रूपांतरों में धीरे-धीरे प्रथम के पश्चात्। मध्यम रूपांतरों में इन कनकज खण्डों के पर लघु रूपांतरों में धीरे-धीरे प्रथम कथावनी का अंग है।
- ८ मध्यम रूपांतरों में यह छह छाने खण्डों में विभक्त है और लघु रूपांतरों में छाने खण्डों में।

(ग) चारो स्पातरों के खंडों की तुलनात्मक तालिका

प्रस्ताव संख्या	मध्यम स्पातर		तनु स्पातर		विशेष विवरण
	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	
१। जति पत्र	१	शक्ति प्रवृत्त मगनाचरण बगावडी मगनाचरण तथा बगावडी मगना जम बचा	१	मगनाचरण दगावनार बगावडी दपनाम मिन्नी राय्यामिपव दगावनार	तनुतम स्पातर प्रसंग है या नहीं ✓ × ✓ × ✓ ×
२। दगावनार वजन	२	दगावनार वजन	[१]		मध्यम स्पा. की १७६२ की प्रति म खंड १ व स्पात पर न खंड है तनु स्पातर म यह प्रसंग खंड १ म आया है
३। दिना क्रिया वजन	०	गजा म्वजन बचा क्रिया क्रिया बचा	[२]	[उत्पन्न मात्र]	× ×
६। चाहाना आजानुबाहु	/	/	×	×	मध्यम स्पा. की १७६२ का प्रति म है
१। बट आव पट वजन	×	/	×	×	
६। आक्टर वाग वरगन वजन	×	×	×	×	

प्रश्न संख्या

प्रश्न नाम

१ नागरराज तथा वज्र

२ ममाती मुगुन कथा

३ दुग्गा या चित्ररत्ना या चानगाह ग्रन्थ

४ राजा मट्ट वंश आगा मुग्गान सूत कथन चित्ररत्ना रत्न

५ भारारस गा जुद्ध

६ गामत विा

७ गलग युद्ध

८ पातगाह ग्रन्थ

९ दशिनी चिराह रत्न

खंड संख्या

६

७

८

९

११

१२

१३

मध्यम स्थापना

ग्रन्थ नाम

नाहरराज पगजय
पृथ्वीराज विजय
पृथ्वीराज विवाह रत्न
मुगुन पराजय
पृथ्वीराज विजय कथन
गागी पातिगाह पृथ्वीराज
प्रथम जुद्ध वन
(१२ प्रतिया म नही है)

भारारस भीमगदे पगाय
मनि कमास विजय
पामार मत्रय रत्न
पातिगाह ग्रन्थ

दशुनी विवाह गुर गुरी
वाय रूतता मयागिता
पातित्र

लघु स्थापना

खंड नाम

खंड संख्या

<

<

<

<

<

<

<

<

<

संयुक्त स्थापना

प्रसंग है या नहीं

<

>

<

<

<

<

<

<

<

विषय विवरण

म० सं० की १७२६
६०३ी प्रति म अत
म अलग से दिया है

प्रस्ताव संख्या	बृहद रूपान्तर	मध्यम रूपान्तर		न्यु रूपान्तर		संपुल्लम रूपान्तर प्रसंग है या नहीं	विशेष विवरण
		खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम		
१५	प्रस्ताव नाम						
१५	मुगन जुड कथा वणन	१५	आवृत्त मानकी मारगद दृग्मन मुगन ग्रहण	✓	✓	×	
१६	पुनीर लहिमो विवाह वणन	५	भूमि मुपन मगुन कथा पृथ्वाराज युद्ध विजय धनागम पानिमाह ग्रहन	✓	✓	×	
१७	भूमि स्वान	६	श्रिनी गज्याभियेक जुड विजय पातिमाह पराजय वामुडगदहस्तन पानिमाह ग्रहन	[५]	श्रिनी गज्याभियेक	✓	← न्यु और संपुल्लम रूपान्तर म ग्रह प्रसंग वदुन मक्षय म है
१८	अनगपान श्रिनी दान						
१८	माथो भाट पातिमाह ग्रन्थ राजा विजय						
२०	पन्मावती विवाह पानिमाह ग्रहन मोबन	२३	ममरमो पियाववरि विवाह वणन	✓	✓	×	
२१	प्रिया विवाह वणन						
२२	हाती कथा						
२३	दीपमानिका पत्र						

प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	मध्यम स्पातर		उपु स्पातर		उपुतम स्पातर	विशेष विवरण
		खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम		
२४	सट्टे वल मध्य आसट्टे रमण घन मप्रहण, पाति मात वधन, पन वया	[५]		[२]	[द्रव्य लाभ]	✓	
२५	समिश्रता वषा	२२	समिश्रता विवाह	×	×	×	
२६	दवगिरि पुढ वणत	×	कुढ विलय	×	×	×	
२७	रवा म प्रमिमाह प्रहन	×	×	×	×	×	
२८	अलगपाल किला आम मन वृध्वीगाज जुग बढी सप मरत	×	×	×	×	×	
२९	पप्पर नगी की सडाई वहा पतिमाह प्रहन	×	×	×	×	×	
३०	ननागी पात्र वणत	१६	राठौर निहडर किल्ली आगमन वणती पात्र वषा वणत	×	×	×	

प्रस्ताव संख्या	वृहद् रूपान्तर	मध्यम स्तरांतर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर प्रसंग है या नहीं	विशेष विवरण
		खंड	खंड नाम	खंड	खंड नाम		
		संख्या	संख्या	संख्या	संख्या		
३१	पीपा पातिमाह ग्रहन	१६	परिवार पीप जुड़ विजय पीप हस्तन गोरी ग्रहन	×	×	×	
३२	बरहुरा युद्ध, राबर समरमी पृथ्वीराज विजय इद्रावती याह मामत विज	×	×	×	×	×	
३३	जतराइ पातिमाह वधन	×	×	×	×	×	
३४	वागुरा विज	×	×	×	×	×	
३५	हमावती विवाह	२४	रणयभोर हमावती विवाह वजन	×	×	×	
३७	पटाडराम पातिमाह ग्रहन	×	मामत राजा जमुना गते वरण दूत मामत उभयो युद्ध वजन	×	×	×	
३८	वरण कथा	१४					

शुद्ध रूपांतर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपांतर		विशेष विवरण
प्रस्ताव गण्यता	प्रस्ताव नाम	वर्ड गण्यता	वर्ड नाम	सं सग्या	खंड नाम	
३६	नीला भीम विजय गोम वधत			X	X	X
४०	पञ्च बद्धराहा द्यागा पञ्चूत चातुर्ग समागम, पञ्चूत विजय वन् द्वाराकागमन, स्व मिलन	X	X	X	X	X
४३	परस्पर वाद जुलन मदरु रत्न मध्य वामाग पातिगाह प्रन्त	X	X	X	X	X
४४	नीलाराड भीमग वध सजोगिता पूव जम वधा	X	X	X	X	X
४५	सजोगिता पौविजयमगल					
४६						

सजोगिता उत्पत्ति
द्विज द्विजी सवाद
मधव गधर्वा सवाद

भोराराड भीमग वधत
सजोगिता पूव जम वधा
विजयपाल द्विविजय
ररण सजोगिता उत्पत्ति
मन्तवृद्ध वभती शुहे
मन्त वला पटनाय दुज
दुजो मधव गधर्वा सवाद

विशेष विवरण

प्रस्ताव संख्या	वृहद रूपान्तर	मध्यम रूपान्तर		वृहद रूपान्तर		समुत्तम रूपान्तर प्रमाण है या नहीं
		वर्ड संख्या	वर्ड नाम	वर्ड संख्या	वर्ड नाम	
६७	मुक्त वणन	२५	बाबुराराय वधन	५	यज्ञ विध्वंस पृथ्वीराज वरणाथ सजायिता नियम	× × ✓ ✓ × × × × × ✓
६८	बाबुराराय वधन	२५	बाबुराराय वधन मयायिता हूती परस्पर वार्ता	५	यज्ञ विध्वंस पृथ्वीराज वरणाथ सजायिता नियम	× × ✓ ✓ × × × × × ✓
६९	यज्ञ विध्वंस					
७०	मयायिता नम आचरनी					
७१	हामीपुर प्रथम युद्ध वणन	१७	पग मामत युद्ध	५	कामास वध	× × × × × × × × × ✓
७२	द्वितीय हामीपुर युद्ध वणन	१८	जबद ममर युद्ध वणन	५		
७३	पञ्चम महवा युद्ध	२६	चामुड वडी	५		
७४	पञ्चम बद्धवाही पाल		मत्रि कामास वध			
७५	साह प्रहल					
७६	मामत पग युद्ध					
७७	जबद ममरमी युद्ध					
७८	चामड वडी भरल					
७९	ब्रनाटी दामो खून					
	कामास वध					

प्रश्न क्र. / प्रश्न	वृहत् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		विशेष विवरण
	प्रश्न क्र. / प्रश्न	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	
५८	दुर्गा व्रत समय	२७	राजा पानीपथ युद्धाचद वेदार संवत् पाहार हस्तौन पातिमाह महिन	५	५	५	१ ना प्र सभा के मुद्रित सस्करण में यह प्रसंग बन वज्र कथा प्रस्ताव में आया है २ लघु और मध्यम रूपान्तरो में यह प्रसंग कनकज प्रसंग के पश्चात् पृथ्वीराज के लो टने के समय वा है
५९	शिव व्रत	५	५	५	५	५	
६०	जगम माफी कथा गिर पूजा	५	५	५	५	५	
६१	पड रितु व्रत	३८	३८	३८	३८	३८	

[१३] [पड रितु व्रत]

प्रस्ताव संख्या	वृहद रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		संयुक्त रूपान्तर		विवरण
	प्रस्ताव नाम	वर्ष संख्या	खंड नाम	खंड नाम	खंड नाम	संयुक्त रूपान्तर प्रसंग है या नहीं	
६२	वनवज कथा मजागिता प्रतिज्ञा पूरन जबट दल बूरन मामत जुड दिल्ली आमन	२८	वनवज वणन जबद द्वारे सप्राप्त चद जबद सवाद चद अवाडो वणन पृथ्वीराज प्रगटन	खंड नाम	खंड नाम	✓	यहां से मुद्रित प्रति के प्रस्तावों में १ का अंतर पड़ेगा
		२९	प्रथम लयरोराय जुड वणन सयागिता विवाह	खंड नाम	जयचंद द्वार सप्राज्ञ जयचंद सवाद मजागिता विवाह	✓	
		३०	अष्टमी शुभ प्रथम दिवसे तुदिय पवार जुड वनन	[६]	अष्टमी प्रथम दिवस जुड	✓	
		३१	नवमी शनिवारे द्वितीय दिवस जुड वनन	१०	नौमी द्वितीय दिवस जुड	✓	
		३२	राजा पृथ्वीराज सोरा प्राप्त	[११]	तृथमी तृतीय दिवस जुड	✓	
		३३	दशमी रविवामरे तृतीय दिवस जुड वणन	१२			
		३४					

बृहद रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		सूक्ष्म रूपान्तर		विषय विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	
६२		३४	राजसू जय विध्वंस, वनवज्रत दिल्लीपुर आ गमन, सजोगिता पाणि ग्रहण, राज सुत चरित्र	१३	दिल्ली आगमन धीरेण साहाबदी नियह पट रिलु वणन	सूक्ष्म रूपान्तर प्रसंग है या नहीं
६३	सुर विनास वणन	३६	धीर पुडोर बुढ विजय	X	X	✓
६४	धीर पुडोर पातिसाहि ग्रहन मोगन, धीर वयन	३७	धीर हस्तेन पातिसाहि ग्रहन धीर पुडोर वध	X	X	X
६५	राजा आगेट चप भ्राप	X	X	X	X	X
६६	प्रथिरान विवाह	X	X	X	X	X
६७	गमरसो दिल्ली गहाय	[X]	X	X	X	X

← सूक्ष्म रूपान्तर
में यह प्रसंग
खंड १३ मआया है
पिछली प्रतिको म
यह खंड धीर
पुडोर खंड के
पहले आया है

मुद्रित और कृति
में यह प्रतिको
म यह खंड बडी
लडाई के अंतगत
है। यहां से मुद्रित

वृद्ध रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		तपु रूपान्तर		तपुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव मर्या	प्रस्ताव नाम	खंड मर्या	खंड नाम	खंड मर्या	खंड नाम	प्रसंग है या नहीं	
६८	बड़ी यहाँ राजा पहल, चद निनी आगमन	३६	राजा स्वयं वया रावल समरनी आगमन चामुड राइ वध मोचन सूर सामत मत्र वणन	१४	चामुड वध मोचन मत्र सामत मत्र	✓ ✓	प्रति के प्रस्तावो म २ वा जतर पड़ेगा
		४०	जालधर देवीस्थान हा हुतिराय हुम्मीरेण बाजेन चद निरोधन पृथ्वीराज गोरी साह युद्धाय सेना समागम गूढ गृह रच ना जा नधर देवी स्थाने मदश प्रति वीरभद्र यहा वताव यागिनी सवाद पृथ्वीराज गोरी साह जुद्ध वणन समली गिघनी सजोगिताप्रे सूर सामत पराक्रम वयन वीर विभाई आगमन	१५	चद विराध गृह रचना	× ✓	
					१६	युद्ध वणन	✓
					१७	युद्ध वणन	✓

शुद्ध रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर प्रसंग है या नहीं	विकास विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम		
६८		४२	पातिसाह जुड़ वनम वीर विभाई संजोगिताग्र गुर रामत पराक्रम वणन मजोगिता सूरमडल आ गत पृथ्वीराज ग्रहन जालधर देवीस्थाने चंद वीरभद्र परस्पर वार्ता कथन चं मोगण चंद दिल्ली आगमन	१८	राजा ग्रहन चं इद्रप्रथागमन	✓	मध्यम रूपान्तर की कई एक प्रति या म प्रय की स माप्ति पृथ्वीराज ग्रहन पर ही हो जाती है
६९	पातसाह वानवध मरन राजा चं मुजग ररन परगान वणन	६३	दिल्लीत रविचंद गज्जनपुर आगत गोरी चंद परस्पर वार्ता कथन राजा पृथ्वीराज हस्तिन गोरी साहावदीन वहन	१९	सहावदीन मरण	✓	यह प्रसंग मध्यम रूपान्तर की कई प्रतियो म नहीं है
७०	राजा रनती अभिषय रनती मरन, जचं गगा सरन	X	X	X	X	X	मुद्रित प्रति म खंड नं० ६८

(घ) बृहद रूपान्तर के खंडों का विश्लेषण

बृहद रूपान्तर म सब ७० खंड हैं जिनमें म अधिकांश युद्धों विवाहों या आभेदा म सबध रखन है । इन खंडों का विश्लेषणात्मक विवरण आग दिया जाता है—

(१) युद्ध मन्वी खंड

इनका कुल संख्या ४२ है । इनमें से २५ गहाबुद्धीन म सबध रखन हैं ।

(क) गहाबुद्धीन के युद्ध

(१) जिनमें गहाबुद्धीन पृथ्वीराज द्वारा पकड़ा जाता है—

- * १ पद्मावती विवाह खंड (२०)
- † २ खट्वा वन युद्ध (धन-वधा) खंड (२४)
- * ३ रवा-तट-युद्ध खंड (२७)

(२) जिनमें गहाबुद्धीन सामंतों द्वारा पकड़ा जाता है—

- † ४ हुमन कथा (पातिमाह प्रथम जूद्ध) खंड (६)—चामुंडराय द्वारा
- † ५ सलग पातिमाह ग्रहण खंड (१३)—सलख पमार द्वारा
- † ६ माघा भाग कथा खंड (१६)—चामुंडराय द्वारा
- * ७ अनंगपाल युद्ध खंड (२८)—चामुंडराय द्वारा
- * ८ घण्टर रा गडाई खंड (२९)—कहू द्वारा
- † ९ पीपा पातिमाह ग्रहण खंड (३१)—पीपा पडिहाग द्वारा
- * १० जतगड पातिसाह ग्रहण खंड (३४)—जतराय द्वारा
- * ११ पहाडराइ पातिसाह ग्रहण खंड (३७)—पहाडराय नुवर द्वारा
- * १२ कमास पातिसाह ग्रहण खंड (४३)—कमास द्वारा
- * १३ पञ्जून पातिसाह ग्रहण खंड (४४)—पञ्जून कदवाहा द्वारा
- † १४ दुगा कथा कथा खंड (५८)—पहाडराय तवर द्वारा
- † १५ धीर पुडार खंड (६४)—धीर पुन्नीर द्वारा

(३) जिनमें गहाबुद्धीन पराजित होता है—

- * १६ खट्वा वन सुरताण चूक वरण (१०)
- * १७ पञ्जून महुवा युद्ध खंड (५३)
- * १८ हासा द्वितीय युद्ध खंड (४२)

(४) जिनमें गहाबुद्धीन की सेना पराजित होनी है—

- * कवल बृहद रूपान्तर म ।
- † कवल बृहद और मध्यम रूपान्तर म ।
- ‡ बृहद मध्यम और त्रिभु तोना रूपान्तर म ।

- † १६ हसावता विवाह खंड (३६)
 * २० पञ्चन विजयखंड (४१)
 * २१ हानी प्रथम युद्ध खंड (५१)
 (५) जिनमें गहाबुद्धीन या उसका साथ विजयी होता है—
 § २२ बटी लडाईं खंड (६८)
 * २३ रणसी युद्ध (७०)

(ख) विवाह संबंधी युद्ध

- † १ नाहरगड खंड (७)—पट्टिहाग्नी जभावती क लिए मडावर क राजा नाहडगय पट्टिहाग् (बधू पथ) क साथ ।
 † २ भारागण युद्ध खंड (१२)—पवारनी इछनी क लिए गुजरात क राजा भाना भाम (प्रतिद्वन्दी वर पथ) क साथ ।
 † ३ गणितता खंड (२५)—यात्री समिप्रता क लिए वनवज क राजा क भतीज वीरचण (प्रतिद्वन्दी वर पथ) क साथ ।
 * ४ [पन्मावता खंड (२०)—यात्रा पन्मावता क लिए कुमायू क राजा कुमात्मणि (प्रतिद्वन्दी वर पथ) क साथ ।]
 * ५ दद्रावती विवाह खंड (३३)—पवारनी दद्रावती क लिए उज्जैन क राजा भीम (बधू पथ) क साथ ।
 † ६ [हसावता विवाह खंड (३६)—यात्री हसावती क लिए चट्टरी क राजा पचायण (प्रतिद्वन्दी वर पथ) क साथ ।]
 * ७ कागुरा विज खंड (३५)—भाटनी रानी क लिए भाट क राजा भान (बधू पथ) क साथ ।
 † ८ बालुकागण वध खंड (४८) }
 * ९ सजागिता नम खंड (५०) }
 § १० वनवज खंड (६०)
 इन तीन खंडा म राठाहना सजागिता क लिए उमर पिता वनवज क राजा जयचंद क मामला क साथ युद्ध हान हैं ।
 * १ लाहाना आजानवाह खंड (४)—आरछा क राजा क साथ लाहाना का युद्ध ।

(ग) अय युद्ध

- * वनव वृहत् स्पातर म ।
 † वनव वृहत् और मध्यम स्पातर म ।
 † वृहत् मध्यम और लघु ताना स्पातर म ।
 § चारो स्पातर म ।

(घ) बृहद् रूपान्तर के खंडों का विद्वलेषण

बृहद् रूपान्तर में सब ७० खंड हैं जिनमें से अधिकांश युद्धों विवाहा या आखंडा से संबध रखते हैं। इन खंडों का विश्लेषणात्मक विवरण आगे दिया जाता है—

(१) युद्ध-मन्थी खंड

इनकी कुल संख्या ४२ है। इनमें से २३ गहाबुद्धीन से संबध रखते हैं।

(क) गहाबुद्धीन के युद्ध

(१) जिनमें गहाबुद्धीन पृथ्वीराज द्वारा पकड़ा जाता है—

- * १ पद्मावती विवाह मन्थ (२०)
- † २ खट्टू वन युद्ध (धन कथा) खंड (२८)
- * ३ देवा-लोट-युद्ध मन्थ (२७)

(२) जिनमें गहाबुद्धीन सामन्ता द्वारा पकड़ा जाता है—

- † ४ हुसन कथा (पातिसाह प्रथम युद्ध) खंड (६)—चामुडराय द्वारा
- † ५ सलख पातिसाह ग्रहण खंड (१३)—सलख पमार द्वारा
- † ६ माधा भाट कथा खंड (१६)—चामुडराय द्वारा
- * ७ अनगपाल युद्ध खंड (२८)—चामुडराय द्वारा
- * ८ घघर री लडाईं खंड (२६)—बहू द्वारा
- † ९ पीपा पातिसाह ग्रहण खंड (३१)—पीपा पडिहार द्वारा
- * १० जतराइ पातिसाह ग्रहण खंड (३४)—जतराय द्वारा
- * ११ पहाडराइ पातिसाह ग्रहण खंड (३७)—पहाडराय तुवर द्वारा
- * १२ कमास पातिसाह ग्रहण खंड (४३)—कमास द्वारा
- * १३ पञ्जून पातिसाह ग्रहण खंड (४४)—पञ्जून कडवाहा द्वारा
- † १४ दुर्गा केदार कथा खंड (४८)—पहाडराय तुवर द्वारा
- † १५ धीर पुडार खंड (६८)—धार पुडार द्वारा

(३) जिनमें गहाबुद्धीन पराजित होता है—

- * १६ खट्टू वन मुरताण चूक करण (१०)
- * १७ पञ्जून महवा युद्ध खंड (५३)
- * १८ हामी द्वितीय युद्ध खंड (५०)

(४) जिनमें गहाबुद्धीन की सेना पराजित होती है—

- * केवल बृहद् रूपान्तर में।
- † केवल बृहद् और मध्यम रूपान्तरों में।
- ‡ बृहद् मध्यम और तृपु तीनों रूपान्तरों में।

† १६ हमावती विवाह खंड (३६)

* २० पञ्जन विजयखंड (४१)

* २१ हामी प्रथम युद्ध खंड (४१)

(५) जिनमे शहाबुद्दीन या उसका साथ विजयी होता है—

§ २२ बडी लडाई खंड (६८)

* २३ रैणमी जुद्ध (७०)

(ख) विवाह संबंधी युद्ध

† १ नाहरराव खंड (७)—पडिहारनी जभावती के लिए मदीवर के राजा नाहडगम पडिहार (वर पक्ष) के साथ ।

† २ भारागड जुद्ध खंड (१०)—पवारनी इच्छता के लिए गुजरात के राजा भाला भीम (प्रतिद्वंद्वी वर पक्ष) के साथ ।

† ३ गशिव्रता खंड (२५)—यादवी ससिप्रता के लिए वनवज के राजा के भनीज वीरचंद (प्रतिद्वंद्वी वर पक्ष) के साथ ।

* ४ [पदमावती खंड (२०)—यादवी पदमावता के लिए कुमाय के राजा कुमानमणि (प्रतिद्वंद्वी वर पक्ष) के साथ ।]

* ५ इद्रावती विवाह खंड (३३)—पवारनी इद्रावती के लिए इन्द्र के राजा भीम (वधु पक्ष) के साथ ।

† ६ [हमावता विवाह खंड (३६)—यादवी हमावती के लिए वंश के राजा पचायण (प्रतिद्वंद्वी वर-पक्ष) के साथ ।]

* ७ कागुरा विज खंड (३५)—भाटनी गता के लिए वंश के राजा भान (वधु-पक्ष) के साथ ।

† ८ बालुकाराव वध खंड (४८) }

* ९ सजागिता नम खंड (५०) }

§ १० खंड (६८)

- * २ वह पट्टी खट (१)—पाटण के सालविया के साथ वह का युद्ध ।
- † ३ मवाती मूगल युद्ध खड (६)—मवात के राजा मुदगलराय के साथ ।
- † ४ मूगल युद्ध खड (१५)—मेरात के राजा मुगलराय के साथ ।
- * ५ देवगिरि युद्ध खड (२६)—कनवज के राजा जयचन्द के साथ ।
- * [६ अनगपाल युद्ध खड (२८)—मालवा के राजा महिपाल और सोमेश्वर का युद्ध । अनगपाल और पृथ्वीराज का युद्ध । शाहबुद्दीन और पृथ्वीराज का युद्ध ।]
- * ७ करहंडा युद्ध खड (५२)—गुजरात के राजा भाला भीम के साथ पृथ्वीराज और समरमी का युद्ध ।
- † ८ सोमेश्वर बध खड (३६)—गुजरात के राजा भोला भीम और सोमेश्वर का युद्ध ।
- * ९ पञ्जून द्योगा खड (६०)—भोला भीम और पञ्जून का युद्ध ।
- † १० भीम बध खड (४४)—भोला भीम और पृथ्वीराज का युद्ध ।
- † ११ सामत-पग युद्ध खड (५५)—जयचन्द और पृथ्वीराज के सामता का युद्ध ।
- † १२ समरसी-पग युद्ध खड (५६)—जयचन्द और समरसिंह का युद्ध ।

(२) केवल विवाह संबंधी खड

- † १ च्छली विवाह खड (१४)
- * २ पुडीरना दाहिमी खड (१६)
- * ३ पृथ्वीराज विवाह खड (६६)
- † ४ पृथा विवाह खड (२१)

(३) आखेट संबंधी खड

- * १ आखेटक वीर वरदान खड (६)
- † २ भूमि स्वप्न खड (१७)
- * ३ आखेटक चम थाप खड (६५)

इनके अतिरिक्त और भी जतर खटा में आखेट का उल्लेख आता है ।

-
- * केवल बृहद रूपांतर म ।
 - † केवल बृहद और मध्यम रूपांतर म ।
 - ‡ बृहद मध्यम और लघु तीना रूपान्तर म ।

(४) अथ खड

- § १ जादिपव खड (१)
 † २ दगावतार खड (२)
 § ३ तिल्ली किल्ली खड (३)
 * ४ चित्ररेखा खड (११)
 § ५ अनगपाल दिलीदान (१८)
 * ६ हाली खड (२२)
 * ७ दीपावली खड (२३)
 † ८ करणाती पातर खड (३०)
 † ९ वर्णमया खड (३८)
 * १० चण्ड द्वारकागमन खड (४२)
 † ११ मजागिता पूवजम खड (४५)
 † १२ सजोगिता विनयमगल (४६)
 * १३ मुक्त चरित्र खड (४७)
 § १४ पग यनविष्वस खड (४९)
 § १५ कमास-वध खड (५७)
 * १६ दिलीवणन खड (५९)
 * १७ जगम मापी खड (६०)
 § १८ पटरितु वणन खड (६१)
 † १९ गुर्विल्लाम खड (६३)
 * २० गमरमी तिल्ली महाय खड (६७)
 § २१ वानरध खड (६९)^१

(ड) रूपांतरों का अंतर

इन चारों रूपान्तरों में पाया जाना वाला अंतर दो प्रकार का है—

- (१) क्या प्रमगा की मन्था में मन्थ रखने वाला और
 (२) क्या प्रमगा के सिन्धु में मन्थ रखने वाला ।

* वेदल वृद्ध रूपान्तर में ।

† ववन वृद्ध और मध्यम रूपान्तरों में ।

‡ वृद्ध मध्यम और तपु तीना रूपान्तरों में ।

§ चारों रूपान्तरों में ।

^१ इन खडों के विवरण के लिए अध्याय ७ में 'वृद्ध रूपान्तर की क्या का विवरण (ग) अध्याय प्राग प्रवर्ण देखिये ।

बड़े रूपांतरों में छोटों रूपांतरों की अपेक्षा क्या प्रसंगा की संख्या भी अधिक है और उनका विस्तार भी। यहाँ पर यह बात ध्यान में रखनी है कि छोटे रूपांतरों के सभी क्या प्रसंग बड़े रूपांतरों में विद्यमान हैं और इसी प्रकार छोटे रूपांतरों के प्रायः सभी पक्ष भी बड़े रूपांतरों में पाये जाते हैं। छोटे रूपांतरों के ऐसे पक्षों की संख्या जो बड़े रूपांतरों में नहीं पाये जाते बहुत ही थोड़ा और नगण्य है। इस प्रकार कम हाथों के पैर में सबके पैर आ जाते हैं वैसे ही बृहद् रूपांतरों में अल्प सभी रूपांतर अंतर्भूत हो जाते हैं। बड़े रूपांतरों के कौन-कौन से पक्ष छोटे रूपांतरों में नहीं मिलते इसका ज्ञान पहले ही हुई रामो के विविध रूपांतरों की तालिका से हो सकेगा।

विविध रूपांतरों में समानरूप से पाये जाने वाले प्रसंगा में भाषा का अंतर नहीं के बराबर है। पर जो प्रसंग बड़े अथवा मध्यम और बृहद् रूपांतरों में बात में जोड़ गये हैं उनकी भाषा में और पुराने प्रसंगों की भाषा में अंतर दृष्टिगोचर होता है—नये अर्थों की भाषा अपेक्षाकृत पीछे की लिखायी पड़ती है। इस प्रकार एक ही रूपांतर के विविध प्रसंगों में भाषा भेद लक्षित होता है।

इसी प्रकार बड़े रूपांतरों में एक ही प्रसंग के विविध अर्थों में भी भाषा का भिन्नता लिखायी पड़ती है। जो पक्ष प्रसंग के विस्तार के लिए बात में बनाये गये हैं उनकी भाषा पुराने पक्षों की भाषा से अलग पड़ती है।

विस्तार में मात्र लिखाय में बृहद् रूपांतर मध्यम रूपांतर का तिगुना मध्यम रूपांतर लघु रूपांतर का तिगुना और लघु रूपांतर त्र्युत्तम रूपांतर का तिगुना दृश्यता है। उनकी क्रम संख्या अनुमान में ३०००० १०००० ५०० और १३०० है।

बृहद् रूपांतरों की प्रतिष्ठा प्रधानतया उज्जयपुर राज्य में मध्यम रूपांतरों की जन भंडारा में और लघु रूपांतरों की बीकानेर और जयपुर राज्यों में प्राप्त हुई हैं। त्र्युत्तम रूपांतरों की भी प्रतिष्ठा मिली है जिनमें से पहली का मन्वथ बीकानेर राज्य में है। वह उत्तर गुजरात में उपलब्ध हुई है जहाँ बीकानेर के राजा राज्यपाल थे।

प्राचीनता की दृष्टि में त्र्युत्तम रूपांतर समय प्राचीन जान पड़ता है और उसके बाद क्रम में लघु मध्यम और बृहद् रूपांतरों का नवर आता है।

इतिहास विरुद्ध बात चारा ही रूपांतरों में मिलती है। छोटे रूपांतरों में उनकी संख्या स्वभावतः ही कम है वह रूपांतरों में कम क्रम में पड़ती जाती है।

अपने वर्तमान रूप में कोई भी रूपांतर बात की धृति नहीं हो सकता।

(१) मध्यम रूपांतर और वृहद् रूपांतर

वृहद् रूपांतर के ७० खंडों में से ३३ खंड मध्यम रूपांतर में नहीं हैं। शेष ३७ खंड किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं। इन ३७ खंडों में से २६ खंड नौनो रूपांतरों में समान रूप से पाये जाते हैं, केवल उनका विस्तार कम है। तीन खंड १४ खंडों में विभक्त हो गये हैं। ५ खंड दूसरे खंडों में अंतर्भुक्त हो गये अर्थात् मिल गये हैं। इस प्रकार मध्यम रूपांतर में खंडों की कुल संख्या (७०—३३—५—३+१४)=४३ रह जाती है—

वृहद् रूपांतर में खंड संख्या = ७०

उसमें ३३ खंड नहीं हैं = ७०—३३ = ३७

३ खंडों के स्थान पर १४ खंड = ३७—३+१४ = ४८

५ खंड अन्य खंडों में अंतर्भुक्त = ४८—५ = ४३

मध्यम रूपांतर में पाये जाने वाले वृहद् रूपांतर के खंडों के नाम आदि के लिए विविध रूपांतरों के खंडों की तालिका प्रकरण (पृष्ठ ६१) देखिये। अग्राय खंडों में अंतर्भुक्त होने वाले ५ खंड ये हैं—

१ माधो भानु पालिसाह ग्रहा खंड (१६)—अनमपाल तिलीदान खंड (६) में।

२ चंद्र आशुक् रमण (धन वधा) खंड (२८)—भूमि स्वप्न खंड (५) में।

३ पद्म यत्न विध्वंस खंड (८८) }
४ समागिता नम खंड (५०) } —वाजुसाराय वर खंड (२५) में।

५ मुक्त विलास खंड (६३)—कनक खंड (३४) में।

निम्नलिखित ३ खंड १८ खंडों में विभक्त हैं—

१ कनक खंड (६२)—८ खंडों में।

२ घोर पुनीर खंड (६६)—२ खंडों में।

३ बड़ी जहाई खंड (६८)—४ खंडों में।

(२) लघु रूपांतर और वृहद् रूपांतर

वृहद् रूपांतर के ७० खंडों में से १६ खंड लघु रूपांतर में नहीं हैं। शेष ५४ खंडों में से ६ खंडों में समान रूप से पाये जाते हैं, केवल उनका विस्तार कम है और ७ खंड दूसरे खंडों में अंतर्भुक्त हो गये हैं। इस प्रकार लघु रूपांतर में खंडों की कुल संख्या (७०—५४—७—३+१३)=१६ रहती है—

वृहद् रूपांतर की खंड संख्या = ७०

उसमें ५४ खंड नहीं हैं = ७०—५४ = १६

३ खंड १३ खंडा म विभक्त = १६ - ३ + १३ = २६

७ खंड अथ खंडा म अतभुक्त = २६ - ७ = १९ ।

वृहत् रूपांतर के य ३ खंड लघु रूपांतर म १३ खंडा म विभक्त हैं—

१ आदि पव खण्ड (१)—२ खंडा म ।

२ वनवज कथा खंड (६२)—६ खंडा म ।

३ बढी नडाई खंड (६८)—५ खंडो मे ।

वृहत् रूपांतरके य ७ खंड लघु रूपांतर म दूसरे खंडा म अतभुक्त होग्य हैं—

१ दगावतार (२)—प्रथम खंड म ।

२ दिल्ली किन्नी कथा (३)

३ अनगपाल दिन्नीगान कथा (१८)

४ धनकथा (२४)

५ खट रितु खंड (६१)

६ धार पुनीर (६४)

७ सजागिता नम (५०)—पग मय विध्वंस खंड (६) मे ।

(३) लघु रूपांतर और मध्यम रूपांतर

मध्यम रूपांतर मे कुल ४३ खंड हैं जिनमे मे १९ खंड लघु रूपांतर मे नही हैं । शेष २४ खण्डा म १६ खंड समान हैं २ खण्ड ४ खंडा मे विभक्त हा ग्य है और ७ खंड अथाय खंडा म अतभुक्त हो ग्य है । इस प्रकार लघु रूपांतर म खंडा की मख्या (४२ - १९ - ७ - २ + ८) १९ होता है—

मध्यम रूपांतर के कुल खण्ड = ८३

उसके १९ खंड नष्टा हैं = ८२ - १९ = २४

२ खंड ६ खण्डा म विभक्त २८ - २ + ८ = २६

७ खंड दूसरे खंडा म अतभुक्त = २६ - ७ = १९

मध्यम रूपांतर के य १९ खण्ड ४ खंडो म विभक्त हैं—

१ आदि प्रकाश (१)—२ खंडा म ।

२ खट म ६०—२ खण्डा म ।

मध्यम रूपांतर के य ७ खंड अथ खंडा म अतभुक्त हैं—

१ दगावतार (२)—प्रथम खंड म ।

२ भूमि स्वप्न धागम कथा (१)—दूसरे खंड म ।

३ लगगीराय जुद्ध (३०)—नवे खंड म ।

४ राजा पृथ्वीगज साग प्राप्त (३३)—नव खण्ड म ।

५ खट रितु वणन (८)—तर्हवें खंड म ।

६ धीर पुडार जुद्ध विजय (३६)—तेरहवें खण्ड म ।

७ धीर पडार वध (३७)—तेरहवें खंड म ।